* ओड़िशा संस्करण

www.epaper.azadsipahi.in

30 जून, 2023
आषाढ़, शुक्ल पक्ष, द्वादशी
संवत 2080
पृष्ठ : 12, मूल्य : ₹3.00

रांची
शुक्रवार, वर्ष 08, अंक 250

कलम कलम बढ़ाये जा

आजाद सिपाही

राजस्थान के सीएम अशोक गहलोत के पैर में चोट लगी, अस्पताल लाया गया

गृह मंत्री ने लखीसराय की सभा में कांग्रेस पर कसा तंज

20 साल से हो रही राहुल बाबा की लांचिंग : शाह

- लोगों से पूछा, राहुल चाहिए या नरेंद्र मोदी
- बिहार के सीएम नीतीश कुमार पर साधा निशाना

आजाद सिपाही संवाददाता

पटना/लखीसराय। गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि 20 साल से राहुल बाबा की लॉचिंग की जा रही है। इस बार भी कांग्रेस ने पटना से राहुल गांधी को लांच किया। बिहार की जनता भ्रष्टाचारियों के साथ नहीं जाती है। 2024 में जनता को तय करना है कि 20 बार फेल राहुल बाबा चाहिए या नरेंद्र मोदी चाहिए। मोदीजी 2024 में भी देश का नेतृत्व करना चाहते हैं। शाह गुरुवार को बिहार के लखीसराय में एक सभा को संबोधित कर रहे थे। शाह ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर भी निशाना साधा। उन्होंने कहा कि 20 से ज्यादा पार्टियां इकट्ठा हुई। ये 20 पार्टियां कौन हैं? इन्होंने 20 लाख करोड़ का घपला, घोटाला-भ्रष्टाचार किया है। नीतीश बाबू आपकी राजनीति पैदाइश ही भ्रष्टाचार का विरोध करके हुई। इंदिरा के आपातकाल के विरोध से ही शुरू हुई। किस मुंह से आप इनके साथ मिल कर मुंगेर और बिहार कि जनता के बीच आइयेगा।

साधा। अपने 27 मिनट के भाषण में आठ बार नीतीश कुमार का नाम लिया। उन्होंने कहा कि 'पलटूराम' नीतीश बाबू कहते हैं कि नौ साल में क्या किया? मैं कहता हूं कि नीतीश बाबू, जिनके कारण आप मुख्यमंत्री बने, जिनके साथ इतना साल बैठे, कुछ तो लिहाज करो। नीतीश बाबू, आप सुनना चाहते हो, तो पूरा हिसाब देने आया हूं।

नीतीश सीएम बने रहना चाहते हैं : गृह मंत्री ने कहा कि नीतीश बाबू को पूछना चाहता हूं आपने क्या किया? जो नेता हर बार बदले, उस पर विश्वास कर सकते हैं क्या? ऐसे आदमी के हाथ में बिहार सौंपना चाहिए क्या? इसलिए कांग्रेस की चौखट पर बैठे हैं। वह बस मूर्ख बना रहे हैं। वह सीएम बने रहना चाहते हैं। अमित शाह ने पटना में आयोजित विपक्षी एकता की बैठक में शामिल एक-एक पार्टियों का नाम लेकर निशाना साधा।

पूरी दुनिया मोदी-मोदी कह रही है : अमित शाह ने कहा कि मोदी जी विश्व में जहां- जहां जाते हैं, मोदी-मोदी-मोदी के नारे लगते हैं। अभी-अभी अमेरिका गये थे कोई इनका अपॉइंटमेंट, कोई हस्ताक्षर, तो कोई पैर छूकर आशीर्वाद मांग रहा है। यह मोदी जी का सम्मान नहीं है, ये मुंगेर वालों आपका, बिहार और 130 करोड़ भारतीय जनता का सम्मान है।

आप के बाद यूसीसी को उद्धव का सशर्त समर्थन

नयी दिल्ली (आजाद सिपाही)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के देशभर में यूनिफॉर्म सिविल कोड (यूसीसी) लागू करने के बयान का आम आदमी पार्टी (आप) के बाद उद्धव ठाकरे गुट की शिवसेना ने समर्थन किया है। हालांकि उद्धव ने सरकार के स्पष्टीकरण की शर्त रखी है। शरद पवार के नेतृत्व वाली राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) ने न तो यूसीसी का समर्थन किया है और न ही विरोध। वह अभी निष्पक्ष है। वहीं, नेशनल कांफ्रेंस लीडर फारूक अब्दुल्ला ने कहा है कि सरकार को यूसीसी लागू करने के नतीजों पर बार-बार विचार कर लेना चाहिए। गौरतलब है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 27 जून को भोपाल में भाजपा के 10 लाख बूथ कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए देशभर में यूनिफॉर्म सिविल कोड जल्द लागू करने की वकालत की थी।

हूल दिवस आज: सीएम भोगनाडीह में सिदो-कान्हू को देंगे श्रद्धांजलि

- सीएम 12.10 बजे शहीद स्थल पहुंचेंगे, फिर कई कार्यक्रमों में होंगे शामिल

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची/बड़हरवा। संताल हूल दिवस शुक्रवार को है। इस मौके पर संताल के वीर शहीद सिदो-कान्हू को सभी श्रद्धांजलि देते हैं। मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सिदो-कान्हू की 167वीं वर्षगांठ पर उनकी जन्मस्थली भोगनाडीह में श्रद्धांजलि देंगे। वह इसके लिए गुरुवार शाम साढ़े सात बजे रांची से वनांचल एक्सप्रेस से रवाना हुए। हेमंत वहां कई कार्यक्रमों में भी शामिल होंगे।

भोगनाडीह का है विशेष स्थान : झारखंड के आदिवासियों द्वारा अंग्रेजों के विरुद्ध किया गया विद्रोह 'हूल क्रांति' के रूप में जाना जाता है। अंग्रेजों से विरुद्ध लड़ते हुए 20 हजार आदिवासी क्रांतिवीरों ने अपनी जानें अर्पित की हैं। हूल क्रांति दिवस प्रत्येक वर्ष 30 जून को मनाया जाता है। इस क्रांति की मशाल 1857 के स्वाधीनता संग्राम से पहले प्रज्वलित की गयी थी। यह क्रांति सिदो तथा कान्हू नामक दो भाइयों के नेतृत्व में 30 जून, 1855 ई को वर्तमान साहिबगंज ज़िले के भोगनाडीह से प्रारंभ हुई थी। इसलिए इस स्थान का विशेष महत्व है। इसलिए मुख्यमंत्री ट्रेन यात्रा कर भोगनाडीह गये हैं।

हेमंत 12:55 बजे पहुंचेंगे भोगनाडीह : ट्रेन की यात्रा में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन 30 जून की सुबह 5:50 बजे बड़हरवा रेलवे स्टेशन पर उतरेंगे। यहां से हेमंत पतना प्रखंड के धरमपुर स्थित आवास पहुंचेंगे, जहां वह विश्राम करेंगे। लगभग 12:10 बजे शहीद स्थल पंचकठिया में पहुंचेंगे। यहीं से सिदो-कान्हू को श्रद्धांजलि अर्पित करने के बाद 12:55 बजे भोगनाडीह पहुंचेंगे। भोगनाडीह में शहीद की प्रतिमा पर माल्यार्पण करेंगे। शहीद के वंशजों से मुलाकात करने के बाद विभिन्न सरकारी कार्यक्रमों में हिस्सा लेंगे। शाम करीब चार बजे मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन पतना धरमपुर आवास आयेंगे। वह रात 10 बजे बड़हरवा रेलवे स्टेशन से भागलपुर-रांची वनांचल एक्सप्रेस से ही रांची के लिए रवाना हो जायेंगे।

खादगढ़ा बस स्टैंड में खड़ी नौ बसें जलीं

- आग लगने के कारण की जांच की जा रही
- किसी के हताहत होने की सूचना नहीं

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। रांची के लोअर बाजार थाना क्षेत्र के कांटा टोली स्थित खादगढ़ा बस स्टैंड में खड़ी नौ बसों में गुरुवार को आग लग गयी। इनमें से छह बसें जल कर खाक हो गयीं, जबकि तीन बसों को पूरी तरह से जलने से बचा लिया गया। इस घटना के कारण पूरे इलाके में अफरा-तफरी का माहौल रहा। घटना की जानकारी मिलने का बाद फायर ब्रिग्रेड की टीम ने आग पर काबू पाया। आग कैसे लगी, इसका खुलासा अब तक नहीं हो पाया है। इस घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है।

प्राप्त जानकारी के मुताबिक दोपहर में एक बजे के करीब खदगड़ा बस स्टैंड में खड़ी पांच बसों में अचानक आग लग गयी। आग की लपटें इतनी भयानक थीं कि किसी भी व्यक्ति को बचाव के लिए पास पहुंचा संभव नहीं था। इस बीच किसी ने पुलिस और फायर ब्रिग्रेड को फोन किया। वे तत्काल घटना स्थल पहुंचे। आग बुझाते-बुझाते चार और बसें आग की चपेट में आ गयीं। हालांकि तीन बसों का कुछ हिस्सा जला। जिन बसों में आग लगी, उनमें निशांत ट्रैवेल्स, मां भवानी ट्रैवेल्स, राधेश्याम और एलडी मोटर्स की बसें शामिल हैं। पुलिस मामले की छानबीन कर रही है।

विपक्षी दलों की बैठक 13-14 जुलाई को बेंगलुरू में होगी

आजाद सिपाही संवाददाता

नयी दिल्ली। एकता की कवायद के बीच विपक्षी दलों की अहम बैठक 13 और 14 जुलाई को होगी। एनसीपी नेता शरद पवार ने इसके बारे में जानकारी दी है। उन्होंने बताया कि विपक्ष की अगली बैठक बेंगलुरू में होगी। इससे पहले कहा जा रहा था कि बैठक 10 या 12 जुलाई को होगी। इतना ही नहीं, बैठक के लिए हिमाचल प्रदेश की राजधानी शिमला को चुना गया था। इस बीच में बैठक के शिमला की जगह जयपुर में आयोजित किये जाने की खबर भी सामने आयी थी। पटना बैठक में शामिल विपक्षी दलों के एक महत्त्वपूर्ण सहयोगी ने संकेत दिया था कि सत्तारूढ़ एनडीए (नेशनल डेमोक्रेटिक एलायंस) के सामने विपक्ष अपने गठबंधन को पीडीए का नाम दे सकता है। इस पीडीए का विस्तार पेट्रियॉटिक डेमोक्रेटिक एलायंस हो सकता है। इसमें पेट्रियॉटिक शब्द जोड़कर विपक्ष यह बताने की कोशिश कर सकता है कि वह भाजपा से कहीं ज्यादा राष्ट्रवादी है। बेंगलुरू में हो रही बैठक पटना में हुई पिछली बैठक में आये दलों के नेताओं की सहमति से हो रही है। इसमें एनसीपी, राजद, जदयू, झामुमो, शिवसेना (यूटीबी), डीएमके, वामदल, समाजवादी पार्टी, एनसी, पीडीपी, तृणमूल समेत अन्य की सहमति है।

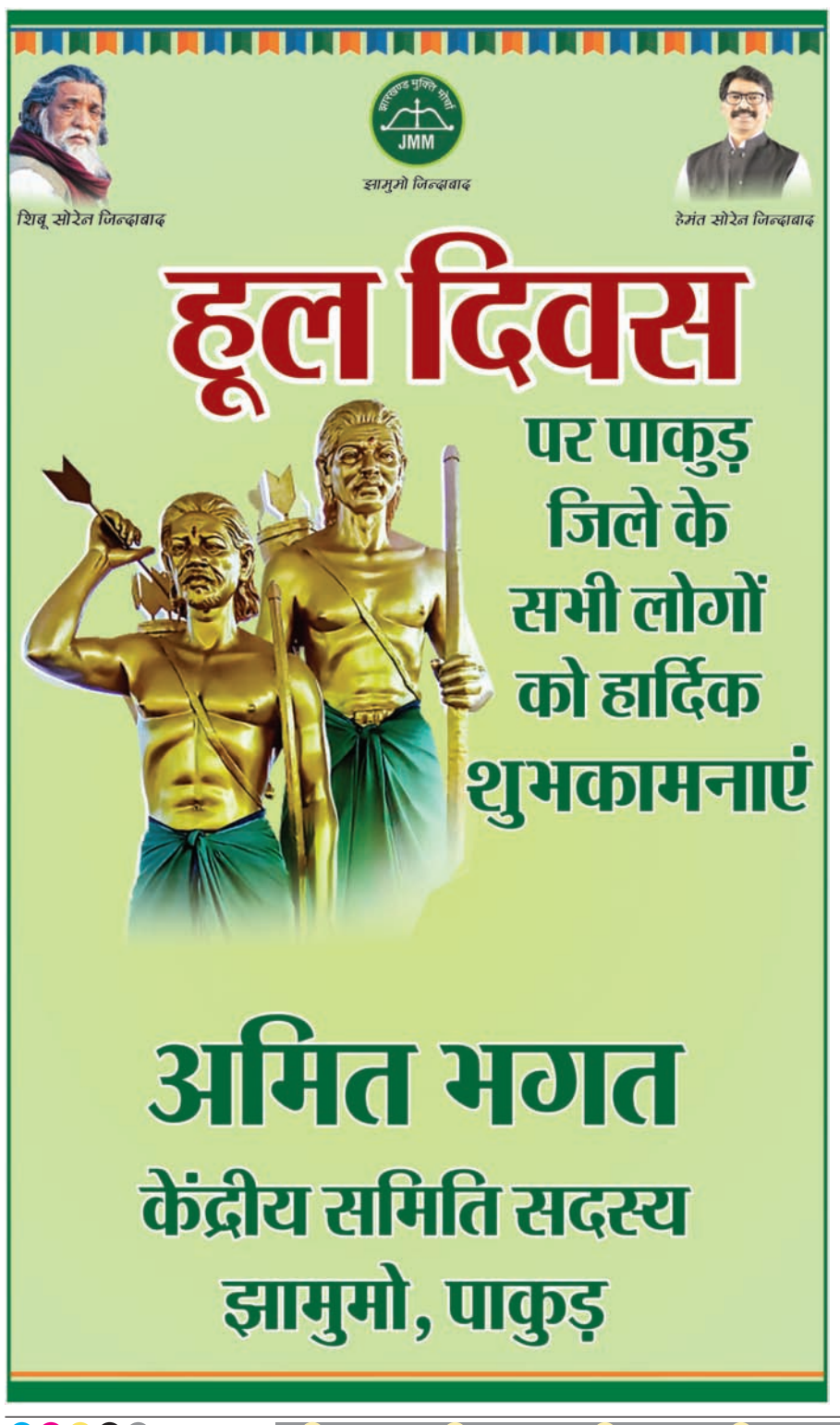

सीएम ने दिया निर्देश, कॉलेजों में जारी रहेगी इंटर की पढ़ाई

- स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने लिया निर्णय

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। राज्य में 10वीं पास बच्चे कॉलेजों में भी इंटर की पढ़ाई कर सकेंगे। मुख्यमंत्री हेंमत सोरेन के निर्देश पर स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने यह निर्णय लिया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने राज्य के अंगीभूत एवं डिग्री संबद्ध महाविद्यालयों में सत्र 2023-25 में इंटरमीडिएट की पढ़ाई जारी रखने का निर्णय लिया है।

स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग के सचिव की अध्यक्षता में झारखंड अधिविध परिषद के अध्यक्ष और सचिव की हुई बैठक में निर्देश दिया गया। यदि किसी जिला या क्षेत्र में माध्यमिक परीक्षा-2023 में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को इंटरमीडिएट कक्षा में नामांकन लेने में कठिनाई हो तो पूर्व के वर्षों की भांति अंगीभूत एवं डिग्री संबद्ध महाविद्यालय में इंटरमीडिएट कक्षा में नामांकन ले सकते हैं। इस वर्ष जैक की मैट्रिक परीक्षा में चार लाख से ज्यादा परीक्षार्थी सफल रहे हैं। इन विद्यार्थियों को इंटरमीडिएट में नामांकन लेने में समस्या आ रही है। इसी वजह से स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने छात्र हित को ध्यान में रखते हुए अंगीभूत एवं डिग्री संबद्ध महाविद्यालयों में इंटरमीडिएट में विद्यार्थियों का नामांकन और पढ़ाई जारी रखने का फैसला किया है।

गौरतलब है कि राज्य में अंगीभूत एवं संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों में इंटरमीडिएट शिक्षा को पृथक्क करने की प्रक्रियाधीन है। इसी वजह से इस वर्ष माध्यमिक परीक्षा में उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं उनके अभिभावकों और कतिपय संबद्ध डिग्री महाविद्यालय के बीच इंटरमीडिएट में नामांकन को लेकर भ्रम की स्थिति है। ऐसे में विद्यार्थियों को नामांकन के सिलसिले में परेशानी उठानी पड़ रही है। इसे देखते हुए सरकार ने अंगीभूत महाविद्यालयों एवं संबद्ध डिग्री महाविद्यालयों में इंटरमीडिएट में नामांकन सुनिश्चित करने का निर्देश दिया था।

आजाद सिपाही | झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
188100 Subscribers
VIEWERSHIP 3 Crore 80 lakh+
Watch Time (HR) 11 Lakh+
YouTube Channel
Subscribe NOW
No 1 Channel

सर्राफा
सोना (बिक्री) 55,200 रु./10 ग्राम
चांदी 71,000 रु./प्रति किलो

आजाद सिपाही
रांची, शुक्रवार, 30 जून, 2023
www.azadsipahi.in

मिशन 2024 : एकजुट होने पर चार सौ सीटों पर हो सकता है सीधा मुकाबला

■ उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, पंजाब और दिल्ली में उम्मीद लगभग खत्म

■ कांग्रेस 227 क्षेत्रों पर ध्यान लगायेगी, तो बाकी दल 173 पर करेंगे फोकस

■ दो प्रतिशत वोट शेयर के अंतर को पाटने के लिए यही रास्ता अपनायेगा विपक्ष

लोकसभा चुनाव में अब एक साल से भी कम का समय बच गया है। इसके साथ ही भाजपा और कांग्रेस के साथ बाकी विपक्षी दल भी एकदम चुनावी मोड में आ गये हैं। जिन मुद्दों को लेकर जनता के बीच जाना है, उन्हें फिलहाल टेस्टिंग मोड में रखा गया है। अभी राजनीतिक दलों के भीतर लोकसभा की 542 सीटों के परिणाम का गहन विश्लेषण किया जा रहा है। इस विश्लेषण और आंकड़ों के जाल के खेल में विपक्ष का दृष्टिकोण पटना बैठक के बाद साफ होने लगा है। विपक्षी दलों को उम्मीद है कि बेंगलुरु में अगले महीने होनेवाली बैठक में एक फॉर्मूले पर विचार किया जा सकता है और वह यह कि चार राज्यों, उत्तरप्रदेश (80 सीट), पश्चिम बंगाल (42 सीट), पंजाब (13 सीट) और दिल्ली (सात सीट) को छोड़ कर बाकी चार सौ सीटों पर संयुक्त उम्मीदवार खड़ा किया जाये, ताकि यहां भाजपा को सीधे मुकाबले के लिए मजबूर किया जा सके। इनमें से 227 सीटें ऐसी हैं, जहां कांग्रेस और भाजपा के बीच सीधा मुकाबला हो सकता है और बाकी 173 सीटों पर दूसरे दल अपनी किस्मत आजमायेंगे। इतना ही नहीं, संयुक्त विपक्ष पिछले लोकसभा चुनाव में वोट शेयर में महज दो प्रतिशत के उस अंतर को भी पाटने पर फोकस करेगा, जिसके कारण भाजपा को लगातार दूसरी बार सत्ता मिली थी। बेंगलुरू में होनेवाली बैठक इन चुनावी समीकरणों को लेकर इसीलिए इतनी महत्वपूर्ण बतायी जा रही है। आखिर क्या हो सकती है विपक्ष की रणनीति और उसका परिणाम, बता रहे हैं आजाद सिपाही के विशेष संवाददाता राकेश सिंह।

आजाद सिपाही विशेष

राकेश सिंह

विपक्षी दलों की पटना घोषणा के बाद बेंगलुरु समझौते की तैयारी है। कहा जा रहा है कि विपक्ष को जीत का फॉर्मूला मिल गया है। भाजपा के खिलाफ करीब चार सौ सीटों पर विपक्ष का एक ही उम्मीदवार होगा। इसकी घोषणा अगले महीने बेंगलुरु बैठक में हो सकती है। विपक्षी खेमे की रणनीति के अनुसार कुल मिला कर राज्यों की तीन श्रेणियां बनायी जा रही हैं। इन सबके बावजूद विपक्ष में राहुल गांधी को छोड़ कर कोई भी अन्य नेता आत्मविश्वास के साथ यह कहने की हालत में नहीं है कि 2024 में विपक्ष सत्ता में आ जायेगा। इसके पीछे तीन सवाल हैं। एक, भाजपा के खिलाफ चार सौ सीटों पर एक ही उम्मीदवार रहा, तो क्या मोदी की हार संभव है? दो, गठबंधन कागजों पर है या जमीन पर भी उतरा है? तीन, सबसे बड़ी पार्टी अगर भाजपा रही, तो विपक्ष कैसे सरकार बना पायेगा?

पहले बात करते हैं, वन टू वन की। पिछले लोकसभा चुनावों के आंकड़ों के संदर्भ में बात की जाये, तो विपक्ष की रणनीति बहुत प्रभावी तो लगती है, लेकिन निर्णायक नहीं। भाजपा ने 46 सीटों पर चार लाख से ज्यादा वोटों के अंतर से विजय हासिल की थी। उधर विपक्ष ने 23 सीटों पर चार लाख से ज्यादा वोट हासिल किये थे। इनमें से कुछ पर विपक्षी दल भाजपा के खिलाफ जीते थे, तो कुछ में कांग्रेस के खिलाफ, तो कुछ में विपक्ष बनाम विपक्ष के बीच मुकाबला रहा था। जाहिर है कि कुल मिला कर ऐसी 69 सीटों का गणित बहुत कुछ बदलने वाला नहीं है। भाजपा ने 105 सीटों पर तीन लाख के ज्यादा अंतर से जीत हासिल की थी। इनमें से आधे में उसका मुकाबला कांग्रेस से हुआ था। ऐसी सीटों की कुल संख्या 131 रही थी। भाजपा को 2014 में 31 फीसदी और 2019 में 37 फीसदी वोट मिले थे और 2024 में 39 फीसदी वोट मिलने का अनुमान लगाया गया है, तो संयुक्त विपक्ष इन सीटों में सेंधमारी तो जरूर कर सकता है, लेकिन तीन लाख वोटों की दीवार गिरा नहीं सकता।

विपक्ष की नजर ऐसे में उन सीटों पर होनी चाहिए, जहां भाजपा ने दो लाख के अंतर से सीटें जीती थीं। 2019 में ऐसी सीटों की संख्या कुल मिला कर 236 थी और इसमें से भाजपा ने 164 सीटें जीती थी। यहां भी दिलचस्प आंकड़ा है कि इनमें से भाजपा ने 55 सीटें कांग्रेस के खिलाफ जीती थीं। तो कहानी आकर अटकती है, ऐसी सीटों पर, जो भाजपा ने पिछली बार एक लाख के कम के अंतर से जीती थीं। ऐसी सीटों की संख्या कुल 77 थी। अगर विपक्ष पूरा जोर लगा दे, तो यहां भाजपा को पटखनी दी जा सकती है। अगर विपक्ष इन 77 में से 60 सीटें निकाल लेता है, तो भाजपा 302 से घटकर 242 पर आ जाती है। ये आंकड़े यह भी बताते हैं कि उत्तरप्रदेश में विपक्ष का एक होना कितना जरूरी है। भाजपा ने पिछली बार यूपी में 20 सीटें एक लाख के कम के अंतर से जीती थीं। यानी अगर अखिलेश, कांग्रेस, जयंत चौधरी एक हो जाते हैं, तो यूपी में भाजपा की 20 सीटें कम हो जाने की गुंजाइश निकलती है। आंकड़ों के हिसाब से यह आंकड़ेबाजी रोचक लग रही है। लेकिन भाजपा दो बार से चुने जा रहे सांसदों का नया सिरे से सर्वे करवा रही है। एंटी इनकमबेंसी दूर करने की कोशिश कर रही है।

दूसरा सवाल गठबंधन का है। विपक्ष का कहना है कि महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बिहार और झारखंड में मजबूत गठबंधन बन चुका है। इन राज्यों की कुल 142 सीटें (पुडुचेरी मिला कर) हैं, जहां विपक्ष का स्ट्राइक रेट 80 फीसदी पार होना चाहिए, अगर उसे सत्ता में आते हुए दिखना है। उधर कहा जा रहा है कि हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और कर्नाटक में कांग्रेस को गठबंधन की जरूरत ही नहीं है, क्योंकि वहां उसे किसी अन्य विपक्षी दल का डर नहीं है। कुछ हद तक उसे गुजरात में आप का डर जरूर है। इन राज्यों में कुल 130 सीटें आती हैं, जहां भाजपा पिछली बार 122 सीटें जीती थी। यहां कांग्रेस को अकेले ही लड़ना है।

तीसरी श्रेणी उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, दिल्ली और पंजाब जैसे राज्यों की है, जहां कुल सीटें 142 हैं। सारा पेंच यहीं आकर फंसा हुआ है। अखिलेश यादव, ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल के पाले में गेंद है। दरअसल सारी कुर्बानी यहीं दिखायी जानी है और एकता नहीं हुई, तो सारा रायता भी यहीं फैलना है।

संयुक्त विपक्ष के मुकाबले का गणित

23 जून को पटना में हुई बैठक में 15 से ज्यादा दलों और 30 से ज्यादा राष्ट्रीय नेताओं ने हिस्सा लिया था। केंद्र सरकार के दिल्ली अध्यादेश को लेकर आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच विवाद और मायावती की बहुजन समाज पार्टी, के चंद्रशेखर राव की भारत राष्ट्र समिति और वाइएस जगनमोहन रेड्डी की वाइएसआर कांग्रेस पार्टी जैसी पार्टियों की गैरमौजूदगी के बावजूद विपक्षी दल बेहद उत्साहित हैं। इन विपक्षी दलों को इस बात का इलहाम है कि सत्ताधारी दल से मुकाबले के लिए चुनाव पूर्व गठबंधन का यह पहला प्रयास नहीं है। इसलिए इस प्रयास से पहले चुनावी गणित के आधार पर समीकरण भी तैयार किया जाना जरूरी है। तो भाजपा से मुकाबले के लिए संयुक्त विपक्ष का गणित क्या है।

पटना बैठक में 15 राजनीतिक दलों के नेता शामिल हुए। इस समय भाजपा संसद के निचले सदन लोकसभा में, जिसमें कुल 543 सांसद हैं, प्रभावशाली स्थिति में है। सदन में बहुमत का आंकड़ा 272 है। 2019 के आम चुनाव के नतीजों के अनुसार भाजपा के पास अपने 303 सांसद हैं और उसके नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन के 50 सांसद हैं। कांग्रेस के 52 सांसद हैं, जबकि यूपीए के कुल 91 सांसद हैं। पटना बैठक में मौजूद 15 दलों के कुल 136 सांसद लोकसभा में हैं। साल 2019 में नीतीश कुमार का जदयू और उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली शिवसेना दोनों एनडीए का हिस्सा थे। बिहार के मुख्यमंत्री अब विपक्षी गठबंधन की अगुवाई कर रहे हैं। 2022 में शिवसेना में एक बड़े बंटवारे के साथ ठाकरे के नेतृत्व वाला गुट विपक्षी मोर्चे का हिस्सा है, जबकि एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाले दूसरे गुट ने भाजपा से हाथ मिला लिया है। संसद के उच्च सदन राज्यसभा में कुल 245 सीटें हैं। इनमें अकेले भाजपा के पास 93 सीटें हैं, जबकि कांग्रेस के पास 31 सीटें हैं। भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए के पास कुल 110 सीटें हैं। विपक्षी दलों (जो पटना बैठक में शामिल हुए) के राज्यसभा में भेजे गये सांसदों की कुल गिनती भी 93 है।

वोट में हिस्सेदारी की तुलना

2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा का वोट शेयर 37.36 फीसदी था, जबकि सत्ताधारी एनडीए गठबंधन का वोट 45 फीसदी रहा। हालांकि समय के साथ कई दल गठबंधन से निकल गये, जिसके बाद, अब एनडीए का वोट शेयर 39.92 प्रतिशत हो गया है। 2019 के लोकसभा चुनाव के नतीजों के मुताबिक पटना में मौजूद 15 विपक्षी दलों का वोट शेयर 37.99 फीसदी है। दिलचस्प बात यह है कि विपक्ष भले ही 2014 की तुलना में 2019 में भाजपा के खिलाफ ज्यादा मजबूती से एकजुट हुआ था, भगवा पार्टी न केवल अपनी सीटें (282 से 303) बढ़ाने में कामयाब रही, बल्कि इसके वोट शेयर (2014 में 31 फीसदी के मुकाबले 2019 में 37.36 प्रतिशत) में भी उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई। विपक्ष इसी दो प्रतिशत के अंतर को पाटने और सीधे मुकाबले की चार सौ सीटों पर भाजपा को घेरने की रणनीति तैयार करने में जुटा हुआ है। बेंगलुरु में यदि इस बारे में कोई फैसला हुआ, तो फिर भाजपा की राह में चुनौती खड़ी हो सकती है।

साहिबगंज में उत्तरप्रदेश के मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह बोले

क्षेत्रीय पार्टी का पनपना देश के लिए घातक

आजाद सिपाही संवाददाता

साहिबगंज। झारखंड दौरे पर आये उत्तरप्रदेश के मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह गुरुवार को साहिबगंज में थे। पत्रकारों से बात करते हुए मंत्री ने कहा कि क्षेत्रीय पार्टी के आने से राज्य का विनाश होता है.। साथ ही क्षेत्रीय पार्टी राज्य में भ्रष्टाचार और वंशवाद को बढ़ावा देती है। कहा कि देश की 125 करोड़ जनता पीएम मोदी के साथ है। देश के अंदर देवतुल्य भाजपा कार्यकर्ता हैं। देवतुल्य कार्यकर्ता और जनता के दम पर ही केंद्र में 2024 में भी पूर्ण बहुमत का सरकार बनायेंगे।

मोदी सरकार के नौ वर्षों का कार्यकाल बेमिसाल

केंद्र सरकार के नौ वर्षों की जन कल्याणकारी योजनाओं के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार के नौ वर्षों का कार्यकाल सबसे बेमिसाल रहा है। नौ वर्षों में गरीबों और दलितों का कल्याण हुआ। राष्ट्र के प्रति अपनत्व की भावना जागृत हुई है। वहीं, विपक्ष पर हमला करते हुए कहा कि कांग्रेस के शासन में ट्रेन की सीट तक उजड़ जाती थी, लेकिन बीते नौ साल में देशवासी इसे राष्ट्र की संपत्ति मानते हैं। स्वच्छ भारत जन सामान्य का आंदोलन बन गया है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत गांव के गरीब, किसान, महिलाओं के लिए शौचालय बनी, गंदगी दूर भागा, गांव स्वच्छ हुआ। 48 करोड़ लोगों को बैंक से जोड़ा गया, जिससे सरकारी योजनाओं का लाभ अब सीधा बैंक एकाउंट में लाभुक को शत-प्रतिशत आ रहा है।

आदिवासी और दलित वर्ग को मिला सम्मान

यूपी के कैबिनेट मंत्री ने कहा कि केंद्र की मोदी सरकार ने आदिवासी और दलित वर्ग को सम्मान देते हुए सर्वोच्च सीट पर बिठाने का कार्य किया। भगवान बिरसा मुंडा जयंती को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाया जा रहा है। वहीं, विदेशों में भारत का सम्मान केंद्र की मोदी सरकार ने बढ़ाया, जिसके कारण विदेशों में भारत की जयकार हो रही है। जाति और धर्म से ऊपर उठ कर केंद्र की मोदी सरकार ने नौ वर्षों में कार्य किया। पाकिस्तान के खिलाफ एयर स्ट्राइक ओर सर्जिकल स्ट्राइक की, जिससे नौ साल में एक भी आतंकी हमला देश में नही हुआ है। आतंकी और आतंकवादी को पनाह देने वाला औरआतंकियों को पैदा करने वाला देश भारत से कांप रहा है। जम्मू, कश्मीर, श्रीनगर अब तेजी से विकास की राह पर चल रहा है।

केंद्र सरकार की उपलब्धियां गिनायीं

मौके पर राजमहल विधायक अनंत ओझा, भाजपा जिलाध्यक्ष रामदरश यादव, भाजपा प्रवक्ता सरोज सिंह, लोकसभा संयोजक बबलू भगत, पूर्व विधायक ताला मरांडी,रामानंद साह, अनंत सिन्हा, कुशमाकर तिवारी, अनंत सिन्हा, धर्मेंद्र कुमार, मनोज यादव, विनोद चौधरी,अनंत सिंहा, सुनील यादव सहित अन्य भाजपा कार्यकर्ता मौजूद थे।

अंग्रेजी शासन के विरुद्ध आजादी का पहला बिगुल : हूल क्रांति

मृत्युंजय शर्मा

झारखंड के राजनीतिक किस्से जितने चर्चित हैं, उतना ही गौरवशाली और समृद्ध झारखंड का इतिहास भी रहा है। संघर्षों की धरती झारखंड ने बिरसा का उलगुलान देखा, कई जनजातीय विद्रोह देखा और आजादी के बाद अलग राज्य का आंदोलन भी देखा है। झारखंड के इतिहास में अमिट छाप छोड़ने वाली ऐसी ही एक घटना थी 'हूल क्रांति'। राजमहल की पहाड़ियों से घिरा वर्तमान संथाल परगना का आदिवासी बहुल यह क्षेत्र ब्रिटिश हुकूमत के दौरान बंगाल प्रेसीडेंसी का हिस्सा हुआ करता था। आदिवासी पर्यावरण के उपासक होते हैं एवं उनका जीवन आधुनिक चकाचौंध से दूर जल, जंगल और जमीन के इर्द-गिर्द ही व्यतीत होता है। ब्रिटिश शासन की शोषण नीति के खिलाफ आदिवासियों की व्यापक गोलबंदी हुई। कर्ज अदा नहीं करने पर पूरे परिवार को बंधुआ मजदूर बना लेते, मालगुजारी नहीं देने पर उनकी जमीन नीलाम कर दी जाती थी। 30 जून, 1855 को झारखंड के आदिवासियों ने अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचार के खिलाफ पहली बार विद्रोह का बिगुल फूंका। इस दिन 400 गांवों के 50000 लोगों ने साहिबगंज जिला के भोगनाडीह गांव पहुंच कर अंग्रेजों से आमने-सामने की जंग का एलान कर दिया।

हूल क्रांति की शुरुआत भले ही 1855 में हुई हो, लेकिन इसकी पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी थी, जब 1765 में मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय ने ईस्ट इंडिया कंपनी को बिहार, बंगाल और उड़ीसा में दीवानी वसूलने का जिम्मा सौंप दिया। वर्तमान में संथाल परगना के नाम से जाना जाने वाला यह क्षेत्र पहाड़ की तलहटी में रहने वाले पहाड़िया समुदाय बहुल था। यहां के लोग तब जंगल झाड़ियों को काट कर खेती योग्य बनाते और उसे अपनी जमीन समझते थे। ये लोग अपनी जमीन की मालगुजारी किसी को नहीं देते, जबकि ईस्ट इंडिया कंपनी के जमींदार उनसे जबरन लगान वसूली करते थे। इसके परिणामस्वरूप आदिवासियों ने इस तुगलकी फरमान के विरोध में सशस्त्र आंदोलन करने का फैसला किया। इस क्रांति के नायक बने सिद्धो-कान्हू और चांद-भैरव, जिनके नेतृत्व में तब संथाल आदिवासियों ने मालगुजारी नहीं देने और अंग्रेज हमारी माटी छोड़ो का जोर-शोर से एलान किया। विरोध की इस आग से घबराकर ब्रिटिश सरकार ने हूल क्रांति को कुचलने का प्रयास किया। हजारों लोगों ने प्राण की आहुति दी, वहीं अंग्रेजों को बड़ी क्षति का सामना करना पड़ा।

यह पहला अवसर था जब अंग्रेजों को भारत में इतने जोरदार प्रतिरोध का सामना करना पड़ा हो, तब विद्रोहियों को सबक सिखाने के लिए अंग्रेजों ने क्रूरता की सारी हदें पार कर दीं। चांद और भैरव को अंग्रेजों ने मार डाला। इसके बाद सिद्धो और कान्हू को भोगनाडीह में ही पेड़ से लटकाकर 26 जुलाई 1855 को फांसी दे दी गयी। संथाल की माटी के इन्हीं शहीदों की याद में हर साल 30 जून को हूल दिवस मनाया जाता है।

एक अंग्रेज इतिहासकार हंटर ने लिखा है कि इस महान क्रांति में लगभग 20000 आदिवासियों को मौत के घाट उतार दिया गया। गया। आदिवासियों के इस अदम्य शौर्य, साहस और बलिदान ने अंग्रेजी हुकूमत को झकझोर कर रख दिया। लगभग छह महीने तक चला हूल क्रांति का भीषण संघर्ष जनवरी 1856 में थमा। कुछ समय बाद 1857 में देश में स्वाधीनता संग्राम की शुरुआत हो चुकी थी। जब हूल क्रांति समाप्त हुआ, तब इस इलाके को संथाल परगना का नाम दिया गया। जिसका मुख्यालय दुमका बनाया गया। हूल क्रांति के 44 साल बाद वर्ष 1900 मे मैक पेरहांस कमेटी ने आदिवासियों की जमीन की सुरक्षा के लिए एक बंदोबस्त अधिनियम बनाया। इसमें यह प्रावधान किया गया कि आदिवासी की जमीन, कोई दूसरा आदिवासी ही खरीद सकता है। खरीदने और बेचने वालों के घर एक ही इलाके में होना चाहिए। झारखंड में आदिवासी जमीन का हस्तांतरण आज भी इन शर्तों को पूरा करने के बाद करने का प्रावधान है। 1949 में पारित संथाल परगना काश्तकारी अधिनियम में 1900 के बंदोबस्ती नियम को जोड़ा गया है, जो आज भी पूरे झारखंड प्रदेश में प्रभावी है।

झारखंड की पावन धरती स्वतंत्रता संग्राम के कई ऐतिहासिक घटनाओं की साक्षी रही है। यहां के आदिवासियों ने जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए ब्रिटिश सरकार की दमनकारी नीतियों का जमकर विरोध किया। हूल दिवस झारखंड के माटी पुत्र सिद्धो, कानू, चांद भैरव की वीरता, त्याग और बलिदान को नमन करने का अवसर है। आज की युवा पीढ़ी विशेषकर आदिवासी समुदाय के लोगों को सिद्धो-कान्हू और चांद-भैरव के दिखाए हुए रास्तों का अनुसरण करते हुए अपनी संस्कृति का संरक्षण करें, यही इन वीर सपूतों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

(लेखक, झारखंड भाजपा के चुनाव प्रबंधन प्रमुख हैं)

आजाद सिपाही
188100 Subscribers
झारखंड में सबसे ज्यादा देखा जाने वाला चैनल
VIEWERSHIP 3 Crore 80 lakh+
Watch Time (HR) 11 Lakh+
YouTube Channel
Subscribe NOW
1 Channel

वेदर

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
रांची	34.4 ℃	23.2 ℃
सूर्यास्त (आज)	:	18.39 बजे
सूर्योदय (कल)	:	05.06 बजे

आजाद सिपाही
रांची, शुक्रवार, 30 जून, 2023
www.azadsipahi.in

भगवान जगन्नाथ प्रभु की घुरती रथ यात्रा निकाली गयी

समाजसेवियों ने खींची रस्सी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। गुरुवार को समाजसेवी भानू प्रताप सिंह, आलोक कुमार दुबे, काली प्रसाद सिंह, संजीत यादव, स्वामी विमलेश कुमार, संतोष कुमार, जगन्नाथ साहू, मेंहुल दुबे, रोहन कुमार भगवान जगन्नाथ प्रभु की घुरती रथ यात्रा महोत्सव में शामिल हुए। इस दौरान सभी ने विष्णु सहस्त्रनाम का एक हजार एक मंत्रोच्चार किया और भगवान की आरती की। इसके साथ ही सभी ने भगवान को भोग लगाया और भक्त जनों के बीच प्रसाद वितरित किया। आलोक कुमार दुबे और भानू प्रताप सिंह ने पूजा अर्चना के बाद जगन्नाथ स्वामी से राज्य में

खुशहाली,अमन, तरक्की और अच्छी बारिश की कामना की। पूजा-अर्चना के उपरांत फूलों के रथ पर विराजमान प्रभु जगन्नाथ, भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ मौसी घर से मंदिर के लिए रवाना हुए।

वहीं हजारों श्रद्धालुओं के साथ आलोक दुबे, भानू प्रताप सिंह, काली प्रसाद सिंह, भरत तिवारी, संजीत यादव ने रस्सी खींची और पुण्य अर्जित किया। मीडिया कर्मियों से बात करते हुए आलोक दुबे ने कहा कि घुरती रथ यात्रा का उत्सव धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। उन्होंने कहा कि भगवान के रथ को खींचने से सभी दुःख, दर्द और कष्ट समाप्त होते हैं और सौ यज्ञ करने के समान पुण्य की प्राप्ति की मान्यता है।

वहीं भानू प्रताप सिंह ने कहा कि वह 25 वर्षों से भगवान जगन्नाथ के रथ की रस्सी खींचते आ रहे हैं। इसमें अलग तरह की अनुभूति होती है, आत्मविश्वास पनपता है। श्रद्धा, भक्ति, ज्ञान, समर्पण और अहंकार मुक्त रथ यात्रा के पावन पुण्य से सभी के जीवन में सुख, समृद्धि,यश, कीर्ति और आरोग्य स्थापित होने की प्रभु से कामना करता हूं।

जरियागढ़ में महाप्रभु की पूजा-अर्चना की गयी

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जरियागढ़ में पारंपरिक तरीके से धूमधाम के साथ महाप्रभु जगन्नाथ की घुरती रथ यात्रा सम्पन्न हुई। भगवान बलभद्र, माता शुभद्रा और जगन्नाथ महाप्रभु मौसीबाड़ी से जरियागढ़ स्थित गढ़ आये। जरियागढ़ के वर्तमान ठाकुर जयेंद्र नाथ शाहदेव के साथ-साथ लाल शुभेंद्र नाथ शाह देव, कुमार नरेन्द्र नाथ शाहदेव, कुमार यशराज नाथ

शाहदेव और राजपरिवार के अन्य सदस्य एवं पुरोहित बसंत सारंगी, पुजारी रवि मिश्रा, शिशिर झा एवं ग्रामवासियों ने भक्ति भाव से महाप्रभु की पूजा अर्चना की। गढ़ में पूजा होने के पश्चात वापस भगवान के विग्रह को जयकारा लगाते हुए ठाकुर जयेंद्र नाथ शाहदेव के अगुवाई में भाव बिभोर ग्रामवासी, पंडित, पुरोहित एवं राजपरिवार के सदस्य महाप्रभु को मदन मोहन गुड़ी ले गये।

झारखंड पुलिस के पांच डीएसपी समेत 15 पदाधिकारी ट्रेनिंग में फेल

रांची (आजाद सिपाही)। झारखंड पुलिस अकादमी हजारीबाग में सीधी नियुक्ति से नियुक्त हुए डीएसपी, जिला कमांडेंट होमगार्ड, प्रोबेशन पदाधिकारी और कारा अधीक्षक का 16 जनवरी से 30 जनवरी तक प्रशिक्षण आयोजित कराया गया था। इसमें कुल 71 प्रशिक्षु पदाधिकारी शामिल हुए थे, जिनमें से 56 पदाधिकारी ट्रेनिंग में पास हुए, जबकि 15 पदाधिकारी इस प्रशिक्षण में फेल हो गये। इनमें पांच डीएसपी भी शामिल हैं।

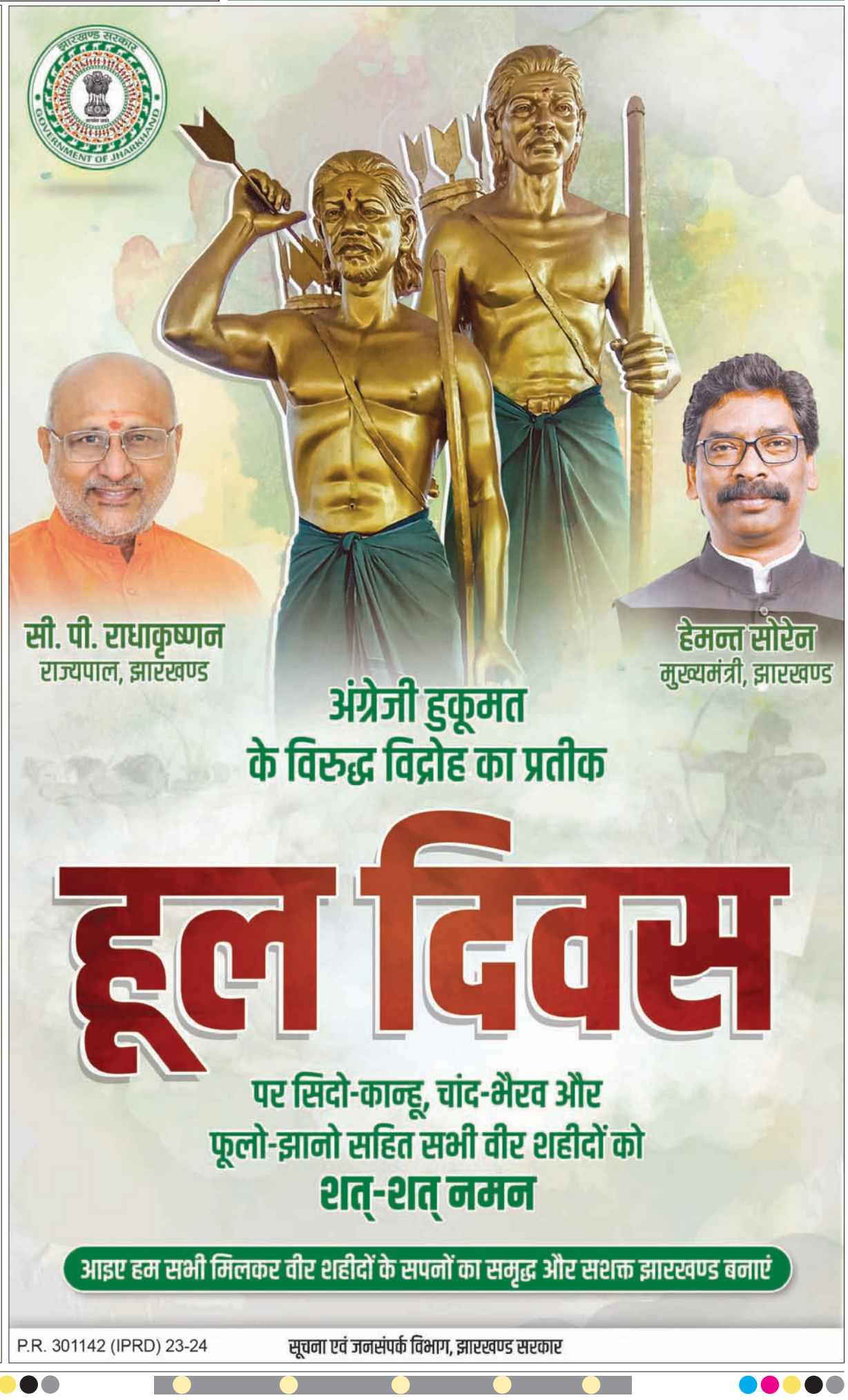

हजारीबाग-कोडरमा में धूमधाम से मनी बकरीद

मरकच्चो (आजाद सिपाही)। प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों में मुस्लिम धर्मावलम्बियों का त्याग व बलिदान का पवित्र त्योहार ईद उल अजहा (बकरीद) गुरुवार को अमन व शांति के साथ संपन्न हो गया। बकरीद को लेकर सुबह से लोग तैयारियों में जुट गए। बच्चों में खासकर उत्साह देखने को मिला। नए कपड़े में सजे बच्चे खूब इठला रहे थे। ईद को लेकर बच्चों ने खास तैयारियां की थी। ईद पर मिले उपहार की खुशियां दूसरों से बताने में मशगूल थे। समय पर लोगों ने मस्जिदों व ईदगाहों में पहुंच गए। प्रखंड मुख्यालय मरकच्चो समेत दशारो, पपलो, शाहगंज, कर्बला नगर, मंझला नगर, देवीपुर, दरदाही, नावाडीह 1, खरखार, ताराटांड़, महूंगाय, विंडोमोह, महुआटांड़, मुरकमनाय खेशमी समेत कई मुस्लिम बहुल इलाकों में मुस्लिम धर्मावलंबियों ने ईद उल अजहा की नमाज पढ़ी।
मौके पर लोगों ने देश में अमन, भाईचारगी और मुल्क की तरक्की के लिए दुआ मांगी। नमाज के उपरांत सभी मुस्लिम भाई ने एक दूसरे से गले मिलकर ईद उल अजहा की मुबारकबाद दी। इसके बाद लोगों ने अपने अपने घरों में बकरे की कुबार्नी दी।

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। बड़कागांव प्रखंड आसपास के क्षेत्रों में मुस्लिम भाइयों ने ईद-उल-जुहा (बकरीद) का पर्व गुरुवार को मनाया गया। बकरीद के मौके पर बड़कागांव जामा मस्जिद, गुरु चट्टी स्थित गौसिया मस्जिद, सिरमा, छवानियां,मस्जिद, चौपदार बलिया मस्जिद, बादम मस्जिद, समेत अन्य मस्जिदों में 8:30 बजे नमाज अदा की गयी। मुस्लिम समुदाय ने नमाज के बाद देश में अमन चैन और तरक्की के लिए दुआ मांगी। विधायक अंबा प्रसाद ने बकरीद के मौके पर मुस्लिम भाइयों को बधाई दी और कहा कि बकरीद का पर्व त्याग और बलिदान का पर्व है। बकरीद के मौके पर जिला परिषद सदस्य यासमीन निशा, बड़कागांव मध्य पंचायत के मुखिया मोहम्मद तकरिम उल्ला खान,मजहर अली,मोहम्मद इब्राहिम, कांग्रेस के जिला सचिव शेख अब्दुल्ला, जमाल सगीर, लोजपा के मोहम्मद परवेज, अख्तर हुसैन समेत अन्य ने मुख्य भूमिका निभायी।

सतगावां (आजाद सिपाही)। प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों में गुरुवार को भाईचारे का त्योहार बकरीद धूमधाम से मनाया गया। वहीं अकीदतमंदों ने मस्जिदों में नमाज पढ़ी। लोगों ने नमाज अदा करते हुए घर परिवार और समाज के साथ ही देश मे अमन और चैन की दुआ मांगी। ईद उल -उजहा की नमाज को साथ अदा करते हुए लोगो ने एक-दूसरे की मुबारकबाद दी। सोशल मीडिया के माध्यम से ज्यादातर लोग एक दूसरे को शांति व सौहार्द के पर्व बकरीद त्योहार की शुभकामनाएं दी वहीं बासोडीह, समलडीह, शिवपुर, अंगार, माधोपुर, बजनिया, मीरगंज, डेवोडीह, राजावर आदि गांवो में लोगो ने मस्जिद में ईद की नमाज अदा की। इस दौरान प्रखंड विकास पदाधिकारी बैधनाथ उरांव, इंस्पेक्टर निरंजन उरांव, प्रखण्ड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी शेख शकील अहमद, थाना प्रभारी आनंद कुमार साह अपने दल बल के साथ मुस्तैद दिखे।

विष्णुगढ़ 1(आजाद सिपाही)। विष्णुगढ़ प्रखंड के विभिन्न पंचायतो में गुरुवार की सुबह में ईदगाहो के मैदान में बकरीद की नमाज अदा की गयी। इसके बाद बकरीद की कुबार्नी दी गयी। इस्लाम धर्मावलियों ने देश की अमन चैन की दुआ मांगी। नवादा ईदगाह में नवादा के अलावे चरनखिया, बकसपुरा, गांधी नगर बनासो,पगार कुसुंभा, और कोनार डैम से आये नमाजियों ने एक साथ सभी लोगों ने नमाज अदा की। और ईद की मुबारकबाद देते हुए एक दूसरे से गले मिले। इसके अलावा विष्णु गढ़ ,चेडरा,वराय ,गैड़ा,करगालो, सारूकुदर, चानो,गाल्होबार, टन्डवा,नरकि ,गोविंदपुर समेत कई जगहों पर नमाज अदा की गई। जिसमें जिप सदस्य शेख तैयब,शमसुल खा, महताब हुसैन,राणा खा, जलील खा , इमामत अल्हाज हाफिजो कारी इलियास अहमद ने की और इनके पीछे सभी लोगों ने नमाज अदा की। मौके पर विशेष रूप से नवादा सदर मोहम्मद खलील अंसारी, सेक्रेटरी अब्दुल शकूर, कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष अब्बास अंसारी, निजाम अंसारी, एमआइएम जिला अध्यक्ष महमूद आलम, फखरुद्दीन अंसारी, इबरार अंसारी, हफीज अंसारी, दिलेर आजाद सहित हजारों की संख्या में लोगो ने नमाज अदा किया।

चरही (आजाद सिपाही)। प्रखंड मुख्यालय सहित कोयलांचल और बारह गांव क्षेत्र में गुरुवार को बकरा ईद पर्व पूरे हर्षोल्लास और धूमधाम से मनाया गया। क्षेत्र के मस्जिद और ईदगाहों में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अकिदतमंद के साथ बकरीद की नमाज अदा की । इस दौरान नमाज के बाद लोगों ने हाथ उठाकर अल्लाह से अपने परिवार और क्षेत्र की हरियाली-खुशहाली, सुख-समृद्धि और अमन-चैन के लिए दुआ मांगी। नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे से गले मिलकर बकरा ईद की मुबारकबाद दी। वहीं बकरा ईद के मौके पर दूसरे के घरों में जाकर लच्छेदार सेवईयां और एक से बढ़कर एक लजीज व्यंजनों का लुत्फ भी उठाया।

जयनगर(आजाद सिपाही)। प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों में ईद उल अजहा संपूर्ण प्रखंड में शांतिपूर्वक संपन्न हुआ। मुस्लिम धर्मावलंबियों ने बकरीद की नमाज अदा किया। तत्पश्चात एक दूसरे को ईद मुबारक की बधाई दिया। ईद उल अजहा नमाज के मौके पर उप प्रमुख राज नारायण सिंह, पूर्व जिप सदस्य पवन सिंह, मुखिया कौशर खान, पूर्व मुखिया शहजाद खान, मोहम्मद मुस्ताक खान, फिरोज हयात खान, मौलाना मुमताज आलम कादरी, रहमत खान, सरकार अहमद, नौशाद आलम, मिसवा उद्दीन, सरफुद्दीन अंसारी, इसहाक अंसारी, अनवर अंसारी, जैनुल अंसारी, शहबाज अंसारी, सरवर खान, मोहसिन खान, निसार खान सहित कई लोगों ने त्यौहार के लेकर एक दूसरे को बधाई दिया। तत्पश्चात खस्सी की कुबार्नी दी गयी। ज्ञात हो कि अपने प्रेम के प्रतीक को अल्लाह के समक्ष कुर्बान की जाने की परंपरा है। मौके पर एसडीपीओ प्रवीन पुष्कर, प्रखंड विकास पदाधिकारी अरुणा कुमारी, अंचल अधिकारी ओमप्रकाश बड़ाईक, माइका इंस्पेक्टर निरंजन उरांव, थाना प्रभारी ऋषिकेश कुमार सिन्हा, पुलिस अवर निरीक्षक अमित कुमार, सुनील पासवान, विनीता कुमारी सहित कई पुलिस जवान मौजूद थे।

बालक नाथ मंदिर में विहिप-बजरंग दल की बैठक

टाटीझरिया (आजाद सिपाही)। प्रखंड क्षेत्र के बाबा बालक नाथ मंदिर परिसर में गुरुवार को विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल का बैठक बजरंग दल प्रखंड अध्यक्ष नंदन ठाकुर की अध्यक्षता में की गयी । जिसका संचालन प्रखंड संयोजक रवि कुमार ने किया इस बैठक में मुख्य रूप से वीएचपी प्रांत संयोजक दीपक ठाकुर , वीएचपी जिला मंत्री अरविंद मेहता उपस्थित हुए । बैठक में निर्णय लिया गया की जिला के हर पंचायत गांव और प्रखंड में बजरंग दल गठन करना है और हजारीबाग में होने वाली विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल की तीन दिवसीय बैठक में बढ़चढकर भाग लेने की निर्णय लिया गया। इस बैठक में सहमंत्री गुरुदेव गुप्ता, कोषाधक्ष सुरेंद्र कुमार पप रवि कुमार और सहसंयोजक भोला शर्मा के अलावा। टाटीझरिया, झरपो, केसरा, डुमर, धरमपुर, जेरूवाडीह, दहरभंगा से महेंद्र प्रसाद,सुनील कुमार साव, रविशंकर, तुलसी प्रसाद,अर्जुन प्रसाद,दीपक , प्रिंस,मुकेश, अनुरोध संगम के अलावा कई अन्य लोग भी शामिल हुए।

हजारीबाग में संकल्प सभा 16 को : जयराम

हजारीबाग (आजाद सिपाही)। टाइगर जयराम महतो बुधवार को हजारीबाग पहुंचे। शाम को प्रेस वार्ता का आयोजन कर अपने आगामी कार्यक्रम की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हजारीबाग के गांधी मैदान में 16 जुलाई को बदलाव संकल्प सभा का आयोजन किया जायेगा। इस सभा में स्थानीय नीति सहित कई चुनावी राजनीति एजेंडे को लेकर सभा में अपनी बात रखी जायेगी। उन्होंने कहा कि हमारी पार्टी में दूसरे दलों से आये नेता को शामिल नहीं किया जायेगा। शुरूआत से जो हमारे पार्टी में युवा शामिल है वही पार्टी का नेतृत्व करेंगे। इससे पूर्व जेबीकेएसएस धनवार इकाई के प्रखंड अध्यक्ष राजेश रतन पूरी टीम के साथ उनका स्वागत किया। प्रेस वार्ता में संजय मेहता, राजेश रतन, विकास कुमार वर्मा, प्रवीण कुमार, महेंद्र महतो, उदय मेहता समेत कई युवा उपस्थित थे।

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

बरही (आजाद सिपाही)। झारखंड कुम्हार प्रजापति महासंघ के बैनर तले बरही अनुमंडल प्रजापति संघ के द्वारा जैक और सीबीएसइ बोर्ड और इंटर में उत्तीर्ण छात्र छात्राओं को सम्मानित करने के लिए गुरुवार को सम्मान समारोह का आयोजन गया रोड स्थित एक होटल में किया गया। प्रतिभा सम्मान समारोह की अध्यक्षता बरही प्रखंड प्रजापति संघ अध्यक्ष कमल शंकर पंडित और संचालन चौपारण प्रखंड अध्यक्ष रामअवतार प्रजापति ने किया। इस सम्मान समारोह में जिला महामंत्री गोपाल पंडित, मंत्री अजय प्रजापति कोषाध्यक्ष शिवकुमार प्रजापति लीलाधन प्रजापति नागेन्द्र प्रजापति, बरही प्रखंड संरक्षक तोखन प्रजापति देवधारी प्रजापति ,नारायण प्रजापति ,सहित कई गणमन्य उपस्थित हुए। कार्यक्रम की शुरूआत राजा दक्ष प्रजापति,श्रीयादे माता और भारत माता के चित्र पर दीप प्रज्वलित करते हुए पुष्पांजलि अर्पित किया गया। इस प्रतिभा सम्मान समारोह में बरही प्रखंड से मैट्रिक के15 और इंटर के 15 छात्र छात्राएं तथा चौपारण से मैट्रिक के 30 और इंटर के 10 छात्र-छात्राएं शामिल हुए। जिसमें सभी छात्र छात्राओं को समाज के द्वारा प्रशस्ति पत्र और मेडल देकर सम्मानित किया गया वही अनुमंडल टॉपर मैट्रिक और इंटर के तीनों संकाय के छात्र छात्राओं को प्रशस्ति पत्र और शील्ड देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को गोपाल पंडित,अजय प्रजापति,तोखन प्रजापति, देवधारी प्रजापति नारायण प्रजापति, शिवकुमार प्रजापति, रामसुंदर प्रजापति अजित प्रजापति, राजकुमार प्रजापति,लीलाधन प्रजापति, यादि लोगों ने सम्बोधित किया। मौके पर जिला महासचिव गोपाल पंडित, मंत्री अजय प्रजापति, कोषाध्यक्ष शिवकुमार प्रजापति,लीलाधन प्रजापति, बरही प्रखंड संरक्षक देवधारी प्रजापति, तोखन प्रजापति, डॉक्टर नारायण प्रजापति चौपारण प्रखंड संरक्षक गणेश प्रजापति, चौपारण प्रखंड सचिव रामसुंदर प्रजापति, बरही प्रखंड कोषाध्यक्ष मनोज कुमार, पूर्व प्रखंड अध्यक्ष संतोष प्रजापति, राहुल प्रजापति, धर्मेन्द्र प्रजापति, सुरेंद्र प्रजापति, नन्दलाल प्रजापति, अर्जुन पंडित समेत बरही एवं चौपारण प्रखंड से बच्चों के कई अभिभावक शामिल हुए।

विधायक की पहल पर मृतक के आश्रित को मिला आठ लाख का मुआवजा

जयनगर (आजाद सिपाही)। विधायक अमित कुमार यादव के पहल पर बीते दिनों छह जून को केटीपीएस पावर प्लांट में काम के दौरान करंट के चपेट में आने से मृतक मंटू यादव के आश्रित पत्नी इंदु देवी, पिता महादेव यादव और भाई दिलीप यादव को ग्रामीणों के समक्ष कंपनी के प्रोपराइटर सीताराम प्रसाद की ओर से बचे हुए छह लाख रुपये मुआवजा मिला। ज्ञात हो कि चंदवारा प्रखंड क्षेत्र के ग्राम गैड़ा निवासी युवक मंटू यादव का बीते दिनों केटीपीएस पावर प्लांट में काम के दौरान करंट के चपेट में आने से मौत हो गया था। उसी निमित्त विधायक अमित कुमार यादव और कंपनी के प्रोपराइट और अधिकारियों के साथ बैठक कर तत्काल मृतक के आश्रित को दो लाख रुपए मुआवजा दिया गया था और बाकी के बचे छह लाख रुपये आज दिया गया।

हथियार लेकर धमका रहा युवक गिरफ्तार

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। बड़कागांव थाना क्षेत्र के अंतर्गत हरली महावीर मंदीर के पास से दिनांक 28/29 जून के रात्रि समय करीब 21.50 बजे पुलिस को गुप्त सूचना मिला की एक व्यक्ति हथियार निकाल कर लहरा रहा है और आस पास के लोगों को डरा धमका रहा है त्वरित कारवाई करने पर बकरम पुलिस के द्वारा पकड़ा गया। इस सूचना को वरीय पदाधिकारी को देते हुए सूचना का सत्यापन और आवश्यक कारवाई के लिये सशस बल के साथ संध्या गश्ती दल ग्राम हरली पहुचा और समय करीव 22.40 बजे ग्राम हरली के महावीर मंदीर के पास पहुंचा तो देखा कि एक व्यक्ति पुलिस पार्टी को देख कर भागने लगा। पुलिस बल के द्वारा पकड़ लिया गया। पकड़ाये व्यक्ति से पूछे जाने पर उन्होंने अपना नाम पवन कुमार पिता बालेश्वर महतो ग्राम हरली, थाना बड़कागांव जिला- हजारीबाग बताया तथा उनकी तलाशी लेने पर पवन कुमार के पास से एक देशी कट्टा बरामद हुआ। जिसे विधिवत जप्ती सूची तैयार कर जप्त किया। जप्त प्रदर्श और गिरफ्तार अभियुक्त को लेकर थाना पहुंचा। इस संबंध में बडकागांव थाना कांड सं. 209/23 दिनांक 29.06.2023 धारा 25(1-ब)/26 आर्म्स एक्ट अंकित किया गया है । छापामारी दल में बड़कागांव के पुलिस और सशस्त्र बल शामिल थे।

2 को विधायक आवास पर प्रदर्शन करेंगे सहायक अध्यापक

आजाद सिपाही संवाददाता

हजारीबाग। राज्य के 62000 सहायक अध्यापक लगभग 20 वर्षों से लगातार अपनी सेवा देते आ रहे हैं। टेट पास सहायक अध्यापक एनसीटीइ और एनइपी के तमाम योग्यता को पूर्ण करते हैं। झारखंड सरकार के महाधिवक्ता ने लिखित राय सरकार को सौंपी है, जिसमें जेटेट पास सहायक अध्यापकों को वेतनमान दिया जा सकता है इसमें कोई भी विधिक अड़चन नहीं है। झारखंड के माननीय हेमंत सोरेन चुनाव के पूर्व बोले थे की हमारी सरकार बनी तो झारखंड के सभी सहायक अध्यापकों को तीन महीना के अंदर वेतनमान देंगे, परंतु आज चार वर्ष पूर्ण होने को है परंतु वेतनमान अभी तक नहीं मिल पाया है। उपरोक्त बातें टेट पास संघर्ष मोर्चा के प्रदेश महासचिव सह टेट समन्वय समिति के वरिष्ठ नेतृत्वकर्ता संजय मेहता ने कही। मेहता ने कहा कि हम सभी सहायक अध्यापकों को जब तक वेतनमान नहीं मिल जाता तब तक आंदोलन जारी रहेगा। 2 जुलाई को बड़कागांव विधायक अंबा प्रसाद के हुडहुडु स्थित आवास में सैकड़ों की संख्या में पहुंचकर धरना देंगे। आंदोलन की सूचना विधायक अंबा प्रसाद, अनुमंडल पदाधिकारी हजारीबाग, थाना प्रभारी बड़ा बाजार थाना हजारीबाग को कैलाश मेहता और संजय मेहता के द्वारा लिखित रूप से दिया गया है।

ऑपरेशन सतर्क के तहत अंग्रेजी शराब बरामद, दो गिरफ्तार

आजाद सिपाही संवाददाता

कोडरमा। ऑपरेशन सतर्क के तहत कोडरमा स्टेशन पर अंग्रेजी शराब बरामद करते हुए दो लोगों को गिरफ्तार किया गया है। निरीक्षक प्रभारी जवाहर लाल के साथ प्रधान आरक्षी श्रवण कुमार तथा आरक्षी मोला कुमार प्रसाद सभी रेसुब, पोस्ट के बल सदस्य ने कोडरमा रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म सं 4, 5 पर गश्ती के क्रम में न्यू फुट ओवर ब्रीज के नीचे दो व्यक्तियों को एक प्लास्टिक के झोला तथा दुसरा ट्रॉली बैग के साथ संदिग्ध अवस्था में देखा। संदेह होने पर उनके पास जाकर पूछताछ किया गया तो उनलोगों ने अपना नाम और पता क्रमशः मो० चांद आलम (उम्र करीब 28 वर्ष, पिता- एनुल हक, सा वजीरगंज, थाना वजीरगंज, जिला गया) तथा मो एकराम (उम्र 27 वर्ष, पिता मो नईम, सा वजीरगंज, थाना वजीरगंज) बताया। 24 बीयर और चार व्हिस्की बरामद किया । अंग्रेजी शराब के बोतल के बाबत न तो कोई कागजात दिखाया और ना ही संतोषप्रद जबाब दिया।
अंग्रेजी शराब को जप्ती सूची बनाते हुए जप्त किया गया तथा पकड़े गये व्यक्ति का गिरफ्तारी ज्ञापन बनाते हुए गिरफ्तार किया गया। अग्रिम कार्यवाही के तहत जप्त शराब और गिरफ्तार दोनो व्यक्ति को अग्रिम कार्यवाही वास्ते उत्पाद विभाग कोडरमा को सुपुर्द कर दिया गया।

आपसी सौहार्द्र के बीच ईद उल अजहा का त्योहार संपन्न

पदमा (आजाद सिपाही)। पदमा प्रखंड में गुरुवार को ईद उल अजहा का त्योहार शांतिपूर्वक संपन्न हो गया। मुश्लिम समुदाय के लोगों ने ईद उल अजहा की नमाज सुबह सात से आठ बजे के बीच विभिन्न मस्जिदों और ईदगाहों में अदा की। इस मौके पर पदमा बीडियो मनीष कुमार और थाना प्रभारी शिवदयाल सिंह आर्म बल के साथ प्रखंड के विभिन्न स्थानों में घूम घूम कर स्थिति का जायजा लेते रहे। इस अवसर पर दोनों समुदाय के लोगों ने एक दूसरे को ईद उल अजहा की बधाई दी।

बड़कागांव में इलाज के दौरान प्रसूता की मौत

बड़कागांव (आजाद सिपाही)। बुधवार को तलासवर पंचायत अंतर्गत टिकरी टांड़ निवासी विनोद साहू की पत्नी 27 वर्षीय प्रसूति पुष्पा ने पलांडू उप स्वास्थ्य केंद्र में एक सुंदर सी बच्ची को जन्म दिया। इलाज के दौरान हुई प्रसूति पुष्पा की मौत को लेकर मृतक के ससुर जितन साहू के द्वारा थाने में आवेदन देकर स्वास्थ्य कर्मियों पर लापरवाही बरतने का गंभीर आरोप लगाया है। बुधवार देर शाम तक शव का अंतिम संस्कार नहीं किया जा सका था। जिसके कारण हालात को देखते हुए परिजनों ने पुलिस से शव की पोस्टमार्टम कराने के लिए अपनी सहमति ब्यक्त की। पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए टिकरी टाँड़ गांव पहुंचकर बुधवार रात्रि 9:30 बजे शव को अपने कब्जे में लिया और शव को थाना ले लाई। दूसरे दिन गुरुवार सुबह 8:00 बजे पोस्टमार्टम के लिए हजारीबाग भेज दिया गया। मृतक के ससुर जितन साहू ने आवेदन में लिखा है कि इलाज के दौरान डॉक्टर नहीं था। उपस्थित नर्स प्रमिला देवी पति विकास कुमार एवं गीता देवी के द्वारा पैसे की मांग करने लगे। पैसे नहीं दिए जाने के कारण गलत तरीके से ऑपरेशन कर दिया गया। ऑपरेशन के दौरान नस काट दिया गया और उसकी हत्या कर दी गयी ।

जहर खाने से किशोरी की अस्पताल में मौत

कोडरमा। जिले के सतगावां प्रखंड के खुट्टा निवासी 16 वर्षीया किशोरी की जहर खाने के बाद सदर अस्पताल कोडरमा में इलाज के क्रम में मौत हो गयी। मृतका की पहचान अंजली कुमारी पिता दशरथ मिस्त्री के रूप में हुई है। मृतका इंटर की छात्रा थी। जानकारी के अनुसार बुधवार की शाम घरेलू विवाद में किशोरी ने गुस्से में आकर जहर का सेवन कर लिया। जिसके बाद तबीयत बिगड़ने पर परिजन उसे इलाज के लिए सतगावां स्वास्थ्य केंद्र और फिर सदर अस्पताल कोडरमा लेकर पहुंचे। जहां इलाज के क्रम में किशोरी की गुरुवार को मौत हो गयी। इसकी सूचना कोडरमा पुलिस को देने के बाद पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया।

70 सालों में नहीं होनेवाला काम नौ साल में हुआ : अन्नपूर्णा

आजाद सिपाही संवाददाता

मरकच्चो। केंद्र में सत्तारूढ़ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सरकार के नौ वर्ष पूर्ण होने पर विभिन्न आयोजन कर भाजपा जन जन तक पहुंचने की योजना बना रहीं है। इसके साथ ही केंद्र सरकार द्वारा देश हित में किए गये कार्यों से लोगों को अवगत करा रही है। इसी के तहत गुरुवार को कार्यक्रम संयोजक बेदु साव की देख रेख में मरकच्चो प्रखंड के देवीपुर पंचायत स्थित ग्राम डोंगोडीह के साहू धर्मशाला में कार्यक्रम आयोजित किया गया। आयोजित सम्मेलन में मंच पर उपस्थित वक्ताओं ने आगामी 2024 के चुनाव को लेकर रणनीति बनाते हुए कार्यकताओं में उत्साह भरा। साथ ही झारखंड की प्रदेश सरकार को उखाड़ फेंकने का संकल्प दिलाया। बतौर मुख्य अतिथि भाजपा के कोडरमा सांसद अन्नपूर्णा देवी और कोडरमा विधायक डॉ नीरा यादव मुख्य रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मंडल अध्यक्ष विजय यादव ने किया। सांसद अन्नपूर्ण देवी ने कार्यकताओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि कार्यकर्ता पार्टी की रीढ़ हैं। भाजपा के 9 साल सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण योजनाओं की जानकारी देते हुए आगे कहा कि महामारी की विषम परिस्थिति में भी केंद्र सरकार ने महामारी नियंत्रण के साथ जनहित योजनाओं के क्रियान्वयन में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। इसी का परिणाम है कि गांव स्तर पर केंद्र सरकार की योजनाओं को लाभ बढ़चढ़कर लोगों को मिला। देश के सशक्त नेतृत्व का परिणाम है कि जो कार्य 70 वर्षों में नहीं हो सका वह भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने नौ सालो में कर दिखाया। विधायक डॉ नीरा यादव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश का नाम रौशन किये है। भाजपा के शासनकाल में राज्य को 20 घंटे बिजली उपलब्ध रहती थी लेकिन झारखंड मुक्ति मोर्चा की सरकार में बिजली को क्या हो गया जो बिजली की स्थिति ऐसी हो गयी कि क्षेत्र में 6 से 8 घंटे बिजली मिल पाती है। उन्होंने यह भी बताया कि चोपनाडीह में बिल्डिंग बनकर तैयार है उसमें सरकारी इंजीनियरिंग कॉलेज खोला जाये। ताकि इस क्षेत्र के लोगों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए बाहर जाना ना पड़े। सम्मेलन को जिला अध्यक्ष नितेश चंद्रवंशी, महामंत्री राजकुमार यादव, गोपाल कुमार गुतुल, महेंद्र वर्मा, आकाश वर्मा, बेदू साव, बसंत साव, चंद्रशेखर जोशी आदि ने भी संबोधित किया। मौके पर सुरेंद्र कुमार, सुनील यादव, पवन सिंह, अभिमन्यु राणा, राजेश यादव, भीम यादव, सोनु पांडे, सुरेन्द्र यादव, आकाश वर्मा, सूरज प्रताप मेहता, सकलदेव सिंह, पवन यादव, शंकर यादव, सनीचर साव, भोला यादव, विकास यादव, श्रीकांत यादव, अरविंद यादव, सुनील वर्मा, लखन यादव, हरि यादव, यमुना यादव, सुरेंद्र यादव, कैलाश प्रसाद यादव, यमुना यादव, सुरेंद्र यादव, श्रीकांत यादव, देवी सिंह यादव, राम लाल यादव, शंभू सिंह, मोहन ठाकुर समेत अन्य कार्यकर्ता उपस्थित थे।

केंदुआ पुल के पास से व्यक्ति का शव बरामद

बरकट्ठा (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र कलहाबाद केन्दुआ रोड में कलहाबाद जंगल स्थित केंदुआ पुल के पास से एक व्यक्ति का शव पुलिस ने बरामद किया है। शव कि शिनाख्त आजो मियां 55 वर्ष ग्राम कल्हाबाद निवासी के रूप में हुई है। थानाप्रभारी ने बताया कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट से पता चलेगा कि उसकी हत्या हुई है कि नहीं। परिजनों के मुताबिक हत्या हत्या की गयी है। प्राप्त जानकारी के मुताबिक मृतक मंगलवार को केंदुआ बाजार गया। उसके बाद वह नहीं लौटा। उसकी खोजबीन की जा रही थी। इसी बीच गुरुवार को कल्हाबाद जंगल स्थित पुल के समीप एक शव होने की सूचना पुलिस को दी गयी। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं विधायक अमित कुमार यादव, पूर्व विधायक जानकी प्रसाद यादव, जिप सदस्य कुमकुम देवी, भाजपा मंडल अध्यक्ष भोला प्रसाद, पूर्व मुखिया संघ अध्यक्ष बसंत साव मृतक के घर पहुंचकर परिजनों को ढांढस बंधाते हुए सांत्वना दिया।

आजाद सिपाही
रांची, शुक्रवार, 30 जून, 2023
www.azadsipahi.in

रामगढ़ जिले की चार दुकानों में बेचा जा रहा था कैस्ट्रॉल कंपनी का नकली तेल

छापामारी में 49 डिब्बा नकली ऑयल जब्त

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। कैस्ट्रोल कंपनी के पावर ऑफ अटॉर्नी होल्डर जमशेदपुर निवासी सूरज सोनी पिता ब्रजकिशोर प्रसाद ने कैस्ट्रोल कंपनी के डुप्लीकेट ऑयल बेचने के आरोप में रामगढ़ थाना में 4 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज कराया है। इस मामले में थाना पुलिस ने कांड संख्या 161/23 धारा 420 आइपीसी 63/65 के तहत मामला दर्ज कर छानबीन शुरू कर दी है। मामले में थाना प्रभारी सह इंस्पेक्टर ने बताया कि कंपनी के शिकायत पर कैस्ट्रोल कंपनी के नकली ऑयल बेचने के आरोप में 4 लोगों के खिलाफ मामला दर्ज किया गया है।

क्या है मामला

कैस्ट्रोल कंपनी के पावर ऑफ अटॉर्नी होल्डर सूरज सोनी को गुप्त सूचना मिली थी कि रामगढ़ जिले के बाजारों में कैस्ट्रोल कंपनी के डुप्लीकेट ऑयल बेचे जा रहे हैं। सूचना पर रामगढ़ थाना पुलिस के सहयोग से सूरज सोनी ने चार दुकानों में छापामारी कर नकली कैस्ट्रोल ऑयल जब्त किया। आवेदन में सोनी ने कहा है कि कैस्ट्रोल कंपनी की मुख्यता पहचान क्या है कि ढक्कन में लगा हुआ बारकोड जो भी स्केन नहीं होता है और आसानी से मिट जाता है, ढक्कन को खोलने के बाद सिर में कैस्ट्रोल लिखा नहीं होता जबकि ओरिजिनल में कैस्ट्रोल लिखा होता है, जबकि ओरिजिनल में कैस्ट्रोल लिखा होता।

इन दुकानों में की गयी छापामारी

छापामारी के दौरान अग्रवाल इंटरप्राइजेज के संचालक सुरेश अग्रवाल पिता स्व रामेश्वर दास के यहां 3 पीस नकली ऑयल, बाइक रिपेयरिंग सेंटर के दीपक कुमार पिता नेपाल महतो के यहां एक पीस नकली ऑयल, रोनक हीरो हौंडा के मो मोइन अंसारी पिता स्व जलुद्दीन अंसारी के यहां 11 पीस नकली ऑयल, एस के बाइक सेंटर के सुनील कुमार पिता सुरेंद्र लाल महतो के यहां 29 पीस कैस्ट्रोल नकली डिब्बा प्राप्त हुआ।

पतरातू-भुरकुंडा में अकीदत के साथ मनायी गयी बकरीद

पतरातू

आजाद सिपाही संवाददाता

पतरातू। पतरातू और आसपास क्षेत्र के मस्जिदों में गुरुवार को मुस्लिम धर्मावलंबियों ने अकीदत के साथ ईद उल अजहा (बकरीद) की नमाज अदा की। साथ ही एक दूसरे को गले लग कर ईद उल अजहा की बधायी दी। वहीं बकरीद के अवसर पर कई मुस्लिम धर्मावलंबी ने बकरे की कुबार्नी दी। इसमें पतरातू, जयनगर, सांकुल, सोलिया, पलानी, ताला टांड़, उचरिंगा, मस्जिद कॉलोनी, हफुआ, पालु, रोचाप, कुरबीज आदि के ईदगाह और मस्जिदों में बकरीद की नमाज अदा की। इस दौरान लोगों, खास कर बच्चों में खासा उत्साह देखा गया।

भुरकुंडा

आजाद सिपाही संवाददाता

भुरकुंडा। भुरकुंडा कोयलांचल, भदानीनगर, बासल सहित आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों में गुरुवार को शांतिपूर्ण माहौल में बकरीद पर्व मनाया गया। पर्व को ले मुस्लिम धर्मावलंबियों ने मस्जिदों व विभिन्न ईदगाहों में अकीदत के साथ ईद-उल-अजहा की नमाज अदा की। साथी ही क्षेत्र की हरियाली-खुशहाली, अमन-चैन की अल्लाह ताला से दुआएं मांगी। पर्व को ले बकरे की कुबार्नी दी गयी। साथ ही लोगो ने एक-दूसरे के गले मिलकर बकरीद पर्व की मुबारकबाद दी। इस दौरान मुस्लिम धर्मावलंबियों ने एक-दूसरे के घर जाकर एक से बढ़कर एक लजीज व्यंजनों का भी लुत्फ उठाया। साथ ही क्षेत्रवासियों को बकरीद पर्व की बधाई दी गयी। बकरीद पर्व को लेकर भुरकुंडा ओपी प्रभारी अमित कुमार, भदानीनगर ओपी प्रभारी राजदीप कुमार व बासल थाना प्रभारी अमर शुक्ला दलबल के साथ विधि-व्यवस्था बनाए रखने में पूरी तरह से मुस्तैद दिखें। वहीं क्षेत्र में अमन-चैन का माहौल भी दिखा।

मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय पदाधिकारियों का दौरा 15 को

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। मारवाड़ी युवा मंच के प्रांतीय पदाधिकारी सांगठनिक दौरा के क्रम में बुधवार की देर शाम रामगढ़ पहुंचे। इस दौरान होटल शिवम इन में मारवाड़ी युवा मंच के प्रदेश अध्यक्ष अरुण गुप्ता, उपाध्यक्ष विशाल पाड़िया, महामंत्री सार्थक अग्रवाल और मंडल उपाध्यक्ष विनीता सिंघानिया ने युवा मंच और रामगढ़ चेतना शाखा के सदस्यों के साथ बैठक की। बैठक में निर्णय लिया गया कि 15 जुलाई को मारवाड़ी युवा मंच रामगढ़ कैंट और चेतना शाखा के तत्वावधान में मंडलीय सभा के आयोजन का निर्णय लिया गया। साथ ही कार्यक्रम को लेकर रूप-रेखा तैयार की गयी। बैठक में मुख्य रूप से युवा मंच के रामगढ़ शाखा अध्यक्ष निलिंद अग्रवाल, आशीष अग्रवाल, अमन बोंदिया, धीरज बंसल, श्रींजय मेवाड़, अमित अग्रवाल, लोकेश बगड़िया महिला चेतना शाखा के रीना मोदी, स्नेहा जैन, मीनू बगड़िया, मिली अग्रवाल सहित कई सदस्य शामिल हुये।

राज्य स्तरीय बॉक्सिंग चैंपियनशिप में जिले के बॉक्सरों का चयन और प्रशिक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। खेलगांव में 30 जून से आयोजित दो दिवसीय राज्य स्तरीय बॉक्सिंग चैम्पियनशीप को लेकर गुरुवार को रामगढ़ जिला बॉक्सिंग संघ के तत्वावधान में बॉक्सरों का चयन और प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान जूनियर वर्ग में इशांत पांडेय, रेहान अख्तर, आकाश प्रजापति, सचिन कुमार, दिव्यांशु राज, तुषार सिंह, क्रिस सिन्हा, अतुल वर्मा, निखिल कुमार, राहुल कुमार साह, अभय कुमार महतो बालिका वर्ग में उर्मिला कुमारी और स्वाती कुमारी का चयन किया गया। सब जूनियर के लिए हर्षदीप यादव, ऋषभ कुमार, कार्तिक शौर्य, मिस्बाउल हक के अलावे बालिका वर्ग से से वर्तिका रानी और अंजली कुमारी का चयन के बाद प्रशिक्षण दिया गया। चयनित बॉक्सर रांची स्थित खेल गांव में आयोजित बॉक्सिंग चैम्पियनशीप में 30 जून-दो जुलाई तक चलने वाले प्रतियोगिता में शामिल होंगे। उक्त प्रतियोगिता में जो भी बॉक्सर बेहतर प्रदर्शन करेंगे, वे नेशनल गेम में शामिल होंगे। सभी बॉक्सरों को रामगढ़ जिला बॉक्सिंग संघ के अध्यक्ष बलजीत सिंह बेदी, सचिव शशि पांडेय, कोच बबलू महतो, संजय सोनकर सहित कई सदस्यों ने जीत की शुभकामना के साथ खेलगांव के लिए रवाना किया।

श्री शनिदेव मंदिर का वार्षिकोत्सव मनाया गया

आजाद सिपाही संवाददाता

पतरातू। पतरातू प्रखंड के जयनगर गांव स्थित श्री शनि देव मंदिर का 11वां वार्षिकोत्सव गुरुवार को मनाया गया। इस दौरान शनिदेव की विधि विधान के साथ पूजा अर्चना की गयी। पुजारियों द्वारा पूजा का अनुष्ठान मंदिर के संस्थापक पुनीत पाठक के हाथों संपन्न कराए गया। पूजा समाप्ति के बाद भंडारा का आयोजन किया गया। जिसमें श्रद्धालुओं के बीच पूड़ी सब्जी और बुंदिया का वितरण किया गया। मौके पर नरेश प्रसाद पाठक, अशोक पाठक, अमित पाठक, रमा प्रजापति, रामजी सोनकर, बबलू पाठक, अनिल राम, गुड्डु राम, दीपू कुमार, निखिल कुमार, प्रशांत सोनी आदि उपस्थित थे।

भाजपा छावनी मंडल की बैठक में कार्यकर्ताओं ने लिया

मेरा बूथ, सबसे मजबूत बनाने का संकल्प

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। भाजपा छावनी मंडल की बैठक मंडल अध्यक्ष शिवकुमार महतो की अध्यक्षता में शहर के बिजुलिया तालाब रोड स्थित ब्रह्मर्षि धर्मशाला में हुई। बैठक के दौरान भाजपा नेताओं ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नौ वर्ष के कार्यकाल पूरा होने पर सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को गांव के अंतिम छोर तक पहुंचाने का निर्णय लिया। वहीं आगामी लोकसभा चुनाव को देखते हुए प्रधानमंत्री के आह्वान पर मेरा बूथ सबसे मजबूत बनाने का संकल्प भी लिया। बैठक को संबोधित करते हुए प्रभारी डॉ संजय सिंह ने कहा कि बूथ स्तरीय कार्यकर्ताओं के बल पर ही भाजपा आज विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनी है। बूथ स्तरीय कार्यकर्ता ही पार्टी के रीढ़ हैं। जिसके कारण हमें बूथ स्तर पर मजबूती लाने की आवश्यकता है। बैठक में मुख्य रूप से अजीत गुप्ता, सुरेंद्र शर्मा, प्रो आलोक सिंह , वसुध तिवारी, भगवान प्रसाद, मुन्ना खटीक, राजीव रंजन प्रसाद, शीतल सिंह, अभिषेक चौधरी, ब्रजेश पाठक, तरुण कुमार साहू धीरज साहू सुरजीत सिंह छाबड़ा, त्रिभुवन यादव, अरविंद सिंह, सत्यजीत सिंह, रवि गुप्ता सहित कई भाजपा नेता व कार्यकर्ता शामिल थे।

भाजपा मांडू मंडल ने चलाया जनसंपर्क अभियान

कुजू (आजाद सिपाही)। सेवा, सुशासन एवं गरीब कल्याण के मोदी सरकार के 9 वर्ष पूरे होने पर भाजपा मांडू मंडल ने जनसंपर्क अभियान चलाया। जनसंपर्क अभियान का नेतृत्व मांडू मंडल महामंत्री अशोक कुमार कर रहे थे। इस दौरान नेताओं ने क्षेत्र के कुजू पूर्वी पंचायत अंतर्गत केबी गेट कॉलोनी, श्री राम चौक समेत कई जगहों पर जनसंपर्क अभियान के तहत लोगों से मिले। मौके पर अशोक कुमार ने कहा कि जनसंपर्क अभियान के दौरान लोगों द्वारा उत्साह पूर्वक मोदी सरकार के सफल कार्यकाल की सराहना की जा रही है। साथ ही, आगामी 2024 में पुन: समर्थन बनाए रखने का वायदा किया। मौके पर जिलाध्यक्ष प्रवीण मेहता, पूर्व जिलाध्यक्ष रंजीत सिन्हा, उमेश चंद्र पटेल, शंभू लाल ठाकुर, आशीष कुमार, राजू साव शामिल रहे।

कुजू में महायज्ञ समापन पर भगवती जागरण का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

कुजू । कुंदरियाबांध कुजू में पांच दिवसीय हनुमंत महायज्ञ के समापन के मौके पर भगवती जागरण का आयोजन किया गया। आयोजित जागरण का शुभारंभ कुमकुम बिहारी जागरण ग्रुप, देवघर के मुख्य कलाकार कुमकुम बिहारी ने दीप प्रज्वलित कर किया। साथ ही, मुख्य गायक कुमकुम बिहारी, जितेंद्र बाबूवा समेत अन्य कलाकारों ने एक से बढ़कर एक भक्ति संगीत की प्रस्तुति कर मौजूद लोगों को झूमने पर विवश कर दिया। वही, संजय झांकी ग्रुप ने एक से बढ़कर एक जीवंत झांकी की प्रस्तुति किया। वहीं, जागरण कार्यक्रम में आये मांडू थाना प्रभारी अवधेश कुमार को समिति के सदस्यों ने अंग वस्त्र भेंट किया। इधर, कमेटी के सदस्यों ने बेहतर कार्यों के लिए एक दूसरे को फूल व अंग वस्त्र भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में अध्यक्ष विनोद मेहता, सचिव आशीष मुखर्जी, मुखिया जय कुमार ओझा, शिवा मेहता, अरविंद साहू, संतोष मेहता समेत कई सदस्यों का सराहनीय योगदान रहा।

श्री श्री राधा कृष्ण मंदिर में रात्रि जागरण का आयोजन, झूमे श्रद्धालु

धार्मिक अनुष्ठान से बढ़ती है भाईचारगी: मनोज महतो

आजाद सिपाही संवाददाता

रामगढ़। छत्तरमांडू में श्री श्री राधा कृष्णा मंदिर जीर्णोद्धार मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा और पांच दिवसीय महायज्ञ के अंतिम दिन रात्रि जागरण का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य रूप से नगर परिषद उपाध्यक्ष मनोज कुमार महतो, समाजसेवी लालजी महतो उपस्थित हुये। मौके पर जागरण का उद्घाटन उनके द्वारा संयुक्त रूप से फीता काटकर किया गया। मौके पर मनोज कुमार महतो ने कहा कि धार्मिक आयोजनों से आपसी भाईचारे की भावना पनपती है। लोग आपसी वैमनस्यता को भूला कर धार्मिक अनुष्ठानों में लीन हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि भगवान श्री कृष्ण हमारे क्षेत्र के हर नागरिक के अंदर विकट परिस्थितियों में लड़ने की शक्ति दें। कहा की हमेशा हमलोगों को कृष्ण की तरह हर लोग से प्रेम भाव से बात करना चाहिए। हमारे अंदर द्वेष की भावना नही रहनी चाहिए। मौके पर कलाकारों ने एक से बढ़कर एक भक्ति गीत गाकर लोगों का मन मोह लिया। वहीं कलाकारों द्वारा शिव-पार्वती और कृष्ण-सुदामा कहानी पर आधारित झांकी प्रस्तुत कर लोगों को खूब झूमाया।

इन्होंने कार्यक्रम को बनाया सफल

कार्यक्रम को सफल बनाने वालों में कमिटी अध्यक्ष भवानी महतो, सचिव सच्चीनंद महतो, उपाध्यक्ष ईश्वर प्रसाद, कोषाध्यक्ष प्रदीप कुशवाहा, संरक्षक रामनरेश महतो, सुनील कुमार, सुभाष महतो, शंकर प्रसाद महतो, नरेश साहू, बासुदेव महतो, दिनेश कुमार, संजय कुमार, कृष्णा प्रसाद, दिनेश कुमार, पवन कुमार, संतोष कुमार, कजरू महतो, विवेक प्रसाद कुशवाहा, दीपक कुमार, रुपेश कुमार, नटवरलाल कुशवाहा, संतोष सोनी, देवनंद कुमार, गणेश कुशवाहा, अनूप यादव, दिलीप यादव आदि शामिल थे।

कुजू चौक में भाजपा का महाजनसंपर्क अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

कुजू। पीएम नरेंद्र मोदी के 9 साल बेमिसाल सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण अभियान के तहत भाजपा ने कुजू चौक मे डोर टू डोर महा जनसम्पर्क अभियान चलाया। जिसका नेतृत्व भाजपा मांडू मंडल उपाध्यक्ष रतन प्रसाद साहू ने की। इस कार्यक्रम मे भाजपा जिलाध्यक्ष प्रवीण मेहता, भाजयुमो मंडल माण्डू अध्यक्ष रवि साहू, भाजपा मंडल मंत्री राजेश साहू, भाजयुमो महामंत्री पंचीत महतो, मंत्री श्रवण साह, अमित केशरी, शुभम कुमार, राजेन्द्र केशरी, मोहित अग्रवाल, राहुल पटेल, सोनू कुमार शामिल रहे।

क्रिकेट में नस्लवाद

इंग्लिश क्रिकेट में नस्लवादी पूर्वाग्रहों और भेदभाव की परिपाटी को लेकर आई हालिया रिपोर्ट दुनिया भर में खेल के दायरे से बाहर भी लोगों का ध्यान खींच रही है। मार्च 2021 में इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (इसीबी) ने इंडिपेंडेंट कमिशन फॉर एक्विटी इन क्रिकेट (आइसीइसी) गठित करके इस दिशा में जांच-पड़ताल की प्रक्रिया शुरू करवाई कि उसके यहां क्रिकेट जगत में नस्लवादी प्रवृत्तियों का कितना असर है। इस कमिशन ने व्यापक जांच-पड़ताल के बाद 317 पन्नों की जो रिपोर्ट दी है, उसे इंग्लिश क्रिकेट के लिए शर्मनाक बताया जा रहा है। कमिशन ने कहा है कि यह महज कुछ सड़े सेबों का मामला नहीं है। समस्या की जड़ें गहराई तक फैली हुई हैं। रिपोर्ट के मुताबिक नस्लवादी पूर्वाग्रहों के प्रमाण तो हर स्तर पर मिलते ही हैं- एशियाई और अफ्रीकी मूल के खिलाड़ियों को तरह-तरह के फिकरों का सामना करना पड़ता है- लेकिन बात यहीं तक सीमित नहीं है। नस्लभेद के साथ ही वर्ग और लिंग आधारित पक्षपात के भी प्रमाण कमिशन को बड़े पैमाने पर मिले। निम्न तथा मध्यमवर्गीय पृष्ठभूमि वाले खिलाड़ियों और महिलाओं को इसका दंश झेलना पड़ता है। खासकर महिला खिलाड़ियों के साथ तो पुरुष खिलाड़ियों के मुकाबले कम सुविधाएं और कम पारिश्रमिक जैसे मसले भी हैं। ये तमाम बुराइयां इंग्लिश क्रिकेट में पहले से रही हैं, लेकिन ये दबी-ढकी अवस्था में थीं। कमिशन की रिपोर्ट ने इसकी मौजूदगी स्थापित कर दी है। इस वजह से इंग्लिश क्रिकेट पर उंगलियां भी उठ रही हैं। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि यह रिपोर्ट अपने आप सामने नहीं आयी है। इसीबी ने कमिशन का गठन कर अपने अंदर की बुराइयों को देखने, समझने, स्वीकार करने और फिर उनसे मुक्त होने की जिस भावना का परिचय दिया, वह निश्चित रूप से काबिले तारीफ है। रिपोर्ट आने के बाद इसीबी ने समय रहते पक्षपात और भेदभाव पर काबू कर पाने में अपनी नाकामी के लिए स्पष्ट तौर पर उन सबसे माफी मांगी है, जिन्हें किसी रूप में इसका शिकार होना पड़ा। साथ ही उसने कहा है कि कमिशन की रिपोर्ट में दी गयी 44 सिफारिशों को तीन महीने के अंदर लागू किया जायेगा। निश्चित रूप से इस बात पर नजर रखी जानी चाहिए कि ईसीबी अपने इस वादे पर किस हद तक कायम रहता है और उसके द्वारा उठाये गये कदमों की बदौलत जमीन पर हालात कहां तक बदलते हैं, लेकिन चाहे नस्लवाद हो या लिंग, धर्म, जाति, भाषा, क्षेत्र आदि के आधार पर होने वाले अन्य भेदभाव, दूसरे क्रिकेट बोर्ड इनसे पूरी तरह मुक्त होंगे, ऐसा मानने की कोई ठोस वजह नहीं है। चूंकि ये बुराइयां समाज में अलग-अलग रूपों में नजर आती हैं, इसलिए स्वाभाविक है कि क्रिकेट भी इनसे अछूता नहीं होगा। बेहतर होगा कि अन्य क्रिकेट बोर्ड भी इनकी पहचान करके इनसे मुक्त होने की प्रक्रिया अपनी तरफ से और जल्द से जल्द शुरू करें।

नस्लभेद के साथ ही वर्ग और लिंग आधारित पक्षपात के भी प्रमाण कमिशन को बड़े पैमाने पर मिले। निम्न तथा मध्यमवर्गीय पृष्ठभूमि वाले खिलाड़ियों और महिलाओं को इसका दंश झेलना पड़ता है।

अभिमत
आजाद सिपाही

संविधान निर्माताओं ने महसूस किया कि विवाह और भरण-पोषण से जुड़े मामलों का संबंध किसी पूजा पद्धति से नहीं है, बल्कि इसका संबंध इंसानियत से है। निस्संतान व्यक्ति यदि किसी बच्चे को गोद लेकर अपनी वंश परंपरा को आगे बढ़ाना चाहता है या उससे उसको सुरक्षा बोध का अहसास होता है, तो उससे किसी पूजा पद्धति की अवमानना कैसे हो सकती है।

सभी नागरिकों के हक में है समान नागरिक संहिता

प्रो हरबंश दीक्षित

हैरानी की बात यह है कि शाहबानो के जिस मुकद्दमे में सुप्रीम कोर्ट ने लोगों से इस दिशा में आगे बढ़ने की पहल का आह्वान किया, उसके दुष्प्रचार ने समान नागरिक कानून की पहल को सबसे मर्मांतक चोट पहुंचायी। परिणाम इसका ठीक उलटा हुआ। इसे मुसलमानों के धार्मिक मामलों में दखलअंदाजी के रूप में प्रचारित किया गया।

संविधान का अनुच्छेद-44 सबसे अधिक दुष्प्रचारित हिस्सों में से एक है। इसके उपबंध के साथ बहुत अन्याय हुआ है। इसमें देश के सभी नागरिकों के लिए एक जैसा कानून बनाने की बात कही गयी है। सरकार से अपेक्षा की गयी है कि वह पंथ, क्षेत्र और भाषा से संबंधित बंटवारा करने वाले आधारों की परवाह किये बगैर सभी के लिए एक जैसा कानून बनाये। ऐसी व्यवस्था बनाये जो मानवीय गरिमा का सम्मान करती हो, उसे सुरक्षा बोध दे और सभ्य समाज के मानकों पर खरी उतरे।

दुर्भाग्यवश अनुच्छेद-44 की इस पवित्र मंशा को आगे बढ़ाने की बजाय उसको हमने अपनी फितरत के मुताबिक एक हौवा बना दिया। उस पर तार्किक बहस करने की बजाय उसे साम्प्रदायिक रूप देकर अछूत बना दिया। सुप्रीम कोर्ट का आग्रह बेकार गया। अदालत के निदेर्शों की हेठी की गयी। यह दस्तूर आज भी कायम है। वैसे तो हमारे देश में अधिकतर मामलों में एक जैसा कानून लागू होता है। जमीन की खरीद-फरोख्त, किरायेदारी और दीगर दीवानी मामलों में आजादी के पहले से ही एक जैसा कानून लागू होता है, लेकिन विवाह, उत्तराधिकार, वसीयत दत्तक ग्रहण जैसे मामलों में आजादी के पहले से ही अलग-अलग संप्रदायों के लिए अलग कानून रहे हैं।

पहले पुरुष एक से अधिक शादियां कर सकता था, वहीं हिंदू विवाह अधिनियम के जरिए उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

संविधान निर्माताओं ने महसूस किया कि विवाह और भरण-पोषण से जुड़े मामलों का संबंध किसी पूजा पद्धति से नहीं है, बल्कि इसका संबंध इंसानियत से है। निस्संतान व्यक्ति यदि किसी बच्चे को गोद लेकर अपनी वंश परंपरा को आगे बढ़ाना चाहता है या उससे उसको सुरक्षा बोध का अहसास होता है, तो उससे किसी पूजा पद्धति की अवमानना कैसे हो सकती है।

यदि किसी कानून से किसी महिला को सामाजिक सुरक्षा मिलती है या पति से अलग होने या पति के नाराज होने के बाद उसे दर-बदर भटकने की बजाय यदि गुजारे-भत्ते की व्यवस्था की जाती है, तो इसमें उसका धर्म कहां से आड़े आता है। महिला-पुरुष के वैवाहिक सम्बन्धों में यदि समानता सुनिश्चित की जाती है तो इससे किसी भी सभ्य समाज के लिए शर्मिंदगी नहीं, अपितु गर्व होना चाहिए।

आजादी के बाद इस दिशा में सकारात्मक पहल की गयी। समानता के सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए पारम्परिक हिन्दू विधि में व्यापक परिवर्तन किये गये।

पहले, पुरुष एक से अधिक शादियां कर सकता था, वहीं हिंदू विवाह अधिनियम के जरिए उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। पति-पत्नी को विवाह विच्छेद करके सम्मानपूर्वक एक-दूसरे से अलग रहने का अधिकार दिया गया। महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा के मद्देनजर उन्हें भरण-पोषण का अधिकार दिया गया तथा पिता की संपत्ति में बेटियों को भी अधिकार देने की परम्परा की शुरूआत हुई। संतान को गोद लेने के मामलों में भी पति के एकाधिकार को तोड़ते हुए महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने की कोशिश की गयी। इनका सकारात्मक पहलू यह रहा कि हिंदू कानून में किये जाने वाले सुधार दूसरे संप्रदायों में पहले से ही थे।

मसलन, मुस्लिम कानून में बेटियों का उत्तराधिकार पहले से ही था। ईसाई कानून में पहले भी पुरुष को एक ही पत्नी रखने का अधिकार था। हिन्दू कानून में किये गये सुधारों में पारंपरिक विधि की जगह मानवाधिकारों और समानता के सिद्धांतों को तरजीह दी गयी, लेकिन वोट बैंक खिसकने की स्वार्थी सोच के कारण दूसरी जगहों पर ऐसा नहीं हो सका और उन्हें बेहतर होने के मौके से लगातार वंचित रखा गया। संविधान का अनुच्छेद-44 और अदालतों के कई निर्देश भी इस सोच पर बेअसर रहे। आधुनिक सोच का लाभ केवल हिंदुओं तक ही सीमित न रहे और वह दूसरे मतावलंबियों को भी हासिल हो इसके लिए अदालतें लगातार कोशिश करती रही हैं। मोहम्मद अहमद खान बनाम शाहबानो (1985) केस में सुप्रीम कोर्ट ने इस पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यह अत्यंत खेद का विषय है कि संविधान के अनुच्छेद-44 में तय की गई राज्य की जिम्मेदारी अब निर्जीव शब्द समूह का संग्रह मात्र बन कर रह गयी है।

सरकारी उपेक्षा को ध्यान में रखते हुए अदालत ने कहा कि मुस्लिम समाज को इस मामले में पहल करने की जरूरत है, ताकि प्रगति की दौड़ में वे दूसरों से पीछे न रहें। हैरानी की बात यह है कि शाहबानो के जिस मुकद्दमे में सुप्रीम कोर्ट ने लोगों से इस दिशा में आगे बढ़ने की पहल का आह्वान किया, उसके दुष्प्रचार ने समान नागरिक कानून की पहल को सबसे मर्मांतक चोट पहुंचायी। परिणाम इसका ठीक उलटा हुआ। इसे मुसलमानों के धार्मिक मामलों में दखलअंदाजी के रूप में प्रचारित किया गया। निहित हितों के संरक्षण हेतु कुछ लोगों ने इसे पूरे कौम की अस्मिता पर खतरा करार दे दिया। कानून बना कर मुस्लिम महिलाओं को गुजारे भत्ते के अधिकार से वंचित करना पड़ा।

बाद के घटनाक्रम बताते हैं कि लोगों ने इस संदेश को बखूबी याद रखा। तार्किक विचारधारा के लोग अपनी बात कहते रहे, सुप्रीम कोर्ट निर्देश जारी करता रहा और सरकार शाहबानो प्रकरण के निहितार्थ के सबक का पालन करती रही।

मारकंडेय काटजू ने अपने बयान में समान नागरिक कानून की वकालत करके संविधान के अनुच्छेद-44 और सुप्रीम कोर्ट के निदेर्शों की परंपरा को आगे बढ़ाने का काम किया है। इसके पहले अन्य विद्वानों ने भी इसकी वकालत की है।

जमशेदपुर की खबरें

टाटा एजुकेशन एक्सीलेंस कार्यक्रम के तहत कार्यशाला का आयोजन, 14 स्कूलों के प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। टाटा एजुकेशन एक्सीलेंस प्रोग्राम (टीईईपी) के तहत ने स्कूलों में शैक्षणिक प्रक्रियाओं के चिन्हित कमियों को संबोधित करने के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया। टाटा मोटर्स मैनेजमेंट ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित कार्यशाला में 14 स्कूलों ने भाग लिया। शिक्षा प्रक्रिया की परिपक्वता व विश्लेषण के लिए इन स्कूलों का बेसिक मूल्यांकन व सरल मूल्यांकन विधियों पर किया गया। टीईईपी के तहत मूल्यांकन शिक्षा प्रक्रिया का गुणवत्ता जांच के लिए प्रारंभिक मूल्यांकन विधियां पर चर्चा की गई। मौके पर माउंट लिटरा जी स्कूल के क्रिएटिव डायरेक्टर सुनीता सिन्हा ने ताकत, कमजोरी, अवसर, खतरा के विश्लेषण पर कार्यशाला में जानकारी दी। उन्होंने कहा कार्यशाला का उद्देश्य वर्तमान शिक्षा प्रक्रिया में कमियों का पता लगाना है। सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए स्कूली बच्चों और स्कूल दोनों के लिए केंद्रित और प्रक्रिया संचालित तरीकों के साथ उन्हें दूर करना है। कार्यशाला को वट विश्लेषण और पाठ योजना के पहलुओं का विस्तार से कवर करने के लिए डिजाइन किया गया। इस मूल्यांकन के परिणाम के रूप में कई ताकत और अवसरों की पहचान की गई। कार्यशाला विशेष रूप से कमियों को दूर करने और स्कूलों का समर्थन करने के लिए आयोजित की गई। कोरोना काल के लिए कार्यशाला का आयोजन 3 साल के अंतराल के बाद किया गया। कार्यक्रम में 14 विद्यालयों के 5 प्राचार्यों सहित कुल 27 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम स्कूलों को आगामी मूल्यांकन चक्र के लिए अपनी मूल्यांकन तैयारियों को बढ़ाने और विस्तारित करने में मदद करेगा। मौके पर विद्यासागर उच्च विद्यालय, बमनगोरा की प्रिंसिपल प्रतिभा वर्मा के द्वारा सुनीता सिन्हा को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया। कार्यक्रम का आयोजन निजी, सरकारी, अर्ध-सरकारी, शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण स्कूलों के लिए चलाया जा रहा है।

भाजपा ने जमशेदपुर में चलाया जनसंपर्क अभियान

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। केंद्र सरकार के नौ वर्ष पूरे होने पर भारतीय जनता पार्टी जमशेदपुर सहित पूरे प्रदेश में विशेष जनसंपर्क अभियान चला रही है। गुरुवार को जमशेदपुर पुर्वी विधानसभा के बारीडीह विद्यापति नगर में भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष सह पूर्व मुख्यमंत्री रघुवर दास ने भाजपा कार्यकताओं के संग क्षेत्र के नागरिकों व दुकानदारों को केंद्र की मोदी सरकार के नौ साल की जनहितैषी योजनाओं से संबंधित पत्र का वितरण किया। मंडल अध्यक्ष संतोष ठाकुर के नेतृत्व में कार्यकताओं ने 'संपर्क से समर्थन' अभियान के तहत लोगों के घरों व दुकानों पर जाकर प्रधानमंत्री के 9 साल की प्रमुख उपलब्धियों को उनके समक्ष रखा। इस दौरान मोदी सरकार के टोल फ्री नंबर के माध्यम से समर्थन देने का आग्रह किया। अभियान के दौरान क्षेत्र के लोगों में उत्साह देखा गया। भाजपा

कार्यकताओं ने वर्तमान सरकार की वादाखिलाफी और भ्रष्टाचार पर आमजनों को जागरूक किया। मोदी सरकार ने नौ सालों में देश के सभी क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास किया है। सरकार ने न केवल वंचित, शोषित लोगों को मुख्य धारा से जोड़ा बल्कि उनका सशक्तिकरण भी किया।आज दुनिया के अर्थशास्त्री, विश्लेषक सभी एक स्वर में कह रहे 21वीं सदी भारत की सदी है। पूरी दुनिया भारत को लेकर एक नए विश्वास से भरी है। मौके पर संतोष ठाकुर, संजीव सिंह, संजय सिंह, बिनोद सिंह, कुमार अभिषेक, अरुण कुमार, पंकज मिश्रा, ओम पोद्दार, गंगा प्रसाद, रंजीत सिंह, विनय कुमार, संजय शर्मा, राकेश सिंह, गणेश पाल, रंजीत कुमार समेत अन्य मौजूद रहे। वही सांसद विद्युत महतो व जिलाध्यक्ष गुंजन यादव ने जनसंपर्क अभियान के तहत जुगसलाई और गोविंदपुर में कार्यकर्ताओ संग घर-घर जाकर लोगों से मुलाकात की। भाजपा कार्यकताओं ने गोविंदपुर मुख्य मार्ग, हाट बाजार व कॉलोनी में जनसम्पर्क अभियान चलाकर मोदी सरकार की प्रमुख उपलब्धियों से आमजनों को अवगत कराया। मौके पर पप्पू सिंह, पवन सिंह, कमलेश सिंह, आशीष राय, बिमल बैठा, शिवजी प्रसाद, विमलकांत झा, सतीश सिंह, इंदरजीत सिंह, राजीव चौहान, विकास सिंह, विपीन सिंह, सुबोध शाही, विमलकांत झा, अमित पांडेय, अरविंद सिंह, आशुतोष सिंह, रिशु कुमार, मिथलेश, नीरज गुप्ता, राहुल द्विवेदी, कृष्णा सिंह, शंकर, सुजय पांडे, गौरी कुमारी, स्नेहलता, शिव शांडिल, विजय, अरुण झा, प्रमोद सिंह, शम्भू सिंह समेत अन्य मौजूद रहे।

ट्रेलर और ट्रक की हुई टक्कर

चांडिल(आजाद सिपाही संवाददाता)। चांडिल थाना अंतर्गत कांदरबेड़ा चौक पर सड़क दुर्घटना में ट्रेलर चालक वाहन के अंदर ही फंसे रहे। जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस व स्थानीय लोगों के सहयोग से हाईड्रा की मदद से कड़ी मशक्कत के बाद चालक को बाहर निकाला गया। पुलिस ने घायल चालक को इलाज के लिए अस्पताल पहुचाया। बताया जा रहा है सड़क दुर्घटना गुरुवार की सुबह की है। चांडिल की ओर से जमशेदपुर आम लेकर जा रही ट्रक व चांडिल की ओर जा रही खाली ट्रेलर के बीच जोरदार टक्कर हो गई। ट्रेलर का चालक वाहन के अंदर ही फंसे रहे। इसके बाद हाइड्रा की मदद से ट्रेलर के अंदर फंसे चालक को बाहर निकाला गया। चांडिल थाना प्रभारी ने बताया ट्रेलर चालक के पैर में चोट लगी है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जलापूर्ति योजना पूरी होने तक टैक्स वसूली बंद करे नगर विकास विभाग : ओमप्रकाश

आजाद सिपाही संवाददाता

आदित्यपुर। जन कल्याण मोर्चा और आदित्यपुर अधिवक्ता संघ ने जलापूर्ति योजना और सीवरेज योजना को लेकर अब आरपार की लड़ाई लड़ने की तैयारी में जुट गई है। दूसरी बार मिले एक्सटेंशन की अवधि 30 जून को समाप्त होगी। लेकिन अब तक दोनों योजना का 50 फीसदी भी काम पूरा नहीं हुआ। मोर्चा ने इसे जनता के लिए दुर्भाग्यपूर्ण बताया। गुरुवार को जानकारी देते हुए मोर्चा के सदस्यों ने बताया इसके लिए नगर विकास विभाग, वन विभाग, रेलवे, पथ निर्माण विभाग और आवास बोर्ड पूरी तरह से जिम्मेवार है। जिला बार एसोसिएशन के उपाध्यक्ष सह जन कल्याण मोर्चा के अध्यक्ष ओमप्रकाश ने बताया बीते 2019 के 23 फरवरी को पेयजल योजना व 23 नवंबर 2017 में सीवरेज

योजना का शिलान्यास किया गया था। लेकिन अब तक किसी भी विभाग के बीच आपस में तालमेल नहीं बनी। उन्होंने कहा इस प्रकार के कार्य से वे लोग जनहित याचिका दायर करेंगे। दोनों संगठनों ने मांग किया जब तक योजनाएं पूरी नहीं होती तब तक झारखंड सरकार आदित्यपुर नगर निगम क्षेत्र के सभी नागरिकों से टैक्स लेना बंद करे। उन्होंने कहा सीवरेज योजना 255 करोड़ की है और जलापूर्ति योजना 395 करोड़ की। दोनो योजनाएं आदित्यपुर के करीब 60 हजार परिवारों के लिए बना था। लेकिन यहां के लोग कीचड़ भरी सड़कों पर चलने को विवश हैं। पेयजल के अभाव में 600 रुपये में 1000 लीटर पानी खरीदकर पीने को विवश हैं। जबकि नगर विकास विभाग होल्डिंग टैक्स में बेतहाशा वृद्धि कर आम नागरिकों के जेबें खाली करने में पर अड़ी है। उन्होंने कहा मंत्री के समीक्षा और आदेश के बावजूद कार्य अब तक अधूरे हैं।

अंग्रेजों और संथाल के बीच हुए संघर्ष की मार्टिलो टावर दिलाती याद

आजाद सिपाही संवाददाता

पाकुड़। सिदों कांन्हू पार्क में स्थित ऐतिहासिक मार्टिलो टावर की याद हूल क्रांति की याद ताजा कर देता है । मार्टिलो टावर अंग्रेजों और संथाल के बीच हूई संघर्ष का अवशेष हैं 1856 से अंग्रेज हुकूमत के सरमार्रटी के द्वारा रातोरात आदिवासी संथाल के हमले से बचने के लिए यहां टावर का निर्माण किया गया था । जिससे संथाल हमले से बचने का मौका मिला ।कहा जाता है कि ब्रिटिश सेना संथाल विद्रोह को रोकने के लिए टावर के अंदर से फायरिंग की थी । जिसमे बिट्रिश सेना ने हजारों संथाल लड़ाकू को हत्या कर दी थी । लेकिन संथाल के योद्दा अपनी कालाकारी दिखाते हुए वार

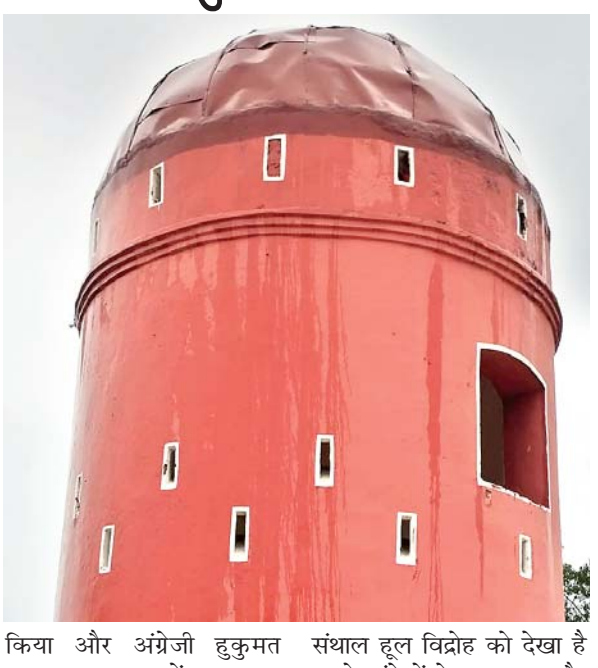

किया और अंग्रेजी हुकुमत भगाया । वास्तव में यह टावर संथाल हूल विद्रोह को देखा है । जो अंग्रेजों के तानासाह और जमींदारों के खिलाफ हूल क्रांति की याद इस दिन को ताजा कर देती । हूल विद्रोह का वास्तविक अर्थ क्रांति बगावत है । इस विद्रोह को संथाल परगना का प्रथम जन क्रांति भी कहा जाता है। काल मार्क्स ने संथाल विद्रोह को भारत की प्रथम जन क्रांति की संज्ञा दी है। इस विद्रोह को सिंदो कांन्हू चांद भैरो और फूरो झानों ने शुरूआत की थी । और ये सभी आपस में भाई बहन थे ।1855 को भोगनाडीह गांव में लगभग 400 गांव के 6000 से अधिक आदिवासी जमा होकर इस सभा किया और कहा कि अपना देश अपना राज्य का नारा दिया और यही से हूल क्रांति का आगाज किया था । इसी दिन को हूल दिवस के रूप में मनाया जाता है।

सोनारी में शांतिपूर्ण तरीके से मनी बकरीद

जमशेदपुर (आजाद सिपाही संवाददाता)। त्याग,बलिदान,समर्पण,आपसी भाइचारे व इंसानियत का पैगाम देने वाले बकरीद शांतिपूर्ण तरीके से मनाया गया। गुरुवार को सोनारी के खुटाडी राम मंदिर के समीप और परदेशीपाड़ा विरमंच अखाड़ा के समीप सोनारी थाना व शांति समिती के सदस्य ने शांति का माहौल बनाये रखे। ताकि कोई भी परेशानी या तकलीफ आमजनों तक न पहुंच सके।

गढ़वा जिले में आपसी भाईचारा और सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में मनाया गया बकरीद का त्योहार

अकीदतमंदों ने मांगी अमन-चैन की दुआ

नमाज अदा करने के बाद अकीदतमंदों ने खुदा की राह में बकरा की कुर्बानी पेश की

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। जिला में ईद- उल- अजहा का त्योहार अकीदत व मसर्रत के साथ मनाया गया। इस मौके पर मुस्लिम समुदाय के लोगों ने स्थानीय इदगाहों, मस्जिदों व मदरसों में दो रिकअत वाजिब नमाज- ए- ईद - उल- फितर अदा की। नमाज अदायगी को लेकर इन स्थलों पर सुबह से ही नमाजियों की भीड़ जमा होने लगी थी। नमाज अदा करने के बाद लोग एक-दूसरे से गले मिलकर ईद- उल- फितर की बधाई दी। वहीं घर पहुंच कर अकीदतमंदों ने खुदा की राह बकरा की कुबार्नी पेश की।

जिला मुख्यालय स्थित जामा मस्जिद रांकी मोहल्ला में जामा मस्जिद के पेश ईमाम हाफिज अब्दुस्समद ने नमाज-ए-ईद-उल-अजहा अदा कराई। जबकि टंडवा मस्जिद में मौलाना शाहजाद आलम मिसवाही, उंचरी मस्जिद में मुफ़्ती मो यूनुस, इंदिरा गांधी रोड स्थित छोटी मस्जिद में हाफिज नेयाज, अली नगर ऊंचरी मस्जिद में मौलाना रफीउद्दीन, शरीफ नगर के मस्जिद में मौलाना शेर मोहम्मद, कल्याणपुर मस्जिद में मौलाना यूसुफ एवं मदरसा तबलिगुल इस्लाम के मस्जिद में मौलाना लियाकत हुसैन ने ईद- उल-अजहा की नमाज अदा कराई।

गढ़वा शहर एवं श्री बंधीधरनगर अनुमंडल में बकरीद की नमाज अदा करते इस्लाम धर्मावलंबी

केतार में नमाज के बाद एक-दूसरे को बधाी देते लोग तथा मेराल प्रखंड में बकरीद की नमाज अदा करते अकीदतमंद

श्री बंशीधर नगर

त्याग एवं बलिदान का त्योहार ईद उल अजहा (बकरीद) का त्योहार अनुमंडल मुख्यालय सहित आसपास के क्षेत्रो में आपसी भाईचारे के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में शांतिपूर्ण तरीके से मनाया गया। ईद उल अजहा का नमाज गोसाईबाग स्थित ईदगाह में, बरडीहा जामा मस्जिद, कधवन कोइन्दी ईदगाह में, कुशदण्ड ईदगाह, नरही ईदगाह सहित अन्य ईदगाह एवं मस्जिदों में मुस्लिम समुदाय के लोगों ने नमाज अदा की। इस दौरान मुल्क में आपसी भाईचारा एवं अमन चैन की दुआ मांगी गई। साथ ही लोगों ने एक दूसरे को गले मिलकर ईद उल अजहा का मुबारकबाद भी दिया। इसके बाद लोगों ने कुर्बानी की रस्म अदा की। गोसाईबाग स्थित ईदगाह में मौलाना अब्दुल कादिर साहब ने नमाज अदा करायी। मौके पर सदर तोहिद खान, सलाहुद्दीन खान, आमीन खान, लालबाबू खान, हाजी नेजाम खान, तस्लीम खान, शमीम खान, शोएब आलम, तस्लीम खान, पप्पू खान, हैदर खान, आजाद खान, फुलटून खान, समसुल सिद्दीकी, महमूद आलम सीनियर, सद्दाम आलम, बाबू, सुहैल, शाहबाज, सलमान, अजहरुल सहित बड़ी संख्या में लोगों ने ईद उल अजहा की नमाज अदा की। इधर बरडीहा मस्जिद में ईद उल अजहा का नमाज हाफिज मनउवर अंसारी ने अदा करायी। इस अवसर पर सदर मुश्ताक अहमद शेख,डॉ ताहीर हुसैन, राहत हुसैन, उस्मान अंसारी, सलीम अंसारी, शमीम अख्तर, वकील अहमद, मकबूल अहमद, फिरोज आलम, राकिब अनवर, डॉ रिजवान अहमद, मसउवर अंसारी, अब्दुल हफीज, अमीर हसन अंसारी, अजीज, शाहिद, भानु, मकसूद, रागिब, शाहिद, कासिफ, रासिब,खालिद गुलाम, समसिर, असलम, अहमद सहित बड़ी संख्या में लोगों ने नमाज अदा की। ईद उल अजहा का त्योहार शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न कराने को लेकर एसडीपीओ प्रमोद केशरी, थाना प्रभारी नीतीश कुमार सिंह दल बल के साथ भ्रमण करते नजर आये।

केतार

केतार प्रखंड क्षेत्र ईद-उल अजहा का पर्व अकीदत से मनाया गया। मुस्लिम समुदाय के लोग बेलावार, नावाडीह व केतार ईदगाह के साथ मस्जिदों में बकरीद की नमाज सुबह 8 बजे के करीब अदा की। वहीं प्रखंड क्षेत्र के सभी इदगाहों पर नमाज उत्साह पूर्वक अदा कर अमन चैन की दुआएं मांगी गई एवं हजारों की संख्या में लोगों ने गले मिलकर एक दूसरे को मुबारकबाद पेश किया। वहीं मस्जिद के इमाम मौलाना नसीम अहमद द्वारा सभी कौम के भाइयों को माली कुर्बानी देने व मोहब्बत और अमन चैन के साथ इस मुल्क में जिंदगी गुजारने के लिए अल्लाह से सामूहिक दुआएं की गई। इस दौरान अंजुमन कमेटी ने आए हुए अतिथियों को मदरसा में ही शीरनी खाने को लेकर विशेष इंतजाम किया गया था। इस मौके पर केतार थाना प्रभारी संतोष कुमार रवि, पत्रकार सह सामाजिक कार्यकर्ता इम्तेयाज आलम, अंजुमन सदर शमीम अंसारी, अल्ताफ अंसारी, हकीमुदिन अंसारी, असीम अंसारी, मेराजुदीन अंसारी, जमायत अंसारी, अजीम अंसारी व अन्य शामिल थे।

मेराल

प्रखंड क्षेत्र में ईद-उल-अजहा का त्योहार शांति और सौहार्दपूर्ण वातावरण में मनाया गया। खराब मौसम के बावजूद मुस्लिम समुदाय के लोगों में उत्साह देखा गया। सुबह से ही ईदगाहों तथा मस्जिदों में लोग विशेष नमाज के लिए पहुंचने लगे थे, जहां सामूहिक रूप से नमाज अदा कर अमन चैन व तरक्की की दुआ मांगी गई। नमाज के बाद लोगों ने एक-दूसरे को गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। बकरीद का नमाज शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न कराने को लेकर थाना इंचार्ज अजीत कुमार, संजय कुमार कुशवाहा, सुरजीत चौधरी के नेतृत्व में पुलिस बल के जवानों की तैनाती की गयी थी। जिसकी मॉनिटरिंग बीडीओ प्रवेश कुमार साव व सीओ निकिता बाला कर रहे थे।

मवेशी कारोबारी से लूटपाट करने वाले गिरोह का एक सदस्य गिरफ्तार

दो देसी पिस्टल, एक मैगजीन, एक फरसा और 30 हजार रुपये बरामद

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। सदर थाना क्षेत्र के पिपरा पंचायत अंतर्गत फोरलेन टोल प्लाजा के पास मवेशी व्यापारी और चालक के साथ लूटपाट करने वाले गिरोह के एक सदस्य को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार हंसकेर निवासी रवि तिवारी के पास से दो देसी पिस्टल, एक मैगजीन, एक फरसा और 30 हजार रुपये बरामद किया गया है। उक्त जानकारी एसडीपीओ अवध कुमार यादव ने सदर थाना में प्रेस वार्ता कर दी। उन्होंने बताया कि नावाडीह बाजार निवासी अजमेर आलम गढ़वा थाने में आवेदन देकर फोरलेन टोल प्लाजा के समीप लूटपाट मारपीट करने की प्राथमिकी दर्ज करायी थी। प्राथमिकी के आलोक में एसपी के निर्देश पर त्वरित कार्रवाई करते हुए एक टीम गठित की गयी जिसमें गढ़वा, मेराल थाना, चीनिया थाना और डंडई थाना को भी शामिल किया गया। गढ़वा की कोरवाडीह में चेकिंग के दौरान एक ब्लैक स्कॉर्पियो से एक युवक को पकड़ा गया। पूछताछ के दौरान युवक ने अपना नाम रवि तिवारी बताया जब उसकी तलाशी ली गई उसके पास से दो देसी पिस्तौल एक मैगजीन पांच जिंदा कारतूस 30,000 नगद, एक फरसा बरामद किया गया। एसडीपीओ ने बताया कि गिरफ्तार रवि से पुलिस सख्ती से पूछताछ की तो उसने बताया कि लोटो निवासी अतुल धर दुबे के कहने पर चार साथियों के साथ टोल प्लाजा के पास दो पिकअप पर लादे मवेशी को रोका और मवेशी कारोबारी और चालक से पैसे की मांग की। उस दौरान मवेशी कारोबारी ने अतुल धर दुबे के खाते में 55,000 और सौरभ सिंह के खाते में 25,000 रु. डाले और 20,000 नगद दिया था। उसने बताया कि रात के करीब 3:00 बजे अतुल धर दुबे को किसी ने सूचना दी थी कि दो पिकअप पर 16 मवेशी लदे हुए हैं जो फोरलेन से जा रहे हैं। अतुल ने उसकी सूचना हम लोगों को दी। उसके बाद अतुल धर दुबे, रवि तिवारी, अनजन धर दुबे, सौरव कुमार सिंह सहित अन्य आरोपियों ने वहां पहुंचकर चालक के साथ मारपीट की एवं पिस्टल के दम पर पैसे की लूटपाट की। एसडीपीओ ने बताया कि पुलिस चेकिंग के दौरान जब स्कॉर्पियो पकड़ा गया तो उसमें रवि के साथ अतुल धर दुबे एवं अंजन धर दुबे शामिल थे। जो पुलिस को देख कर फरार हो गए। एसडीपीओ ने बताया कि घटना में शामिल अन्य अपराधियों की भी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी की जा रही है। बहुत जल्द उक्त लोगों की भी गिरफ्तारी कर ली जाएगी। वहीं रवि के निशानदेही पर रवि के पास से बरामद पिस्टल की खरीद बिक्री के भी पुलिस छानबीन कर रही है। बहुत जल्द उक्त करोबारी को गिरफ्तार कर लिया जाएगा। प्रेस वार्ता में थाना प्रभारी केके साहू, पुलिस अवर निरीक्षक प्रवीण कुमार, अशोक कुजुर, हित नारायण महतो, दिनेश मरांडी सहित अन्य लोग शामिल थे।

माता-पिता की सेवा से होते हैं सभी मनोरथ पूर्ण : जीयर स्वामी

बंशीधर नगर (आजाद सिपाही)। माता-पिता की सेवा मानव का धर्म है। अपनी सेवा से माता-पिता को संतुष्ट करने वाला 33 कोटि देवताओं को भी संतुष्ट कर लेता है। माता-पिता की सेवा नहीं करने वाले साधक से देवता भी प्रसन्न नहीं होते। माता-पिता देव के समान होते हैं। श्री जीयर स्वामी ने श्रीमद् भागवत कथा के दरम्यान कहा कि भगवान कपिल अपने पिता कर्दम ऋषि के जंगल में जाने के बाद माता देवहूति की सेवा कर रहे थे। स्वामी जी ने कहा कि माता-पिता की सेवा सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने कहा कि घर में माता-पिता रूपी तीर्थ की उपेक्षा कर तीर्थाटन करना मानव के लिये कल्याणकारी नहीं है। शास्त्रों में माता-पिता का स्थान सर्वोच्च है। माता जन्म देने के साथ ही प्रथम गुरु का कार्य करती हैं। पिता पालनकर्ता होता है। इनसे पोषित होने के बाद ही हम दुनिया को जानते हैं। स्वामी जी ने कपिल जी और माता देवहूति संवाद की चर्चा करते हुए कहा कि इन्द्रियों के भटकाव को रोकना चाहिए। अच्छे आचरण, अच्छे विचार और अच्छे कार्य को आत्मसात करना चाहिए। कर्म और आचरण की व्याख्या करते हुए बोले कि दूर से गंगाजल लाकर अच्छा कार्य किया, लेकिन उसमें एक बूंद शराब डाल दिया तो कर्म और व्यवहार दोनों निरर्थक हो गये। आचरण विहीन व्यक्ति का कार्य वही है। मनुष्य के जीवन में आचरण उत्तम होना चाहिए। उतम आचरण से हीन व्यक्ति को वेद भी शुद्ध नहीं कर सकता। काम, क्रोध और लोभ को जीवन की साधना में बाधक बताते हुए कहा कि ये सुन्दर भोजन में कंकड़ जैसे बाधक होते हैं। ये मानव जीवन में घुन के समान हैं, जो जीवन का विनाश कर देते हैं। स्वहित में इनका त्याग करना चाहिये। यदि लोभ और क्रोध, व्यक्ति समाज और राष्ट्रहित में है तो वह मान्य है। धर्मपत्नी की चर्चा करते हुए कहा कि पत्नी को चंद्रमुखी होनी चाहिए। चंद्रमुखी से तात्पर्य सुन्दरता से नहीं, बल्कि ताप से तपित और श्रम से थके मनुष्य को घर में आने पर शांति और शीतलता प्रदान करने से है। यही गृहस्थ धर्म की मर्यादा है। पति को भगवान का स्वरूप मानना चाहिए।

लिओ क्लब ऑफ गढ़वा ज्ञान गंगा के नये सत्र 2023-24 का चुनाव संपन्न

अध्यक्ष तेजस अग्रवाल और उपाध्यक्ष बने अतुल दुबे

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। लिओ क्लब ऑफ गढ़वा ज्ञान गंगा के नए सत्र 2023/24 का हुआ चुनाव जो लायंस क्लब ऑफ गढ़वा ग्रीन की देखरेख में संपन्न हुआ।

मौके पर लायंस ग्रीन के पूर्व अध्यक्ष रवींद्र जायसवाल, संतोष अग्रवाल, लायंस ग्रीन के कोषाध्यक्ष नीरज कुमार, सचिव हर्ष अग्रवाल, लिओ एडवाइजर अमित कुमार, पूर्व सचिव विनय कशयप और लिओ अनुप कुमार ठाकुर के द्वारा सर्वसम्मति से

लिओ तेजस अग्रवाल को अध्यक्ष बनाया गया, उपाध्यक्ष अतुल दुबे, सचिव मानष अग्रवाल, उपसचिव हर्ष कश्यप, कोषाध्यक्ष अंकुर दुबे को बनाया गया तथा अनुप कुमार ठाकुर को पीआरओ, टेमर अनमोल अग्रवाल, बोर्ड ऑफ डायरेक्टर गौरव केशरी, श्रीकांत केशरी, जाहिर अंसारी, अमानुदीन अंसारी, प्रदिप्ता आर्या, पियुस सोनी, सार्थक अग्रवाल सदस्य के रूप में शामिल हैं।

इस चुनाव में महत्वपूर्ण योगदान लायंस क्लब ऑफ गढ़वा ग्रीन के सभी सदस्यों का रहा। उनकी ओर से सभी लिओ सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी गयी।

पूर्व लिओ एडवाइजर अमित कुमार ने बताया कि लिओ क्लब ऑफ गढ़वा ज्ञान गंगा ग्रीन का एक अंग है, जो सामाजिक कार्यों के बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेता है।

रविन्द्र जयसवाल ने बताया कि लिओ ज्ञान गंगा अपने सामाजिक कार्यों में बेहतर प्रदर्शन करता है जिससे इनका अपने जिला ही नहीं मल्टिपल तक भी अलग पहचान है।

हर्ष अग्रवाल ने बताया कि आज के बच्चे में इस प्रकार के सामाजिक कार्यों में हिस्सा लेना बहुत ही सराहनीय काम है, जो लगातार छह वर्ष से करते आ रहे हैं और आगे भी निरन्तर जारी रहेगा।

भंडरिया प्रखंड सह अंचल कार्यालय में जनता अधिकार दिवस का आयोजन

भंडारिया (आजाद सिपाही)। उपायुक्त शेखर जमुआर के निर्देश पर भंडरिया प्रखंड सह अंचल कार्यालय में सीओ मदन माली की अध्यक्षता में जनता अधिकार दिवस का आयोजन किया गया। इस आयोजन में जमीन से संबंधित मृतक के परिवार को चल अचल संपत्ति एवं पीडीएस से संबंधित कुल 15 आवेदन प्राप्त हुए इन मैं से 7 आवेदन का ऑन द स्पॉट निष्पादन किया गया शेष आवेदन पर जल्द ही सुनवाई कर दिया जाएगा इसके साथ ही बरगढ़ प्रखंड के 7 परिवार को वन अधिकार अधिनियम के तहत वन पट्टा का वितरण किया गया इस मौके पर प्रखंड प्रमुख रुकमणी कुमारी उप प्रमुख शारदा देवी कर्मी देवी संदीप कुमार गुप्ता अन्य लोग उपस्थित थे।

पौधरोपण के लिए पर्यावरण परिवार ने किया स्थल का निरीक्षण

गढ़वा (आजाद सिपाही)। फलदार, छायादार और ईमारती सहित विभिन्न प्रजातियों के पौधरोपण के लिए पर्यावरण परिवार ने स्थल निरीक्षण किया। इस दौरान शहर के कचहरी रोड स्थित नवादा क्षेत्र के श्री जानकी बाग में 250 पौधा लगाने का निर्णय लिया गया है।

इस संबंध में जानकारी देते हुए पर्यावरण परिवार के अध्यक्ष डॉ. पतंजलि केसरी ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण के लिए श्री जानकी बाग में विभिन्न प्रकार के 250 पौधे लगाने का निर्णय लिया गया है। पौधरोपण से प्रदूषण नियंत्रण की दिशा में साकारात्मक पहल

तो होगा ही, साथ ही साथ सुबह और शाम में बाग घुमनेवालों को भी इसका लाभ मिलेगा। कुछ ही समय में पौधे पेड़ बन जाएंगे और लोगों को छाया के साथ फल भी मिलेगा। इसके अलावा बेशकीमती लकड़िया भी प्राप्त होंगी। उन्होंने बताया कि भरठिया गांव में पौधरोपण के लिए 300 गड्ढे बनाये जा चुके हैं। 30 जून को उसमें पौधरोपण किया जाएगा। सचिव नितिन तिवारी ने कहा कि पर्यावरण और मानव समाज के बीच अन्योनाश्रय संबंध है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य अपने जन्मदिन, शादी सालगिरह सहित अन्य अवसरों पर पौधारोपण कर अपने समय को यादगार बनायें।

मौके पर नीरज श्रीधर स्वर्गीय, अमित कुमार, विशेश्वर चंद्रवंशी, सुदामा बिंद, सुनील कुमार बिंद, आनंद कुमार, मोदी चंद्र बिंद, अरविंद कुमार, लखन बिंद,संतोष कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

बोलेरो वाहन के धक्के से महिला की मौत

धुरकी (आजाद सिपाही)। थाना क्षेत्र के रकशी गांव स्थित अकेलवा टोला निवासी एक महिला की मौत बोलेरो वाहन के धक्के से हो गई। बताया जाता है कि इलाज के दौरान महिला की मौत गढवा में हुई। मिली जानकारी के अनुसार रकशी गांव के अकेलवा टोला निवासी अमरनाथ यादव की पत्नी फुलवंनती देवी (35) अपने पुत्र के साथ मोटरसाइकिल से जा रही थी उक्त महिला स्वतः मोटरसाइकिल से गिर गयी थी। पीछे से आ रहा बोलरो वाहन उक्त महिला पर चढ़ गया। आनन फानन में इलाज के लिए उसे गढ़वा ले जाया गया, जहां महिला की मृत्यु हो गयी। बोलरो वाहन रकशी के कृष्णा बेदिया का बताया जाता है। इस संबंध में पूछे जाने पर पर थाना प्रभारी सदानन्द कुमार ने कहा कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। दोषियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज की जायेगी।

बैठक : रमकंडा प्रखंड की चेटे पंचायत से 1 जुलाई को होगा जल संरक्षण अभियान का शुभारंभ

650 एकड़ भूमि पर किया जायेगा पौधरोपण

मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर होंगे कार्यक्रम के मुख्य अतिथि

उपायुक्त ने पदाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर दिए आवश्यक दिशा निर्देश

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। जिला में भूगर्भ जल स्तर में लगातार कमी होते जा रहा है। जलस्तर कम हो जाने के कारण जिले को पेयजल की भीषण समस्या से गुजरना पड़ा है। इस समस्या का एक प्रमुख कारण विगत वर्षों में कम बारिश होना तथा दूसरा कारण बारिश के जल का संरक्षण नहीं हो पाना है। जिले को जल संकट की समस्या के समाधान हेतु दिनांक 01 जुलाई 2023 (शनिवार) को जल संरक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ रमकंडा प्रखंड के चेटे पंचायत परिसर में पूर्वाह्न 10 बजे से किया जाएगा। मुख्य अतिथि के रूप में मिथिलेश कुमार ठाकुर, मंत्री, पेयजल एवं स्वच्छता, विभाग, झारखंड होंगे। इस कार्यक्रम के दौरान सम्पूर्ण जिला में जल संग्रहण की योजना यथा-सॉकपीट, वर्मी कम्पोस्ट, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, पंचायत भवन में पौधरोपण आदि के साथ-साथ बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत वृक्षारोपण की योजना वृहत पैमाने पर प्रारंभ किया जाएगा। साथ ही नई योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की जाएगी।

इस संबन्ध में उपायुक्त शेखर जमुआर द्वारा जिला एवं प्रखंड स्तर के पदाधिकारियों के साथ वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। उन्होंने बताया कि गढ़वा जिला अंतर्गत सभी प्रखंडों में दिनांक 01 जुलाई को नई योजना प्रारंभ करने हेतु बिरसा हरित ग्राम योजना, रेन वाटर हार्वेस्टिंग, वर्मी कंपोस्ट, सोखा गड्ढा एवं पंचायत सचिवालय में वृक्षारोपण करने आदि की स्वीकृति प्रदान की जाएगी। इसके लिए गढ़वा जिला अंतर्गत कुल 189 पंचायतों हेतु 3581 योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की जाएगी। 01 जुलाई को 650 एकड़ भूमि पर पौधरोपण किया जायेगा, इसके अतिरिक्त जल संचयन की विभिन्न योजना के तहत लगभग 2500 योजनाओं की शुरुआत के साथ-साथ कुल 142 पंचायत भवन परिसर में पौधरोपण कार्य किया जाना है। बताया गया कि जल संरक्षण हेतु सभी आंगनबाड़ी केंद्र, सभी पीएचसी, सभी विद्यालय में भी पौधरोपण करने हेतु संबंधित विभाग के पदाधिकारी को निर्देश दिया गया है। उपायुक्त द्वारा आम लोगों से अपील की गई है कि सरकारी परिसर में लगाये गये पौधे को बचाने में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की जाये ताकि भविष्य में जल संकट का समाधान हो सके।

सगमा के युवक की आंध्रप्रदेश में ट्रेन से कट कर मौत

सगमा (आजाद सिपाही)। धुरकी थाना क्षेत्र के सगमा प्रखंड के सोनडीहा गांव निवासी मजदूर विनीत राम की मृत्यु ट्रेन से कटकर आंध्रप्रदेश के विजयवाड़ा में हो गयी। इसकी सूचना के बाद परिजनों का रोरोकर बुरा हाल हो गया है। परिजनों से प्राप्त जानकारी के अनुसार सोनडीहा गांव निवासी मजदूर विनीत राम पिता देवकुमार राम बीते 28 जून को बीरबल गांव निवासी लालमुनि राम के साथ कन्याकुमारी मजदूरी के लिए घर से निकला था, मगर घर से निकलने के तीसरे दिन मृत्यु की खबर सुनकर पूरे परिवार में शोक की लहर देखी जा रही है। परिजनों ने उपायुक्त गढ़वा से किसी भी तरह से शव को सोनडीहा मंगवाने की मांग की है।

सर्पदंश से युवक की मौत, परिजनों ने सीओ से की मुआवजा की मांग

रंका (आजाद सिपाही)। रंका प्रखंड अंतर्गत बाहाहारा पंचायत के ग्राम गासेदाग निवासी स्व. गिरधारी भुईयां के पुत्र विजय भुईयां उम्र लगभग 25 वर्ष को बीती रात्रि चार बजे भोर में करैत सांप ने डंस लिया। जिससे उसकी हालत खराब हो गयी। सर्पदंश से पीड़ित को परिजन झाड़-फूंक कराने लगे। हालत बिगड़ते देख परिजन रंका रेफरल अस्पताल छह घंटे विलम्ब से लेकर पहुंचे। सूचना मिलते के साथ ही चिकित्सक इलाज करने में जुट गए। उपचार करने के दौरान मरीज ने दम तोड़ दिया। चिकित्सकों ने परिजनों पर अस्पताल देर से लाने का आरोप लगाया। परिवार जनों ने रंका अंचलाधिकारी से मुआवजा देने की मांग की। जिसमें अंचलाधिकारी ने कहा कि थाना में प्राथमिकी दर्ज कराकर मृतक का पोस्टमार्टम रिपोर्ट सरकार को भेजा जाएगा, तभी सरकारी मुआवजा मिल सकता है। मृतक के पोस्टमार्टम हेतु प्राईवेट गाड़ी से गढ़वा अंत्यपरीक्षण हेतु भेजने के लिए झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री सह गढ़वा विधायक मिथिलेश कुमार ठाकुर के द्वारा दो हजार रुपए तत्काल सहयोग राशि परिजनों को प्रदान की गयी और आगे भी सहयोग करने का आश्वासन दिया गया। इस अवसर पर झामुमो रंका युवा प्रखंड अध्यक्ष दीपक कुमार सोनी, सोनदाग पंचायत अध्यक्ष संतोष ठाकुर सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

लोहरदगा-लातेहार में मनी बकरीद

मस्जिदों-ईदगाहों में रही रौनक

आजाद सिपाही संवाददाता

लातेहार। जिले में ईद उल अजहा (बकरीद) का पर्व जिले से लेकर ग्रामीण इलाकों में धूमधाम से मनाया गया। बकरीद के इस महापर्व के दौरान शहर और ग्रामीण इलाकों के मस्जिद और ईदगाह में। काजी और मौलाना साहब के द्वारा ईद उल अजहा की नमाज अदा करायी गयी नमाज के दौरान मुस्लिम समुदायों ने अपने क्षेत्र में अमन और शांति और भाईचारे बनायें रखने की दुआ मांगी गयी। मुस्लिम समुदाय के बच्चे बूढ़े जवान सभी लोगो ने एक दूसरे से गले मिलकर बकरीद महापर्व की मुबारकबाद दी। जिसके बाद बकरे की कुबार्नी का सिलसिला चलता रहा। वही मुस्लिम समुदाय के महिला एवं पुरुष सभी लोगों ने एक दूसरे के घर जाकर बकरीद पर्व की मुबारकबाद दी। स्वादिष्ट मेवा पकवान का लुफ्त उठाया।

एसपी के निर्देश पर नवागढ़ पतरातू डीही समेत अन्य जगहों पर गस्ती बल की तैनाती

पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन के निर्देश पर नवागढ़ पतरातू डीही समेत अन्य जगहों पर महिला पुरुष बल की तैनाती की गयी थी। वही त्यौहार को भंग करने वाले उपद्रियो पर सख्त से सख्त निगरानी रखी गई थी ताकि त्यौहार शांतिपूर्ण तरीके से बनाया जा सके

बीडीओ, सीओ और जनप्रतिनिधियों ने लोगों को दी ईद उल अजहा की मुबारकबाद

पुलिस अधीक्षक अंजनी अंजन अंचलाधिकारी रुद्र प्रताप प्रखंड विकास पदाधिकारी मेघ उराव, थाना प्रभारी आशुतोष कुमार, पुलिस अवर निरीक्षक राज रोशन सिन्हा, गौरव सिंह, देवानंद, दिवाकर, जनप्रतिनिधि मुखिया आंती देवी, मुखिया रवि भगत, मुखिया संदीप उराव, मुखिया प्रतिनिधि मंगल देव उराव, मुखिया प्रतिनिधि रंथु उराव, पंचायत समिति उमर आलम, पंचायत समिति नसबूलेन आलम, पंचायत समिति रजंती देवी, परशुराम लोहारा, उपप्रमुख राजकुमार प्रसाद, ने ईद उल अजह की मुबारकबाद दी और लोगों को बकरीद महा पर्व को शांतिपूर्ण तरीके से मानने को कहा।

नमाज के बाद गले मिले अकीदतमंद, दी बधाई

आजाद सिपाही संवाददाता

सेन्हा-लोहरदगा। प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न मस्जिद और ईदगाहों में मुस्लिम धर्मावलंबियों ने पढ़ा ईद उल अजहा की नमाज। लोहतदगा जिला अन्तर्गत सेन्हा प्रखंड क्षेत्र में बकरीद का त्योहार शांतिपूर्वक हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। निर्धारित समयानुसार प्रखंड क्षेत्र के उगरा, अरु, सेरेंगहातु, झखरा, कल्हेपाट, सेन्हा सहित विभिन्न जगहों का मस्जिद और ईदगाहों में ईद उल अजहा की नमाज पढ़ गले मिल एक दूसरे को दिया बधाई बकरीद के मौके पर गुनाहों से माफी मांग कर क्षेत्र मे अमन चैन के लिए दुआयें मांगी गयी। वही सुबह से लगातार हो रही बारिश के बावजूद ईद की नमाज के लिए बच्चे बुजुर्ग नवजवानों में काफी

उत्साह देखी गयी। नमाज के उपरांत मुसलिम धर्मावलंबियों द्वारा अपने धमार्नुसार कुबार्नी का रस्म अदा करते हुए कब्रिस्तान में जा कर अपने पूर्वजों के लिये दुआ मांगा गया। वही बकरीद त्यौहार के मौके पर शांतिपूर्ण त्यौहार सम्पन्न कराने के लिये सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर पुख्ता इन्तिजाम किया गया था। सेन्हा थाना जोन के अन्तर्गत एस आई गणेश यादव और ए एस आई बिरेन्द्र बाखलासेन्हा, ए एस आई बिरजू लाल मुर्मू और राजेश राम झखरा, ए एस आई रामचन्द्र मांझी सेरेंगहातु में सुरक्षा व्यवस्था के मद्देनजर पुलिस पदाधिकारियों का नियुक्ति किया गया था। वही अंचलाधिकारी विजय कुमार और थाना प्रभारी अभिनव कुमार क्षेत्र भ्रमण कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लेते नजर आये। साथ ही विभिन्न चौक चौराहो पर पुलिस बल की तैनाती की गयी थी।

घुरती रथयात्रा : मौसीबाड़ी से अपने घर लौटे भगवान

लोहरदगा(आजाद सिपाही)। नौ दिनों तक मौसी के घर रहने के बाद भगवान जगन्नाथ, बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र के साथ रथ पर सवार होकर गुरुवार को अपने घर मुख्य मंदिर लौट गये। इसी के साथ रथयात्रा महोत्सव का समापन हो गया। रथयात्रा के अंतिम दिन होने के लिए मौसीबाड़ी मंदिर का पट पूजा-अर्चना के लिए सुबह से ही भक्तों के लिए खोल दिया गया था। शाम 4 बजे तक भगवान का दर्शन-पूजन हुआ। महाआरती के बाद तीनों विग्रहों को रथ पर रखा गया। इसके बाद रथयात्रा शुरू हुई। श्रद्धालुओं ने रथ को खींचकर मुख्य मंदिर पहुंचाया। दूसरी ओर, मेले में काफी लोग पहुंचे और खरीदारी की। बच्चों ने झूलों का आनंद लिया।

कार्यकारिणी समिति की बैठक आयोजित

लोहरदगा(आजाद सिपाही)। उपायुक्त डॉ वाघमारे प्रसाद कृष्ण की अध्यक्षता में गुरूवार को जिला योजना समिति लोहरदगा के कार्यकारिणी समिति की बैठक समाहरणालय सभागार में हुई। बैठक में वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए जिला योजना अनाबद्ध निधि के अंतर्गत योजनाओं का चयन और कार्य योजना का अनुमोदन पर चर्चा हुई। इसमें कुल 425 योजनाओं के चयन पर स्वीकृति प्रदान की गई और आवश्यक निदेश जिला योजना पदाधिकारी को दिये गये। बैठक में जिला योजना पदाधिकारी, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी, जिला मत्स्य पदाधिकारी, जिला पशुपालन पदाधिकारी, सभी संबंधित विभागों के कार्यपालक अभियंता, सहायक जिला योजना पदाधिकारी समेत अन्य उपस्थित थे।

भंडरा में घुरती रथयात्रा की रही धूम

भंडरा/लोहरदगा (आजाद सिपाही)। भंडरा में ऐतिहासिक घूरती रथ यात्रा का आयोजन हुआ। जिसमें हजारों की संख्या श्रद्धालुओं ने भाग लिया। बाबा अखिलेश्वर धाम स्थित मौसी बाड़ी मंदिर में भगवान जगरनाथ स्वामी का श्रद्धालुओं ने दर्शन किया। ततपश्चात विधिवत पूजा पाठ कर रथ में उनको चढ़ाया गया। श्रद्धालुओं ने हरिबोल के नारे के साथ रथ खींचा और भंडरा ठाकुर बाड़ी तक भगवान जगरनाथ स्वामी जी का रथ को पहुंचाया। उसके बाद भगवान जगरनाथ स्वामी जी को पंडितो द्वारा पूजा पाठ कर रथ से उनको उतारा गया। श्रद्धालुओं के बीच प्रसाद का वितरण किया गया। इस ऐतिहासिक रथ यात्रा में भगवान जगरनाथ स्वामी जी की दर्शन करने के लिए रांची, लोहरदगा, गुमला, लातेहार, सहित आस पास के विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं श्रद्धालू और पूजा अर्चना करते हैं। मेला कि सुरक्षा के लिए प्रसाशन द्वारा विभिन्न जगहों पर पुलिस बल लगाया गया था।

बकरीद की नमाज अदा कर मस्जिदों में मांगी अमन और शांति की दुआ

आजाद सिपाही संवाददाता

बरवाडीहः बरवाडीह प्रखण्ड के विभिन्न इलाकों में कुबार्नी का पर्व ईद-उल-अजहा मनाया गया इस मौके पर बरवाडीह जामा मस्जिद, छेचा, पोखरी समेत अन्य मस्जिदों में विशेष नमाज अदा की गयी मुस्लिम धर्मगुरुओं ने लोगों को कुर्बानी का महत्व समझाया लोगों ने एक दूसरे को गले मिलकर और हाथ मिलाकर पर्व की बधाइयां और मुबारकबाद दी गयी। नमाज के बाद देश में अमन और शांति के लिए दुआएं मांगी गयी आपसी भाईचारा और सौहार्द के साथ-साथ मुसीबतों परेशानियों से हिफाजत की भी दुआयें की गयी। वही नमाज के बाद की गयी कुर्बानी। जहां बकरीद की नमाज अदा करने के बाद लोगों ने घरों में सेवईयां और मिठाई खाकर पर्व मनाया। साथ ही अल्लाह की रजा के लिए कुबार्नी दी हैसियतमंद लोगों द्वारा अपने-अपने घरों में बकरे की कुबार्नी दी गयी और गरीब और जरूरतमंद पड़ोसियों रिश्तेदारों के बीच मांस का वितरण किया गया साथियों और रिश्तेदारों से मिलकर बकरीद पर्व की बधाई दी छोटे बड़े बच्चे नये नये कपड़े पहनकर पर्व की खुशियां मनाते देखे गये।

इस दौरान पुलिस प्रशासन चप्पे-चप्पे पर मौजूद थे।

आवासीय विद्यालय की छात्राओं ने थाइलैंड में दिखाया अपना दमखम

राष्ट्रीय टीम की ओर से खेलते हुए 4 स्वर्ण और 3 रजत पदक झटके

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। थाईलैंड में अंतरराष्ट्रीय कराटे प्रतियोगिता खेलने गयीं लोहरदगा जिले के आवासीय विद्यालय के बच्चियों ने लोहरदगा जिला, राज्य झारखंड समेत पूरे देश का मान बढ़ाया है। लोहरदगा जिला में कस्तूरबा गांधी आवासीय और झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय की बच्चियों ने थाईलैंड भारत की ओर से खेलते हुए 04 स्वर्ण पदक और तीन रजत पदक झटके हैं।

जिला कराटे संघ लोहरदगा के अध्यक्ष सेंसई और कोच अमित कुमार सिंह के नेतृत्व में लोहरदगा जिला की बच्चियों ने लोहरदगा जिला की अन्य बच्चियों के लिए उदाहरण प्रस्तुत किया है। दिनांक 20/05/23 से 22/05/23 तक देहरादून में आयोजित राष्ट्रीय

कराटे प्रतियोगिता लोहरदगा जिले की 7 बालिका खिलाड़ियों का चयन दिनांक 25 जून से 28 जून 2023 तक थाईलैंड में होने वाली अन्तरराष्ट्रीय कराटे प्रतियोगिता के लिए हुआ था। इनमें कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय कुरु की 3 छात्रायें, कुमकुम कुमारी, अनामिका उराँव, रोशनी उराँव, झारखंड बालिका आवासीय विद्यालय कैरो की छात्रायें; जूही कुमारी, सुनेहा कुमारी, अंजली तिर्की और प्रोजेक्ट गर्ल्स हाइ स्कूल कुडू की मरियम प्रवीण शामिल है। इससे पूर्व सभी ने राष्ट्रीय टूर्नामेंट में स्वर्ण पदक प्राप्त किये थे। जिला कराटे संघ लोहरदगा के जिलाध्यक्ष सह प्रमुख कोच सेंसई अमित कुमार सिंह के नेतृत्व में दिनांक 22/06/23 को थाईलैंड के लिए समाहरणालय परिसर लोहरदगा से उपायुक्त द्वारा रवाना किया गया था। थाईलैंड में आयोजित अन्तरराष्ट्रीय कराटे प्रतियोगिता में थाईलैंड, मलेशिया, भारत, बांग्लादेश, श्रीलंका, और भूटान ने हिस्सा लिया। भारत देश के अलग राज्यों से 28 खिलाडियों ने भाग लिया जिसमें झारखण्ड राज्य से केवल लोहरदगा जिले के 7 बालिका खिलाड़ियों ने ही भाग लिया। विजेता टीम के खिलाड़ी दिनांक 30 जून 2023 को लोहरदगा पहुंचेंगे।

तेज बारिश से पीसीसी पथ हुआ कीचड़मय

सेन्हा-लोहरदगा (आजाद सिपाही): तालाब जीणोद्धार के दौरान संवेदक की लापरवाही के कारण कोयनार टोली पीसीसी पथ कीचड़ में तब्दील हो गया। जिससे ग्रामीणों को समस्या का करना पड़ रहा है। सेन्हा प्रखंड क्षेत्र के कोयनार टोली पथ के किनारे लाखो की लागत से तालाब जीणोद्धार का कार्य भूमि सरंक्षण विभाग के सौजन्य से संवेदक द्वारा कराया गया था। परंतु पीसीसी पथ के दोनों तरफ तालाब से निकाली गयी मिट्टी को रखने से पीसीसी पथ कीचड़ में तब्दील हो गया जिससे ग्रामीणों को आने जाने में काफी समस्या हो रही है। फोटो के माध्यम से देख सकते है किस प्रकार से लोग कीचड़ भरी पथ से गुजरने को मजबूर है। वहीं ग्रामीणों की समस्या पहली बरसात की पानी से यह हाल हो सकता है। तो बरसात अभी बाकी है।

सेन्हा में घुरती रथ की रही धूम, भगवान लौटे अपने धाम

आजाद सिपाही संवाददाता

सेन्हा-लोहरदगा। प्रखंड क्षेत्र में शान्ति और सौहार्द के साथ घूरती रथ यात्रा हुआ संपन्न। सेन्हा प्रखंड क्षेत्र में हर्षोउल्लास के साथ सेन्हा प्रखंड ग्राम एवं कोरांबे में घुरती रथयात्रा का कार्यक्रम सपंन्न हुआ। वही भगवान नौ दिनों तक मौसीबाड़ी में रहने और आतिथ्य स्वीकार करने के बाद भगवान जगन्नाथ, बडे भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ रथ पर सवार होकर हजारों भक्तों पर आशीर्वाद बरसाते हुए घूरती रथ यात्रा के दिन अपने मुख्य मंदिर वापस लौटे पुराणों के अनुसार कहा जाता है। कि आषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीय को भगवान जगन्नाथ, भाई बलभद्र और बहन सुभद्रा के साथ रथ पर सवार

हो कर नौ दिन के लिये मौसीबाड़ी जाते हैं। जो पुनः देवशयनी एकादशी के दिन घूरती रथ यात्रा पर अपने धाम मुख्य मंदिर आते हैं। भगवान का घूरती रथ यात्रा कार्यक्रम को शाम चार बजे घुरती रथ यात्रा आरंभ किया गया रथ पर सवार भगवान को भक्तों द्वारा मुख्य मंदिर तक रस्सी के सहारे रथ को खींच कर पहुंचाया गया। मौके पर अंचलाधिकारी विजय कुमार और थाना प्रभारी अभिनव कुमार घूरती रथयात्रा का जायजा लेते हुए भगवान के चरणों में माथा टेका वही सुरक्षा व्यवस्था के लिये प्रतिनियुक्ति दंडाधिकारी के साथ ए एस आई अलबिना लकड़ा, राजेश राम लोहरा दल बल के साथ मौजूद थे।

महुआडांड़ की मस्जिदों में पढ़ी गयी नमाज, रही रौनक

आजाद सिपाही संवाददाता

महुआडांड़। महुआडांड़ स्थित जामा मस्जिद गौसिया मस्जिद मदीना मस्जिद में बृहस्पतिवार को सुबह 7:30 ईद उल अजहा की नमाज अदा की गयी। जामा मस्जिद में मुफ्ती शब्बर साहब गौशिया मस्जिद में कारी सैयद मनौव्वर साहब और मदीना मस्जिद में मुफ्ती अतीक उर रहमान साहब के द्वारा ईद उल अजहा की नमाज अदा करायी गयी। नमाज के फौरन बाद देश दुनिया में अमन और शांति के लिए दुआयें की गयी साथ ही एक दूसरे से मिलकर एक दूसरे का सहयोग करने की बात कही गयी। महुआंडाड़ थाना प्रभारी आशुतोष यादव के निर्देश पर जामा मस्जिद गौसिया मस्जिद और मदीना मस्जिद के बाहर नमाज के वक्त पुलिस बल की तैनाती की गयी थी। वही कहीं भी अप्रिय घटना ना हो इसे लेकर भी महुआडांड़ के चौक चौराहों पर पुलिस बल की तैनाती की गयी थी।

सड़क हादसे में दो बाइक सवारों की मौत

भंडरा/लोहरदगा (आजाद सिपाही)। नवडीहा मोड़ से सिसई सड़क पर पलमी मोड़ के पास सड़क दुर्घटना में दो बाईक सवारों की मौत घटना स्थल पर ही हो गयी। मृतकों में उदरंगी सेंगराटोली निवासी सेराज अंसारी का बेटा 22 वर्षीय जुबेर अंसारी और अमदरी निवासी शनि उरांव का बेटा 27 वर्षीय मंगल उरांव शामिल हैं। जानकारी के मुताबिक जुबेर अपनी बाईक से सिसई से भंडरा लौट रहा था। जबकि मंगल उरांव बाईक से भंडरा रथ मेला देख कर अपना गांव अमदरी जा रहा था। इसी क्रम में दोनों का भिड़ंत पलमी मोड़ के पास हो गया। इससे दोनों की मौत घटना स्थल पर ही हो गयी। पुलिस घटना स्थल पहुंच कर शव को पोस्टमार्टम के लिये लोहरदगा भेजने और अन्य कारवाई में जुट गयी है।

एक्स आर्मी को किया गया सम्मानित

कैरो (आजाद सिपाही)। कैरो प्रखंड के हनहट पंचायत मुख्यालय में भाजपा नित केंद्र में नरेंद्र मोदी की नौ वर्ष पूर्ण होने पर कैरो प्रखंड के भारतीय जनता पार्टी के मंडल अध्यक्ष लखन उराँव के नेतृत्व मान-सम्मान के कार्यक्रम के नित महादेव साहू एक्स आर्मी को अंगवस्त्र दे कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर केन्द्र सरकार की उपलब्धियों को बताते हुए प्रखंड अध्यक्ष लखन उराँव ने कहा कि वन नेशन, वन पेंशन, गरीबों को पांच लाख तक स्वास्थ्य बीमा, क्रोना काल में मुफ्त में अनाज वितरण, घर-घर शौचालय, प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत गरीबों को पक्का मकान देना। ये सब एक अद्वितीय उपलब्धि है। इस अवसर पर भाजपा के प्रखंड अध्यक्ष लखन उराँव, विशेश्वर प्रसाद दीन, मोहन साहू, गोविंद महतो, कृष्णमणि यादव, दीपक दुबे इत्यादि भाजपाई उपस्थित रहें।

अहर्ता रखनेवाले युवाओं को मतदाता सूची में जोड़ें : एसडीओ

आजाद सिपाही संवाददाता

लोहरदगा। अनुमंडल पदाधिकारी-सह-निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी, 72-लोहरदगा अरविंद कुमार लाल की अध्यक्षता में आगामी लोकसभा निर्वाचन और मतदाता सूची का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्यक्रम-2024 को लेकर आवश्यक बैठक पुराना डीआरडीए भवन स्थित अभिलाषा कक्ष में हुई। बैठक में अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा सभी उपस्थित सदस्यों को बताया गया कि स्वीप कार्यक्रम अंतर्गत नये मतदाताओं को मतदान करने हेतु जागरूक किया जाना है। जो युवा मतदाता बनने की अहर्ता प्राप्त कर चुके हैं उन्हें अवश्य मतदाता सूची से जोड़ें। एसएसआर-2024 कार्यक्रम में उनका नाम विलोपित किया जाना है। अनुमंडल पदाधिकारी द्वारा बताया गया कि एसएसआर-2024 अंतर्गत सभी निर्वाचक निबंधन पदाधिकार/सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी और सभी बीएलओ का प्रशिक्षण 01 जून से चलाया जा रहा है जो 20 जुलाई 2023 तक संचालित होगा। दिनांक 21 जुलाई से 21 अगस्त 2023 तक

बीएलओ घर-घर जा मतदाताओं का सत्यापन का कार्य करेंगी। इस दौरान मतदाता सूची में नये मतदाता को जोड़ने और मृतकों को हटाये जाने का भी कार्य किया जायेगा। 22 अगस्त से 29 सितंबर 2023 तक मतदान केंद्रों का री-अरेंजमेंट किया जायेगा। मतदाता पहचान पत्र में अगर मतदाता का फोटो खराब है तो उसे हटाया जायेगा। 30 सितंबर से 16 अक्टूबर 2023 तक प्रारूप 1 से 8 तैयार किये जाने का कार्य किया जायेगा। समेकित ड्राफ्ट रोल तैयार किया जायेगा। समेकित ड्राफ्ट मतदाता सूची का प्रकाशन 17 अक्टूबर 2023 को किया जायेगा। किसी के द्वारा दावा/आपत्ति फार्म 17 अक्टूबर से 30 नवंबर 2023 तक भरा जा सकेगा। दो शनिवार और रविवार को विशेष कैंप का आयोजन मतदाताओं के लिए किया जायेगा जिसमें नये नाम जोड़े जाने, मृतक या स्थानांतरित व्यक्ति का नाम हटायें या सुधार करने का कार्य मतदान केंद्रों में किया जायेगा। दावा/आपत्तियों का निस्तारण 26 दिसंबर 2023 तक किया जायेगा।

मतदाता सूची का अंतिम प्रकाशन दिनांक 05 जनवरी 2024 को किया जायेगा। बैठक में जिला जनसंपर्क पदाधिकारी, जिला शिक्षा पदाधिकारी, प्रशासक नगर परिषद, जिला शिक्षा अधीक्षक, सभी सहायक निर्वाचक निबंधन पदाधिकारी, सभी बीएलओ, सभी पर्यवेक्षक, +2 उच्च विद्यालयों के प्रधानाध्यापक व महाविद्यालयों प्राचार्य, हिंडाल्को के प्रतिनिधि और अन्य उपस्थित थे।

गांव-गांव तक चला भाजपा का महा जनसंपर्क अभियान, ग्रामीणों की सुनी गयी समस्याएं

सेन्हा-लोहरदगा (आजाद सिपाही): सेन्हा प्रखंड क्षेत्र के अलौदी पंचायत में बीजेपी युवा मोर्चा प्रदेश महामंत्री के नेतृत्व में प्रधानमंत्री का कार्यकाल की उपलब्धि को गिनाते हुए सम्मान समारोह कार्यक्रम कार्यकर्ताओ के सहयोग से गांव और पंचायत का भ्रमण कर ग्रामीणों के बीच चलाया गया। जिसके तहत प्रखंड क्षेत्र के अलौदी पंचायत अंतर्गत हेसवे सहित अन्य गांवों में अभियान को तेज करते हुए पार्टी कार्यकर्ताओं ने ग्रामीणों से सीधा संपर्क कर ग्रामीण क्षेत्र की समस्या से रुबरु होते हुए केंद्र सरकार पीएम नरेन्द्र मोदी का 9 वर्ष के कार्यकाल में उपलब्धियां तथा उनके द्वारा बनायें विकास की रणनीति के बारे में जनता को बताया गया। वही किसान, व्यवसाय, खेल सहित विभिन्न क्षेत्र में लोगो को प्रोत्सान तथा उचित लाभ मुहैया कराने की दिशा में किये गये कार्य से अवगत कराते हुए उपलब्धि पुस्तिका वितरण गया। और 2024 में भारी मतों से विजय बनाने का अपील किया गया। जानकारी देते हुए युवा मोर्चा प्रदेश मंत्री ने कहा ग्रामीण क्षेत्र में विकास का मूल मंत्र सर्वप्रथम प्रत्येक गांव को शहर और प्रखंड मुख्यालय से जोड़ना और जर्जर पथ की मरमती करवाना तथा शिक्षा से लेकर व्यवसाय को बढ़ावा देना है। महा जनसंपर्क कार्यक्रम के दौरान बीजेपी प्रदेश मंत्री के अलावे रामजीत यादव, मिथुन तमेडा, राजेश मुंडा, चुनी प्रजापति, नरायन लोहरा, मनु दास गोस्वामी, अर्जुन मिस्त्री सहित सैकड़ों बीजेपी कार्यकर्ता और ग्रामीण शामिल थे।

जिले भर में आपसी भाईचारा, सौहार्द्र और प्रेम के साथ मनायी गयी बकरीद

अल्लाह को प्यारी है कुर्बानी...

शहर के कुल 10 मस्जिदों में ईद उल अजहा की नमाज पढ़ी गई

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। अल्लाह की रजा के लिए इंसान को कुर्बानी पेश करनी चाहिए। इंसान के हर वो नेक कार्य जो दिल करना चाहे उस पर नियत यह होनी चाहिए कि इंसान के द्वारा किए गए हर नेक कार्य का अल्लाह को राजी करने के लिए किया जा रहा है। उक्त बातें ईद उल अजहा की विशेष नमाज अदा कराने से पहले जामा मस्जिद के इमाम मौलाना इनाम रब्बानी ने कही।

उन्होंने आगे कहा कि खुदा को राजी करने के लिए कई तरह की इबादत और तस्बीह हैं। लेकिन इन सब में कुर्बानी को अल्लाह खासतौर से पसंद करता है। उन्होंने बकरीद में अदा की जाने वाली विशेष नमाज के बारे में कहा कि यह विशेष नमाज साल में केवल दो मौकों पर पढ़ी जाती है। पहले ईद और दूसरी बार बकरीद में ही विशेष नमाज का आयोजन मस्जिदों और ईदगाहों में किया जाता है। इस विशेष नमाज को अदा करने के बाद लोगों के द्वारा अल्लाह की राह में कुर्बानी पेश किया जाता है। अल्लाह की राह में कुर्बानी पेश करने वाला त्योहार यानी ईद उल अजहा जिले में शांति सौहार्द और आपसे भाई चारे के साथ मनाय गया। इस त्यौहार में इस्लाम धर्मावलंबियों ने जानवरों की कुर्बानी अल्लाह की राह में पेश की। इस त्यौहार को मनाने के लिए कुर्बानी देने वालों ने पहले से ही बकरे खरीद कर रखे थे।

ईद उल अजहा की नमाज अदा करने के बाद लोगों ने उन जानवरों को खुदा की हुजूर में पेश कर दिया। शहर के कुल 10 मस्जिदों में ईद उल अजहा की नमाज पढ़ी गई। जिसमें मस्जिद फैजाने रजा में कारी अशरफ रजा, मस्जिद होदा में कारी आफताब, मसजिद रजा ए मुस्तफा में मौलाना अहमद अली मिस्बाही ने नमाज पढ़ाई।

वहीं मोती मस्जिद में हाफिज जाहिद रिजवी, कादरिया मस्जिद में मुफ्ती कासिद रजा, राजा ए हबीब में मौलाना तनवीर उल हसन, मस्जिद गौसूल वरा में हफीज सद्दाम, मक्का मस्जिद में मौलाना शोएब, जैनब मस्जिद में हाफिज मुशीरुद्दीन और जामा मस्जिद में पहली जमात, मौलाना इनआम रब्बानी ने अदा कराई। इसके बाद मदीना मस्जिद में मौलाना उबैदुल्ला कासमी और जामा मस्जिद की दूसरी और शहर की आखरी जमात की इमामत हाफिज इरशाद ने फरमाई।

पूरी तरह मुस्तैद रही नगर परिषद की टीम

गुमला (आजाद सिपाही)। बकरीद पर्व को लेकर गुमला नगर परिषद की पूरी टीम मुस्तैद रही, विशेषकर साफ-सफाई एवं पेयजल व्यवस्था को लेकर कहीं से भी कोई शिकायत नहीं प्राप्त हुई। बकरीद से दो दिन पूर्व ही नगर परिषद प्रशासक संजय कुमार ने लगभग सभी मुस्लिम बहुल क्षेत्रों तथा प्रमुख मस्जिद इलाकों का स्वयं दौरा कर अपने अधीनस्थों को आवश्यक निर्देश दिया था, जिसका प्रभाव देखने को मिला। उक्त सभी क्षेत्रों में न केवल व्यापक साफ-सफाई की गई, बल्कि सभी नमाज स्थलों के आसपास समुचित रूप से ब्लीचिंग का छिड़काव भी करवाया गया। मांग के अनुरूप न केवल सभी स्थलों पर टैंकर उपलब्ध करवाए गए बल्कि पाइप से होने वाली जलापूर्ति की भी पर्व के दौरान निर्बाध आपूर्ति सुनिश्चित कराई गई। प्रशासक संजय कुमार ने कहा कि उन्हें इस दौरान कहीं से भी किसी शिकायत या अव्यवस्था को लेकर कोई फोन नहीं आया। बल्कि जिन इलाकों में बात हुई वहां लोगों ने नगर परिषद द्वारा दी गई सेवाओं की प्रशंसा ही की। उन्होंने कहा कि नगर परिषद की पूरी टीम अत्यंत सीमित संसाधनों के बावजूद शहर की बेहतरी के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ देने की कोशिश कर रही है, इसमें शहर के लोगों से भी सतत सहयोग की अपेक्षा है।

महत्वपूर्ण न्यूज

अवैध संबंध के शक में की पत्नी की हत्या, पुलिस ने किया गिरफ्तार

चैनपुर (आजाद सिपाही)। चैनपुर में एक सनसनीखेज घटना सामने आई है। मुख्यालय के बाजार टांड़ के समीप एक युवक ने अवैध संबंध के शक के चलते अपनी पत्नी की मुर्गा काटने वाले चापड़ से गला काटकर मौत के घाट उतारा दिया। आरोपी पति घटना को अंजाम देकर चैनपुर से फरार होने के लिए चैनपुर बस स्टैंड पहुंचा था। पुलिस ने गुप्त सूचना पर चैनपुर बस स्टैंड से उसे ग्रिफ्तार कर लिया। बताया जाता है कि पति-पत्नी का अक्सर विवाद होता रहा था। जिसके कारण पत्नी काफी समय से अपने मायके रामपुर गांव में रहती थी। वहीं बुधवार को दोनों की मुलाकात चैनपुर ब्लॉक मोड़ में हुई जिसके बाद पति अमित टोप्पो ने अपनी पत्नी मंजुला टोप्पो (मंजुला सिंह) को समझा-बुझाकर जबरन अपने साथ अपने घर ले आया। लाने के क्रम में ही होटल में नाश्ता करने के दौरान दोनों में कहा-सुनी शुरू हो गई। जिसके बाद रात्रि लगभग 9:30 बजे अमित अपने गुस्से पर काबू नहीं पा सका और घर में रखे मुर्गा काटने वाले चापड़ से अपनी पत्नी मंजुला की गला काटकर हत्या कर दी। पुलिस ने उसकी निशानदेही पर हत्या में प्रयुक्त चापड़ को भी बरामद कर लिया है। इधर आरोपी पति अमित टोप्पो ने बताया कि मेरी पत्नी का अवैध संबंध का शक मुझे काफी दिनों से था जिसके कारण वह मेरे साथ नहीं रहती थी। हमारे तीन बच्चे हैं दो बच्चे अपनी मां के साथ और एक बच्चा मेरे साथ रहता था। रात्रि में दोनों के बीच काफी कहासुनी हुई जिसके बाद मैं गुस्से में आकर घटना को अंजाम दे दिया। घटना के संबंध में सर्किल इंस्पेक्टर बैजू उरांव ने बताया कि आरोपी से पूछताछ की जा रही है।

माले और झारखंड नवनिर्माण दल का कैडर कन्वेंशन आज

गुमला (आजाद सिपाही)। भाकपा माले रेड स्टार व झारखंड नवनिर्माण दल द्वारा आगामी लोकसभा चुनाव की तैयारी को लेकर बुलाया गया संयुक्त कैडर कन्वेंशन 30 जून को जिला मुख्यालय के परिसदन हॉल में आयोजित किया जाएगा। दिन के 11 बजे से होनेवाले कन्वेंशन की तैयारी पूरी कर ली गई है। कन्वेंशन की कार्यवाही शुरू करने के पूर्व शहीद हुल आंदोलन के नायक सिद्धू- कान्हू, चांद-भैरव, फूलो-झानो को श्रद्धांजलि अर्पित की जाएगी। लोहरदगा लोकसभा स्तरीय कन्वेंशन में बिशुनपुर, गुमला, सिसई, मांडर व लोहरदगा विधानसभा क्षेत्र के पार्टी के पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया है। कन्वेंशन में भाकपा (माले) रेड स्टार के राज्य सचिव कामरेड वशिष्ठ तिवारी व झारखंड नवनिर्माण दल के केंद्रीय संयोजक विजय सिंह विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

नगर परिषद कराये सड़कों और नालियों का निर्माण : रमेश चीनी

गुमला (आजाद सिपाही)। कांग्रेस के प्रदेश सचिव रमेश कुमार चीनी ने नगर परिषद के प्रशासक से सड़कों व नालियों के निर्माण को प्राथमिकता देने की मांग की है। कहा है कि बरसात आते ही शहर की पोल खुल गई है। झोला रैली व बुक बैंक जैसे प्रयोग निश्चित सराहनीय है। लेकिन विकास का पैमाना शहर की सड़कों व नालियों की स्थिति से भी नापा जाता है। किंतु एक साल से अधिक समय से शहर में किसी प्रकार का कंस्ट्रक्शन कार्य नहीं हुआ है। जबकि निवर्तमान पार्षदों ने कई महत्वपूर्ण निर्माणों का प्रस्ताव दिया है। जिसके बाद निविदा भी निकली। बाद में फंड के अभाव में उसे रद्द कर दिया गया, पर प्राप्त जानकारी के अनुसार अभी नप के पास पर्याप्त फंड है। ऐसे में उस फंड का सदुपयोग कर महत्वपूर्ण नालियों व सड़कों के निर्माण में रूचि दिखाते हुए उसे पूरा कराए, ताकि जनता को इसका लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि टैक्स देने वाली जनता को सुविधा लेने का भी हक है। इसलिए प्रशासक से अनुरोध है कि शहर के विकास के प्रति अपना निजी ध्यान आकृष्ट करें और जरूरी योजनाओं को धरातल पर उतारने का काम करें।

कुम्हारी बाजार से मोपेड चोरी कर भाग रहे दो चोरों को ग्रामीणों ने पकड़कर पुलिस को सौंपा

बसिया (आजाद सिपाही)। थानांतर्गत कुम्हारी साप्ताहिक बाजार से बुधवार को एक टीवीएस मोपेड की चोरी कर भाग रहे दो नाबालिग चोरों को ग्रामीणों ने पकड़ कर बसिया पुलिस के हवाले कर दिया है। इस संबंध में टीवीएस मोपेड के मालिक गंगड़ा बंडाटोली निवासी दसई खड़िया ने बसिया थाने में एक आवेदन देकर पुलिस प्रशासन से उक्त चोरों पर कार्रवाई की मांग की है। दसई ने बताया कि हम दोनों पति-पत्नी अपने घर से टीवीएस मोपेड पर सवार होकर कुम्हारी बाजार गए थे। अपनी गाड़ी खड़ी कर बाजार से सामान खरीदने लगे। सामान खरीद कर गाड़ी के समीप आए तो गाड़ी थी। आसपास के लोगों से पूछताछ करते हुए गाड़ी की खोजबीन करने लगे, तभी कुम्हारी सिसई रोड में कुछ दूर पर दो युवक मेरी गाड़ी को पैदल लेकर भाग रहे थे। तब ग्रामीणों के सहयोग से दोनों चोरों को पकड़ लिया गया। पूछताछ करने पर उन्होंने अपना नाम पता बताया। जिसके बाद मौके पर पहुंची पुलिस की गश्ती टीम को दोनों युवकों को सौंप दिया गया। बसिया पुलिस ने दोनों नाबालिग जो रांची और पलामू के रहने वाले हैं, को रिमांड होम भेज दिया।

मोदी के नौ साल भारत के लिए स्वर्णिम काल : रैना

परिसदन में भाजपा की हुई बैठक में कई लोग हुए सम्मानित

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। भारतीय जनता पार्टी के जम्मू कश्मीर के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष व भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह रैना, झारखंड के प्रशिक्षण प्रमुख मनोज सिंह, राज्यसभा सांसद समीर उरांव स्थानीय परिसदन पहुंचे।

वहां आयोजित बैठक को संबोधित करते हुए नरेंद्र सिंह रैना ने कहा भाजपा के लिए देश हित सर्वोपरि है। जबकि अन्य पार्टियों के लिए परिवारवाद उपर है, जिन पर कई भ्रष्टाचार के आरोप लगे हैं और कई जमानत पर हैं। प्रधानमंत्री मोदी के 9 साल के कार्यकाल में देश हर क्षेत्र में आगे हुआ है। गुमला जिला भाजपा की टीम के कार्यकर्ता इमानदारी पूर्वक कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा झारखंड आकर पता चला कि यहां के पूर्ववर्ती भाजपा सरकार ने राज्य के विकास के लिए बहुत अच्छा काम किया था, अभी वर्तमान में राज्य की स्थिति ठीक नहीं है। भ्रष्टाचार व महिलाओं पर हो रहे अत्याचार से झारखंड की बदनामी हुई है। संपर्क से समर्थन अभियान के तहत जिले में टोटो मंडल के भगवान दास जिला मुख्यालय में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त शिक्षक अमृत मेटे जी को, कारगिल शहीद के परिजन मिला उरांव, पत्रकार बलदेव शर्मा, पुराने जनसंघी उज्जवल सिन्हा, नंदलाल विश्वकर्मा, मुनी ओझा, पूर्व चेयरमैन देव सागर सिंह, किशोर मिश्रा,बसन्ती देवी के घर जाकर सम्मानित कर भाजपा के लिए नैतिक समर्थन की अपील की।

इस अवसर पर मुख्य रूप से जिला अध्यक्ष अनूप चंद्र अधिकारी, प्रदेश मंत्री मुनेश्वर साहू, विनय लाल, भिखारी भगत, तेम्बू उरांव, जिप अध्यक्ष किरण बाड़ा, महामंत्री मिसिर कुजूर, गायत्री देवी, कौशलेंद्र जमुआर, लक्ष्मीकांत बड़ाइक, शंभू सिंह, सागर उरांव, राधेश्याम कुशवाहा, सुजीत नंदा, सोनामणि उरांव, संजय वर्मा, आशेष बारला, अरविंद मिश्रा, गौरी किंडो, अमरमणि उरांव, भोला चौधरी, बालकेश्वर सिंह, गीता मिश्रा, सौरभ पांडे, रामेश्वरी उरांव, दिनेश सिंह, पायल तिवारी, सुषमा गुप्ता, मुख्तार आलम, गुड्डी नंदा प्रतिमा कुमारी आदि प्रमुख कार्यकर्ता उपस्थित थे।

निर्धारित दर से अधिक कीमत पर खाद-बीज बिकने से किसान परेशान

सिसई (आजाद सिपाही)। प्रखंड के लाइसेंसी खाद बीज दुकान में इन दिनों निर्धारित मूल्य से अधिक दामों पर खाद-बीज बेचा जा रहा है। जिससे किसान परेशान हैं और उंची कीमत देकर खाद-बीज खरीदने को मजबूर हैं। मानसून के शुरू होते ही प्रखंड क्षेत्र में किसान खेती बाड़ी में जुट गए हैं। खाद बीज खरीदने के लिए खाद बीज की दुकानों में भारी संख्या में कृषकों की भीड़ देखी जा रही है। धान, मडुआ, मक्का सहित अन्य बीज व खाद की कीमत सुनकर किसान चिंतित नजर आ रहे हैं। फिर भी किसान मरता क्या न करता की स्थिति में ऊंची कीमत पर खरीददारी करने को मजबूर हैं। ज्ञात हो कि प्रखंड के लाइसेंसी खाद-बीज दुकानों में सभी तरह के डीएपी 1650 रुपए प्रति बोरी (50 केजी), सभी तरह के यूरिया 350 रुपया प्रति बोरी (45 केजी), हाईब्रिड धान 250 से 350 रुपए प्रति केजी, मक्का 250 से 300 रुपए प्रति केजी, जाईम 10 केजी 300 से 500 रुपए, फोरेट 140 से 150 रुपए प्रति केजी खुलेआम बेची जा रही है। जबकि सरकारी दर पर यूरिया की कीमत 266.50 रुपए व डीएपी 1350 रुपए प्रति बोरी बेची जानी है। वहीं फोरेट की 110 से 150 रुपए प्रति केजी निर्धारित है। इस संबंध में जिला कृषि पदाधिकारी विजय कुजूर से पूछे जाने पर उन्होंने बताया कि मैंने तत्काल पदभार लिया है, अभी किसी स्टाफ से मेरा परिचय नहीं हुआ है। ऊंची कीमत में खाद-बीज बिक्री करने वालों की शिकायत मिलने पर दुकानदार के विरुद्ध आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

आरकेडी कंपनी कैंप टू में तैनात एसआइ ने छह लोगों पर केस दर्ज कराया

आजाद सिपाही संवाददाता

दो मजदूरों की मौत मामले में कंपनी के जीएम संदीप सिंह, सीजीएम लक्ष्मण शेट्टी, सीजीएम अजय सिंह, एचआर कृपा सिंधु बेहरा, प्लांट इंचार्ज मनोरंजन जैना व ऑपरेटर मानस को बनाया गया आरोपी

सिसई। रेड़वा स्थित आरकेडी कंपनी के कैम्प टू में सिसई पुलिस के प्रतिनियुक्त एएसआई उदल महतो ने बीते 27 जून को हुई दो मजदूरों की दर्दनाक मौत के मामले में कंपनी के छह लोगों के विरुद्ध आईपीसी की धारा 287, 304 व 34 के तहत गुरुवार को केस दर्ज कराया है। आरोपियों में आरकेडी कंपनी के जीएम संदीप सिंह, सीजीएम लक्ष्मण शेट्टी, सीजीएम अजय कुमार सिंह, एचआर कृपा सिंधु बेहरा,प्लांट इंचार्ज मनोरंजन जैना व ऑपरेटर मानस शामिल है।

दर्ज केस में कहा गया है कि 27 जून को कैम्प में काफी शोर-गुल सुनकर मैंने प्रतिनियुक्त जवानों के साथ कमरे से बाहर निकलकर मजदूरों व कर्मियों से पूछताछ की तो पता चला कि सीमेंट मिक्सचर प्लांट के मशीन में फंसकर दो मजदूरों की मौत हो गई है। मिक्सचर मशीन के पास पहुंचने पर देखा कि एक मजदूर को मिक्सचर मशीन से निकाला गया था, जिसकी मौत हो चुकी थी। वहीं दूसरे मजदूर का शव मिक्सचर मशीन में ही फंसा हुआ था। मृतक मजदूर की पहचान बिरकेरा महुआटोली के भरत गोप व मुर्गू आम्बा टोली के प्रदीप उरांव के रूप में बताई गई। आगे पूछ-ताछ करने पर पता चला कि प्लांट के इंचार्ज मनोरंजन जैना के द्वारा मिक्सचर मशीन का ब्लेड व बॉक्स की सफाई करने के लिए दोनों मजदूरों को मशीन के अंदर भेजा गया था। परन्तु मजदूरों को बिना बाहर निकले ही वह वहां से हट गया। वहीं ऑपरेटर मानस ने बिना आदेश व जांच पड़ताल किए बिना ही मशीन को चालू कर दिया, जिससे यह घटना घटी है। जबकि दोनों कर्मी को पता था कि मजदूरों के अंदर रहते मशीन चलाने से मजदुरों की मौत हो सकती है। नियमतः भी कोई मजदूर मशीन के अंदर सफाई के लिए जाता है तो इंचार्ज उसके बाहर निकलने तक वहीं खड़ा रहता है और मजदूरों के बाहर निकलने के बाद ही इंचार्ज के द्वारा ऑपरेटर को मशीन चलाने का आदेश दिया जाता है। जबकि इंचार्ज मनोरंजन जैना ने मजदूरों को मिक्सचर मशीन के अंदर भेजकर वहां से हट जाने और मशीन ऑपरेटर मानस के बिना किसी से पूछे या जांच किए बिना ही मशीन को चालू कर देने के कारण मशीन में घुसे भरत व प्रदीप की मौत हो गई। घटना के बाद कंपनी का पूरा प्रबंधन और कर्मचारी कैम्प छोड़कर फरार हो गए। कंपनी के किसी भी अधिकारी व कर्मी ने अपनी जिम्मेवारी नहीं निभाते हुए मृतकों की सुध नहीं लेकर घोर उदासीनता दिखाई है।

मेरे द्वारा पूर्व में भी आरकेडी कंपनी के जीएम संदीप सिंह, सीजीएम लक्ष्मण शेट्टी, सीजीएम अजय कुमार सिंह व एचआर कृपा सिंधु बेहरा तथा अन्य कर्मियों को सुरक्षा मानकों का पालन करने के लिए बार-बार हिदायत दी गई थी, परन्तु उक्त सभी लोगों के द्वारा कभी भी पुलिस प्रशासन की बातों पर ध्यान नहीं दिया गया। जिसके कारण यह घटना घटित हुई है।

अखड़ा उन्नयन और संवर्द्धन कार्यक्रम के लिए लोक गायिका सीमा देवी को किया गया सम्मानित

पालकोट (आजाद सिपाही)। प्रखंड अंतर्गत दुर्गा मंदिर में पालकोट गढ़ परंपरा को लेकर अखड़ा उन्नयन एवं संवर्द्धन कार्यक्रम के जरिए संस्कृति, भाषा और साहित्य के विषय पर कार्यशाला, गोष्ठी के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था। झारखंड सरकार सांस्कृतिक मंत्रालय कला संस्कृति खेल कूद युवा कार्य विभाग द्वारा संचालित पालकोट गढ़ परंपरा अखडा उन्नयन एवं संवर्द्धन का तीन दिवसीय कार्यक्रम का आज आखरी दिन था। जिसमें मुख्यतः पालकोट की मुखिया जसिन्ता मिंज, बघिमा पंचायत की मुखिया जुसफिन टेटे ने सांस्कृतिक कार्यक्रम स्थल पर पहुंच कर कलाकारों और जनता को संबोधित करते हुए कहा कि झारखंडियों को अपनी अपनी संस्कृति पर गर्व करना चाहिए और इसे बचाने की चेष्टा करनी चाहिए। हमारी पुरातन संस्कृति हमारी पहचान है, आधुनिकता की दौड़ में हम अपनी अस्मिता को ही ना गंवा दें। कलाकारों में सीमा देवी, अनिता देवी, मनी देवी, बांसुरी में लालधारी लोहरा, वादन में नन्द किशोर गोप, शैलवहान भगत, राधेश्याम हांसदा, रामसेवक लोहरा, मसीह जमा, प्रेम शंकर साहू, गणेश साहू इत्यादि लोक कलाकार उपस्थित थे। आज गढ़ परिवार से पालकोट गढ़ परम्परा अखड़ा उन्नयन एवं संवर्द्धन कार्यक्रम करने हेतु सीमा देवी लोक गायिका को सटिफिकेट सह सम्मान देकर कार्यक्रम समापन हुआ।

पूर्व मंत्री एनोस एक्का ने बोलबा प्रखंड के विभिन्न क्षेत्रों का किया दौरा

सिमडेगा/बोलबा (आजाद सिपाही)। बोलबा प्रखंड के पोटोबाड़ा बनचौका आदि क्षेत्रों का गुरुवार की सुबह झारखंड पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सह पूर्व मंत्री एनोस एक्का, झापा युवा जिला अध्यक्ष संदेश एक्का, जिप सदस्य अनीता सोरेंग एवं बोलबा प्रखंड अध्यक्ष शशि तोपनो के द्वारा भ्रमण किया गया। मौके पर ग्रामीणों के साथ बैठक करते हुए उनकी समस्याओं को सुना। मौके पर ग्रामीणों ने बताया कि आज भी इस क्षेत्र में मूलभूत सुविधाओं की घोर कमी है लेकिन कोई भी देखने वाला नहीं है। गांव में बिजली-पानी, सड़क, प्रधानमंत्री आवास, वृद्धा पेंशन, नाली सहित कई प्रकार की समस्या है। जिसे बार-बार प्रशासन के समक्ष रखने के बाद भी अब तक दूर नहीं हुई। पिछले दिनों सरकार आपके द्वार में भी इन समस्याओं को रखा गया था लेकिन सुनवाई नहीं हुई। मनरेगा के तहत कार्य होता है लेकिन बिचौलिए हावी हैं। जिसे दूर करने की आवश्यकता है। एनोस एक्का ने कहा वर्तमान सरकार आम लोगों के हितों का ख्याल नहीं रख रही है और क्षेत्र के जनप्रतिनिधि के उदासीन रवैया के कारण इस प्रकार की समस्या है लेकिन झारखंड पार्टी जमीन से जुड़कर आपकी समस्याओं को दूर करेगी, इसलिए एक बार आप झारखंड पार्टी का सहयोग करें। मौके पर फूलमनी तिर्की, दोमोनिक बिलुंग, अनथ बिलुंग, संजय बिलुंग झापा की ओर से बिरसा मांझी, अमन खेस्स, आमोस मिंज, हीरा प्रधान, मोहन प्रधान, मरसेंन बिलुंग, रसाल खलखो उपस्थित थे।

गुमला नगर परिषद का प्रयास : अब आवेदन के 24 घंटे के अंदर जारी होगा जन्म-मृत्यु प्रमाण पत्र

हर नवजात के जन्म प्रमाण पत्र के साथ उपहार में मिलेगा पौधा

नगर परिषद के प्रशासक ने संबंधित कर्मियों के साथ बैठक कर पूरी प्रक्रिया से अवगत कराया

आजाद सिपाही संवाददाता

गुमला। नगर परिषद के प्रशासक संजय कुमार ने राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस के अवसर पर एक नए प्रयास की शुरुआत की है। अब कार्यालय में एक ऐसी कार्य संस्कृति विकसित करने की योजना बनी है कि कार्यालय में जन्म-मृत्यु प्रमाणपत्र का आवेदन करने वाले लोगों को प्रमाण पत्र लेने के लिए एक दिन का भी इंतजार न करना पड़े। उन्होंने बताया कि अब किसी भी नवजात शिशु का जन्म प्रमाण पत्र तथा किसी भी मृतक के मृत्यु प्रमाण पत्र को उसी दिन जारी किया जाएगा। उन्होंने प्रमाण पत्र जारी करने के लिए 24 घंटे की अधिकतम समय सीमा निर्धारित की है। संजय कुमार ने अपने इस निर्देश तथा इसको लेकर पूरी प्रक्रिया से अवगत कराने के लिए अपने संबंधित कर्मियों के साथ एक दिन पूर्व बैठक भी कर ली है। उन्होंने कहा कि जो लोग जीवनांक प्रमाण पत्र के लिए नगर परिषद में आवेदन करते हैं, उनसे भी अपेक्षा होगी कि वे अपना आवेदन सभी वांछित दस्तावेजों के साथ ही जमा करें, ताकि दस्तावेजों के मांगने के क्रम में अनावश्यक विलंब न हो। किस प्रमाण पत्र के साथ कौन-कौन दस्तावेज की जरूरत होगी, उसकी जानकारी कार्यालय के नोटिस बोर्ड पर भी चस्पा कराई जा रही है।

उन्होंने यह भी कहा कि किसी भी नवजात शिशु के जन्म के पंजीकरण हेतु नगर परिषद में आवेदन देने में विलंब न करें, क्योंकि यदि नगर परिषद में जन्म के 30 दिन बाद कोई प्रमाण पत्र के लिए आवेदन करता है तो उस आवेदन को क्रमशः जिला सांख्यिकी कार्यालय या अनुमंडल पदाधिकारी के कार्यालय अग्रसारित किया जाता है, फलस्वरूप इस पूरी प्रक्रिया में विलंब हो सकता है। अतः 24 घंटे में प्रमाण पत्र निर्गत करने के लिए सिर्फ उन्हीं आवेदनों पर विचार किया जाएगा जो जन्म या मृत्यु से अधिकतम एक माह के अंदर आवेदित किए गए हों।

बच्चे और पौधे का पोषण व देखभाल एक साथ करें : प्रशासक संजय कुमार ने कहा कि शहर में पर्यावरणीय संरक्षण की दिशा में सकारात्मक प्रयास के रूप में उन्होंने 1 जुलाई से 31 अगस्त तक एक पहल की है कि उनके कार्यालय से जिन नवजात बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र निर्गत होगा उन सभी के अभिभावकों को उपहार में एक पौधा इस अनुरोध के साथ दिया जाएगा कि वे अपने बच्चे के जन्म के उपलक्ष्य में इस पौधे को लगाएं तथा बच्चे और पौधे का पोषण व देखभाल एक साथ करें।

जन्म-मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करायें

नगर परिषद प्रशासक संजय कुमार ने शहर के लोगों से अपील की कि वे अपने संबंधियों के जन्म और मृत्यु का पंजीकरण अवश्य करवाएं। पंजीकरण प्रमाण पत्र न केवल कई सरकारी औपचारिकताओं में अनिवार्य दस्तावेज के रूप में काम आता है, बल्कि इससे शहर की वास्तविक डेमोग्राफिक तस्वीर तय होती है।

विवाह पंजीकरण के लिए भी करें आवेदन

नगर परिषद प्रशासक ने कहा कि शहर के लोग न केवल जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र के लिए बल्कि विवाह पंजीकरण के लिए भी नगर परिषद में आवेदन कर सकते हैं। इसके लिए विस्तृत जानकारी के लिए वे नगर परिषद कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

विधायक ने क्षेत्र में किये अपने नौ वर्षो के कार्य का पेश किया लेखा-जोखा

विश्रामपुर में 1650 करोड़ रुपये की विकास योजनाओं का हुआ क्रियान्वयन: रामचंद्र

आजाद सिपाही संवाददाता

मेदिनीनगर। पूर्व मंत्री सह स्थानीय विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी ने कहा कि विश्रामपुर विस क्षेत्र पूर्ण विकास की ओर अग्रसर है। पिछले नौ वर्षो में विश्रामपुर विस क्षेत्र में 1650 करोड़ की विकास योजनाओं का क्रियान्वयन हुआ। जो एक बड़ी उपलब्धि है। जिसे आम जनमानस के समर्थन से हासिल किया गया है। श्री चंद्रवंशी बिश्रामपुर के नावाडीह कला स्थित आरसीआईटी के सभागार में आयोजित प्रेस वार्ता में बोल रहे थे। उन्होंने अपने पिछले नौ वर्षो

के कार्यकाल का लेखा जोखा प्रस्तुत करते हुए कहा कि विस क्षेत्र में 54 से अधिक सड़क का निर्माण कार्य कराया गया। वही छः विद्युत सबस्टेशन का नव निर्माण कराया गया। जिनमें नावाडीह,नवा बाजार,पतरिया,तोलरा,उंटारी रोड व कजरू कला गांव का विद्युत सब स्टेसन शामिल है। विस क्षेत्र में 13 पुल-पुलिया का निर्माण कराया गया। जो आवागमन को सुलभ कराने में वरदान साबित हुआ। वहीं भवन निर्माण विभाग से प्रखंड व कई पंचायत भवन का निर्माण कार्य कराया गया। उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य मंत्री रहते क्षेत्र में नौ स्वास्थ्य केंद्र का निर्माण कराया गया जो एक बड़ी उपलब्धि से कम नहीं। विस क्षेत्र की दर्जनों प्राथमिक विद्यालय को मध्य विद्यालय प्रोन्नत कराया गया। कई मध्य विद्यालय को उच्च विद्यालय में प्रोन्नत कराया गया। इतना ही नहीं उच्च विद्यालय में प्लस टू की पढ़ाई की व्यवस्था भी कराई गई। इसके साथ-साथ अपने निजी विश्वविद्यालय में स्कूल से पीएचडी तक की पढ़ाई की व्यवस्था की। साथ में इंजीनियरिंग व मेडिकल कॉलेज की स्थापना कराई। इसके अलावा केंद्र व राज्य सरकार के सभी कल्याणकारी योजनाओं को वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुंचाया गया। आम लोगो को सीधा लाभ पहुंचाने हेतु मुफ्त अनाज,आवास,गैस चूल्हा,विधवा पेंशन,वृद्धा पेंशन,विकलांग पेंशन,नल जल योजना सहित अनेकों कार्य को धरातल पर उतारा। श्री चंद्रवंशी ने कहा कि विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र के गढ़वा जिला के कांडी व बरडीहा प्रखंड में भी ब्लॉक बिल्डिंग, सब स्टेशन,पुल निर्माण,अस्पताल भवन का निर्माण सहित कई उल्लेखनीय कार्य किया गया।

विश्रामपुर के पंचमुखी मंदिर प्रांगण में हुआ शिव चर्चा का आयोजन

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। विश्रामपुर के ऐतिहासिक पंचमुखी मंदिर प्रांगण में गुरुवार को शिव परिवार की ओर से शिव चर्चा का आयोजन किया गया। इससे पहले शिव भक्तों ने मंदिर में विशेष पूजा-अर्चना की गयी। इसके बाद शिव के भजन-कीर्तन के साथ शिव चर्चा शुरू हुई। भक्तों ने कहा कि शिव परिवार का तीन मूल मंत्र है। पहला दया, दूसरा चर्चा और तीसरा ओम नमः शिवाय को प्रणाम संस्कृति से जोड़ना है। शिव गुरु थे गुरु है और गुरु रहेंगे। शिव गुरु परिवार के सभी सदस्य हमेशा शिव चर्चा में लीन रहते हैं। मौके पर भजपा एससी मोर्चा अध्यक्ष सुरेंद्र भारती, अरविंद जहरीला, एस कुमार मेहता, दीपक कुमार, विंदेश्वर कुमार, बेबी देवी सहित शिव परिवार के सदस्य थे।

हरिहरगंज में सभी ने मिल कर मनायी बकरीद

हरिहरगंज/पलामू (आजाद सिपाही)। बकरीद त्योहार के अवसर पर गुरुवार को हरिहरगंज में कड़ी सुरक्षा के बीच मस्जिदों में नमाज अदा की गई और हजरत इब्राहिम के त्याग को याद किया गया। नमाज अदा के बाद लोग एक-दूसरे के गले मिलकर मुबारकबाद दिए। इस दौरान अररूआ खुर्द, सतगांवा, अंसारी बिगहा, बंजारी, कटैया, बेलौदर, सियरभूका सहित अन्य जगहों पर ईद-उल-अजहा का पर्व मनाया गया। वहीं नमाज अदा के दौरान पुनी सह थाना प्रभारी सुदामा कुमार दास के नेतृत्व में सभी मस्जिदों के पास पर्याप्त संख्या में पुलिस जवानों की तैनाती की गई थी। थाना प्रभारी सुदामा कुमार दास ने बताया कि बकरीद सुरक्षा और समरसता के साथ मनाया जा रहा है। वहीं, मौलाना सलाहुद्दीन साहब, मो इसरार आलम और डॉ रिजवान ने बताया कि ईद-उल-अजहा का पर्व सर्वोच्च त्याग और बलिदान की प्रेरणा देता ही है, साथ ही लोगों पर अमन, चैन, शांति व खुशहाली की नेमत भी बरसाता है। इस मौके मोहम्मद यूनिस, रियाज, मुस्लिम अंसारी, कमल राजा, अली सकील, मुतुर्जा, खालिद राजा, असलम नवाब आदि ने नमाज अदा कर क्षेत्र में अमन चैन की दुआ मांगी।

बकरीद पर मांगी गयी अमन-चैन की दुआ

नीलांबर-पीतांबरपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। प्रखंड मुख्यालय समेत ग्रामीण क्षेत्रों में गुरुवार को ईद-उल-अजहा (बकरीद) का त्योहार हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस दौरान इदगाह, बड़ी मस्जिद, में सुबह सात बजे नमाज अदा कि गई। वहीं छोटी मस्जिद कोट में नमाज अदा कर क्षेत्र- राज्य के साथ ही देश-दुनिया में अमन-चैन की दुआ मांगी गयी। दूसरी ओर, शांति व्यवस्था को लेकर लेस्लीगंज पुलिस प्रशासन काफी मुस्तैद दिखी। वहीं प्रखंड के मुरूबार, रामसागर आदि मस्जिदों में भी नमाज अदा की गई। इस मौके पर हाफिजुल रहमान, मिस्टर महमूद, उप मुखिया हिमायू खान, नसीम राजा, चंगेज खान, फिरोज खान और इरफान खान आदि ने एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी।

जामा मस्जिद में पढ़ी गयी बकरीद की नमाज, मांगी खुशहाली की दुआ

सतबरवा/पलामू (आजाद सिपाही)। सतबरवा प्रखंड के करमा जामा मस्जिद में गुरुवार को बकरीद की नमाज मौलाना गुलाम सरवर के नेतृत्व में पढ़ी गई। वहीं, बड़ी मस्जिद सतबरवा में भी अपने गांव समाज में सुख शांति के लिए नमाज पढ़ी गई और गले मिलकर एक-दूसरे दो बकरीद की मुबारकबाद दिए। मौके पर उपस्थित सामाजिक कार्यकर्ता जुम्मन मियां ने कहा कि बकरीद सादगी सौहार्द व भाईचारे के लिए जाना जाता है आज के दिन हम लोग अपने गांव समाज की अमन-चैन की दुआ करते हैं। ईद हो या बकरीद हम लोग खुशी खुशी सब मिलजुल कर शांति पूर्वक त्योहार मनाते हैं।

बीमारियों से बचने के लिए स्वास्थ्य जागरूकता जरूरी : अशोक चौधरी

झरगड़ा पंचायत में सामुदायिक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान का शुभारंभ

आजाद सिपाही संवाददाता

हुसैनाबाद। प्रखंड क्षेत्र के झरगड़ा में उद्यमी कल्याण शिक्षण संस्थान की ओर से गुरुवार को स्वास्थ्य जागरूकता अभियान का शुभारंभ किया गया। 30 दिवसीय इस अभियान में संस्थान की ओर से मलेरिया (हाथी पॉव), कलरा, हैजा, जांडिस, गठिया, एड्स एवं एनीमिया समेत कई अन्य बीमारियों के बारे में ग्रामीणों को जागरूक किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुखिया अशोक कुमार चौधरी ने किया। उन्होंने लोगों को

संबोधित करते हुए कहा कि उद्यमी कल्याण संस्थान द्वारा ग्रामीण क्षेत्र के लोगों के बीच विभिन्न प्रकार की बीमारियों से बचाव के लिए चलाया जा रहा जागरूकता अभियान सराहनीय प्रयास है। उन्होंने लोगों से संस्थान द्वारा बताए जा रहे स्वास्थ्य संबंधी उपयोगी जानकारी को अपने दिनचर्या में शामिल कर निरोग रहने की अपील की। इस मौके पर संस्थान के मनोज गुप्ता, अमर कुमार, रोजगार सेवक अजय कुमार, राजू प्रसाद, दिलीप चौधरी, प्रदुमन साव, शिक्षिका सुमन कुमारी, नंदू यादव, धर्मेंद्र और जितेंद्र चौधरी आदि मौजूद थे।

रैयती जमीन पर जबरन बिजली खंभे गाड़ किया गया 33 हजार वोल्ट विद्युत प्रवाहित

विश्रामपुर/पलामू (आजाद सिपाही)। भोगू से शंखा तक एनएच-39 फोरलेन सड़क निर्माण को लेकर अधिग्रहण की प्रक्रिया जारी है। अभी तक भू स्वामियों की अधिग्रहण की जाने वाली जमीन का न तो एलपीसी निर्गत किया गया है और ना ही मुआवजे की राशि का भुगतान ही हुआ है। बावजूद इसके एनएचआइ ने जबरन निर्माण कार्य की प्रक्रिया को शुरू कर दिया है। एनएचआइ द्वारा कई जगहों पर राखड का भंडारण किया जा रहा है। सड़क निर्माण संबधित कई अन्य कार्य भी शुरू कर दिया गया है। जिसमें एनएचआइ द्वारा सड़क किनारे गड़े बिजली के पुराने खंभों और तार को हटाकर जबरन रैयती खेत में गाड़ दिया गया। तार खींचकर 33 हजार वोल्ट विद्युत भी प्रवाहित कर दिया गया। विद्युत कार्य कराने वाले संवेदक द्वारा इस कार्य को मनमाने तरीके से कराया जा रहा है। तय सुरक्षा मानकों का पालन भी नहीं किया गया है। जिससे कभी भी बड़ी दुर्घटना घट सकती है। विद्युत खंभे को झुकाओं से रोकने हेतु लगाया गया स्टेगहरे हरे पेड़ में बांध दिया गया है।

हुसैनाबाद में सौहार्द्र व अकीदत के साथ मनायी गयी बकरीद

हुसैनाबाद (आजाद सिपाही)। सौहार्द और अकीदत के साथ गुरुवार को कुर्बानी का त्योहार बकरीद मनाया गया। सुबह से हो रही बारिश के कारण मुस्लिम समुदाय के लोगों ने अपने घर के समीप मस्जिद व ईदगाह में अकीदत के साथ बकरीद की नमाज अता की। जबकि सिया समुदाय के लोगों ने जामा मस्जिद के समीप ईदगाह की नमाज पढ़ी और क्षेत्र व घर परिवार की सलामती की कामना की। नमाज के बाद गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी।

स्पोर्ट्स

सैफ चैंपियनशिप में चार टीमें भारत, कुवैत, बांग्लादेश और लेबनान सेमीफाइनल में पहुंच चुकी है। एक जुलाई को कुवैत-बांग्लादेश, जबकि लेबनान-भारत के बीच मुकाबला होगा।

भारत-लेबनान दोनों शानदार फॉर्म में, उसी दिन कुवैत-बांग्लादेश का भी मुकाबला

सेमीफाइनल में 1 जुलाई को लेबनान से भिड़ेगा भारत

एजेंसी

नई दिल्ली। सैफ चैंपियनशिप में चार टीमें सेमीफाइनल में पहुंच चुकी हैं। ग्रुप-ए से जहां कुवैत और भारत ने अंतिम चार में जगह बनाई, वहीं ग्रुप-बी से लेबनान और बांग्लादेश की टीम सेमीफाइनल में पहुंची। अब अंतिम चार के मुकाबले में ग्रुप-ए में शीर्ष स्थान पर रहने वाली टीम ग्रुप-बी में दूसरे स्थान पर रहने वाली टीम से और ग्रुप-बी में शीर्ष स्थान पर रहने वाली टीम ग्रुप-ए की दूसरी टीम से भिड़ेगी। यानी कुवैत का मुकाबला बांग्लादेश से और लेबनान का सामना भारत से होगा। दोनों सेमीफाइनल एक जुलाई को खेले जाएंगे। कुवैत-बांग्लादेश मुकाबला दोपहर तीन बजे से और भारत-लेबनान मैच शाम साढ़े सात बजे से शुरू होगा।

आपस में कब-कब भिड़ चुकी हैं भारत-लेबनान की टीमें

दोनों टीमों का पहली बार सामना 1977 में प्रेसिडेंट कप में हुआ था। तब भारत ने लेबनान को 4-2 से करारी शिकस्त दी थी। इसके बाद दोनों टीमें 1993 में दो बार फीफा वर्ल्ड कप क्वालिफायर में भिड़ी थीं। एक मैच 2-2 से ड्रॉ रहा था, जबकि दूसरे मैच में लेबनान ने भारत को 2-1 से हराया था। इसके बाद 2007 में भी इन दोनों टीमों के बीच फीफा वर्ल्ड कप क्वालिफायर में भिड़त हुई। आठ अक्तूबर 2007 को हुए मैच में लेबनान ने भारत को 4-1 से करारी शिकस्त दी थी। इसके बाद 30 अक्तूबर 2007 को दोनों टीमों के बीच खेला गया मैच 2-2 की बराबरी पर समाप्त हुआ था। 19 अगस्त 2009 को दोनों टीमें दोस्ताना मैच में एक बार आमने-सामने आईं। तब लेबनान ने भारत को 1-0 से हरा दिया था। इसके बाद 2023 इंटरकॉन्टिनेंटल कप में दोनों का आमना-सामना हुआ। इस टूर्नामेंट में एक मैच 0-0 से ड्रॉ रहा, वहीं फाइनल में भारत ने लेबनान को 2-0 से हराया। 1977 के बाद टीम इंडिया ने लेबनान पर पहली जीत दर्ज की थी। भारतीय टीम इस जीत के लय को सैफ चैंपियनशिप के सेमीफाइनल में भी बरकरार रखना चाहेगी। अब तक ग्रुप स्टेज में टीम इंडिया ने जिस तरह का खेल दिखाया है, उसको देखते हुए लेबनान के लिए रास्ता आसान नहीं रहने वाला है।

भारत-लेबनान दोनों ही शानदार फॉर्म में

लेबनान ने ग्रुप (बी) स्टेज के अपने आखिरी मैच में बुधवार को मालदीव को 1-0 से हरा दिया। टीम के लिए कप्तान हसन माटूक ने 24वें मिनट में फ्री-किक पर महत्वपूर्ण गोल दागा। इस टीम ने ग्रुप स्टेज के अपने तीनों मैच जीते और शीर्ष स्थान पर रही। वहीं, भारतीय टीम ग्रुप (ए) स्टेज में अपने तीन में से दो मैच जीतने में सफल रही थी। उसने पाकिस्तान को 4-0 और नेपाल को 2-0 से हराया था। कुवैत के खिलाफ आखिरी ग्रुप मैच 1-1 से ड्रॉ रहा था। ऐसे में दोनों टीमों के बीच दिलचस्प टक्कर देखने को मिल सकती है। बतातें चलें कि भारत ने हाल ही में हुए इंटरकॉन्टिनेंटल कप के फाइनल में लेबनान को ही हराया था और ट्रॉफी अपने नाम की थी। अब तक दोनों टीमें आठ बार भिड़ चुकी हैं। इसमें से भारत ने दो और लेबनान ने तीन मैच जीते हैं। वहीं, तीन मुकाबले ड्रॉ रहे हैं। हालांकि, यह एक नॉकआउट मैच होगा, इसलिए इसमें ड्रॉ की कोई गुंजाइश नहीं होगी। 90 मिनट तक मैच ड्रॉ रहने पर मैच 30 मिनट के एक्स्ट्रा टाइम में जाएगा। इसे भी दो हाफ में खेला जाएगा। वहीं, एक्स्ट्रा टाइम में भी स्कोर बराबर रहने पर मैच पेनल्टी शूटआउट में जाएगा।

भारत-लेबनान की फीफा रैंकिंग

दोनों टीमों की फीफा रैंकिंग की बात करें तो लेबनान 99वें स्थान पर काबिज है, जबकि भारत की फीफा रैंकिंग 101 है। दोनों टीमों के पिछले पांच मैचों की बात करें तो भारत ने अपने पिछले पांच में से तीन मैच जीते हैं, जबकि दो मैच ड्रॉ रहे हैं। वहीं, लेबनान को अपने पिछले पांच में से तीन मैचों में जीत मिली है। एक मैच ड्रॉ रहा है, जबकि एक में उसे हार का सामना करना पड़ा।

कम करनी होगी छेत्री पर निर्भरता

भारतीय टीम ने पाकिस्तान पर 4-0 से जीत जरूर हासिल की, लेकिन नेपाल के खिलाफ 2-0 से जीत में पहले एक घंटे के दौरान उसे कोई गोल नसीब नहीं हुआ था। इसी तरह कुवैत के खिलाफ भी छेत्री ने ही गोल का खाता खोला था। गोल के मामले में टीम की 38 वर्षीय स्ट्राइकर सुनील छेत्री पर निर्भरता काफी ज्यादा है। उन्होंने टीम के कुल सात में से अब तक पांच गोल किए हैं। टीम के मिडफील्डर साहल अब्दुल समद का कहना है कि उनके समेत टीम के दूसरे खिलाड़ियों को ज्यादा से ज्यादा लक्ष्य पर निशाना साधना होगा, जिससे छेत्री पर पड़ रहे भार को कम किया जा सके।

रात के अंधेरे में अज्ञात अपराधियों ने बनाया निशाना, चाकू से किये कई वार

पुटकी बाजार में चेंबर अध्यक्ष के भाई की चाकू मार कर हत्या

पुटकी पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज कर शुरू की जांच

आजाद सिपाही संवाददाता

धनबाद। धनबाद-बोकारो मुख्य मार्ग के पुटकी कोलियरी गेट के सामने बुधवार की देर रात एक व्यक्ति की अपराधियों द्वारा धारदार हथियार से गोद कर हत्या कर दिए जाने का मामला प्रकाश में आया है। मृतक की पहचान संतोष शर्मा (35) के रूप में की गई है। वह पुटकी बाजार का रहने वाला था। महुदा के लाल बंगला में जूता-चप्पल की दुकान का संचालक है। संतोष पुटकी बाजार चेंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष का चचेरा भाई था। घटना की जानकारी गुरुवार की सुबह पुटकी पुलिस की पेट्रोलिंग टीम ने संतोष के स्वजनों को दी। पुलिस की मानें तो जिस समय संतोष को बरामद किया गया वह गंभीर रूप से घायल था। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया, लेकिन रास्ते में ही उसने दम तोड़ दिया। अस्पताल पहुंचने पर चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने बताया कि संतोष के शरीर पर धारदार हथियार के लिए कई वार से बने गहने घाव के निशान भी मिले हैं। पुलिस ने शव का पंचनामा करने के बाद उसे पोस्टमार्टम के लिए धमबाद अस्पताल भेज दिया। साथ ही अज्ञात के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस पता लगाने की कोशिश कर रही है कि किन कारणों के चलते संतोष की हत्या की गई है। उधर, सामाचार लिखे जाने तक इस मामले में किसी की गिरफ्तारी की कोई सूचना नहीं है।

शादी का झांसा देकर युवती का यौन शोषण का आरोप, आरोपित गिरफ्तार

नाबालिग अवस्था से ही यौन संबंध बनाने का आरोप

आजाद सिपाही संवाददाता

कतरास। बाघमारा थाना क्षेत्र में 20 वर्षीय एक युवती ने बरोरा निवासी विजय कुमार साव नामक 25 वर्षीय युवक पर शादी का झांसा देकर यौन शोषण करने के बाद शादी से मुकर जाने का मामला प्रकाश में आया है। वहीं, पीड़िता की लिखित शिकायत के बाद पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपित युवक को गिरफ्तार कर गुरुवार को उसे जेल भेज दिया। लगे हाथ पीड़िता को मेडिकल जांच के लिए अस्पताल भेज दिया। युवती ने पुलिस से की शिकायत में बताया कि उसके पिता की मौत के बाद आरोपी युवक शादी का झांसा देकर नाबालिक अवस्था से ही उसके साथ यौन संबंध बनाने लगा। इसी तरह लंबा समय बीत गया। वह जब भी विजय से शादी की बात कहती तो वह बहला फुसला कर बातों को टाल दिया करता था। इसी बीच विजय के परिवारवालों ने उसकी शादी दूसरी लड़की से पक्की कर दी। जब इस बात को लेकर युवक से उसने पूछताछ की तो उसने कहा कि 10 लाख रुपये देने पर ही वह उससे शादी कर पाएगा। अगर उसने उक्त रकम नहीं दी तो उसके परिवार वाले उससे (विजय) से शादी नहीं होने देंगें। इसके बाद पीड़िता पुलिस के पास पहुंच गयी। उसने न्याय की गुहार लगाते हुए कहा कि पिता की मौत हो जाने के बाद से परिवार तंगहाली की जिंदगी जी रहा है। शादी का झांसा देखर यौन शोषण करने के बाद युवक अब शादी से मुकर रहा हैं। युवती ने आरोपी युवक के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है। दूसरी ओर, उक्त घटना का खुलासा होने पर ग्रामीणों में भी आरोपित के प्रति आक्रोश है।

समाजसेवी ने थामा जदयू का दामन

कतरास (आजाद सिपाही)। श्यामडीह मोड़ स्थित यूथ फोर्स प्रधान कार्यालय में जदयू प्रदेश महासचिव सह यूथ फोर्स के प्रधान संयोजक दीप नारायण सिंह की अगुवाई में बैठक हुई। जहां तोपचांची प्रखंड अंतर्गत पाथलचपड़ा निवासी सामाजिक कार्यकर्ता सुमन देवी और राज कुमार मुर्मू ने जदयू का दामन थामा। दीप नारायण सिंह ने उन्हें पार्टी में शामिल कराया। उन्होंने पार्टी में शामिल होने पर दोनों को बधाई देते हुए कहा कि आज पूरे झारखंड में जदयू मजबूत हो रही है। पार्टी में सामाजिक कार्यकर्ता, महिला और युवा बड़ी संख्या में प्रतिदिन जुड़ रहे हैं। आने वाले 2024 लोकसभा और झारखंड विधानसभा चुनाव में इसका प्रभाव देखने को मिला। आने वाले समय में जदयू गिरिडीह लोकसभा क्षेत्र में महिलाओं और युवाओं को रोजगार मिले इसके लिए आंदोलन करेगी। इस मौके पर जदयू प्रदेश सचिव (महिला प्रकोष्ठ) बिंदु देवी, जदयू जिला महासचिव इंदल सिंह, जदयू बाघमारा प्रखंड अध्यक्ष गोपाल चंद्र गोप, सूरज कुमार, सुभाष सिंह और प्रिंस कुमार आदि उपस्थित थे।

धनबाद के डीआरएम ने सार्वजनिक माफी नहीं मांगी तो करेंगे उग्र आंदोलन : रमाशंकर तिवारी

डीआरम पर कर्मचारी के साथ दुर्व्यवहार का आरोप, आजसू ने की निंदा

आजाद सिपाही संवाददाता

कतरास। आजसू के जिला प्रधान सचिव सह सांसद प्रतिनिधि रामाशंकर तिवारी की अध्यक्षता में गुरुवार को नावागढ में बैठक हुई। जिसमें धनबाद डीआरएम द्वारा अपने ही अधिनस्थ कर्मचारी बसंत उपाध्याय के साथ किये गये अमानवीय व ्बद्र व्यवहार की कड़ी निंदा की गई। बतातें चलें कि धनबाद रेलवे अस्पताल में कार्यरत बसंत उपाध्याय को वहां के डॉक्टर ने सख्त निर्देश दे रखा था कि कोई भी मरीज उनके चेंबर में आए तो उसे बाहर ही उसका जूता-चप्पल खोलने पर ही अंदर जाने की इजाजत दी जाए। इसी बीच डीआरएम की पत्नी जब रेलवे अस्पताल में डॉक्टर के चेंबर में पहुंची तो बसंत उपाध्याय ने उन्हें चप्पल खोलकर अंदर जाने को कहा। इसी बात से डीआरएम साहब नाराज हो गए। उन्होंने बसंत उपाध्याय की ड्यूटी समाप्त होने के बाद उन्हें अपने कार्यालय में बुलाकर कथित रूप से उसके कपड़े उतरवाकर अश्लील शब्दों का प्रयोग करते हुए बेइज्जत किया। इसका बसंत उपाध्याय के दिमाग पर गहरा आघात लगा और वह तनाव में बीमार हो गया, जिसका धनबाद के असफी अस्पताल में इलाज भी चल रहा है। इससे पहले इसीआर के रेलवे यूनियन के लोगों ने भी डीआरएम के व्यवहार के विरोध में हंगामा किया था। रमाशंकर तिवारी ने कहा कि कोई भी जाति के कनीय अधिकारी व कर्मचारी हो और उसके साथ वरिय उच्चाधिकारी इस तरह अपने कार्यालय में बुलाकर कपड़ा उतरवा ले और अश्लील भाषा के साथ भला-बूरा कहेगा तो उसे बर्दास्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कड़े लहजे में चेतावनी दी कि धनबाद डीआरएम अविलंब सार्वजनिक रूप से बसंत उपाध्याय से माफी मांगे। ऐसा नहीं करने पर आजसू डीआरएम कार्यालय में उग्र प्रदर्शन करने को बाध्य होगा। इस मौके पर पार्टी के प्रखंड अध्यक्ष राकेश गयाली, कार्यकारी अध्यक्ष गौतम गोप, विकाश सरकार, प्रेम कुमार तिवारी, मुकेश महतो, राजेश उरांव, अनीश सिंह, अजय पासवान और सुभाष हांसदा आदि उपस्थित थे।

बकरीद पर मांगी गयी अमन-चैन की दुआ

आजाद सिपाही संवाददाता

लोयाबाद। ईदगाह, मदनाडिह, निचितपूर, लोयाबाद पावर हाउस मस्जिद में गुरुवार को इद-उल अजहा (बकरीद) की नमाज अदा की गयी। मुस्लिम समाज के लोगों ने नमाज के बाद देश-दुनिया में अमन-चैन के साथ ही सभी की सलामती, सौहार्द और तरक्की की सामूहिक दुआ मांगी गई। इसके बाद एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारक दी। नमाज अदा करने के बाद लोगों ने अल्लाह तआला की खुशनवदी हासिल करने के लिए बकरे की कुर्बानी दी। लोयाबाद ईदगाह में अलहाज मौलाना मोहम्मद गुलाम रसूल साहब ने खिताब करते हुए कहा कि ईद-उल-अजहा का त्योहार कुर्बानी व त्याग का एक ऐसा संदेश देता है जिसकी मिसाल रहती दुनिया तक नहीं मिलेगी। उन्होंने कहा कि मुहब्बत व फरमांबरदारी की ये लजवाल मिशाल जो बाप और बेटे ने कायम की थी कि अल्लाह तआला को इस कद्र महबूब हुई कि कयामत तक के लिए अपने मजहब ए तौहीद में शामिल कर जिंदा जावेद कर दिया। दूसरी ओर, विधि व्यवस्था संधारण में थानेदार राजन कुमार राम व पुलिस बल को सक्रिय देखे गए। ईदगाह में थानेदार और पुलिस कर्मियों ने भी मुस्लिम समुदाय के लोगों से गले मिल कर ईद की मुबारकबाद दी। मुस्लिम कमेटी के अध्यक्ष इम्तियाज अहमद महामंत्री मो असलम मंसूरी व चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष राज कुमार महतो ने शांतिपूर्ण माहौल में त्योहार संपन्न होने पर पुलिस के साथ ही लोगों को भी बधाई दी।

बेरमो में अकीदत के साथ मनी बकरीद, मांगी अमन-चैन की दुआ

आजाद सिपाही संवाददाता

करगली/बेरमो। बेरमो कोयलांचल में गुरुवार को हर्षोल्लास के साथ ईद-उल-अजहा (बकरीद) का त्योहार मनाया गया। मुस्लिम समाज के इस महापर्व में क्षेत्र के हिंदू भी शामिल हुए और भाईचारे का संदेश दिया। बेरमो के सभी मस्जिदों व ईदगाहों में ईद-उल-अजहा की दो रिकअत नमाज इमामों ने पढ़ाई। मुसलमानों ने बकरीद की नमाज अदा कर अपने परिवार के साथ ही देश-दुनिया व क्षेत्र की सलामती की दुआ मांगी। इसके बाद एक-दूसरे से गले मिलकर बकरीद की मुबारकबाद दी। इसके बाद कुर्बानी देकर रस्म अदा की गई और एक-दूसरे के घर जाकर लजीज व्यंजनों का लुत्फ उठाया।

13 स्थानों पर अदा की गयी नमाज

बेरमो थाना क्षेत्र के 13 स्थानों पर सुबह में लोगो ने बकरीद की नमाज अदा की। जिसमें करगली फुटबॉल ग्राउंड, करगली स्थित महिला मंडल सहित राजाबेड़ा के अंसारी मोहल्ला और शाह मोहल्ला, भेड़मुक्का, पटेल नगर के मदनी मस्जिद और मक्का मस्जिद, रहीमगंज, बीडीओ ऑफिस के रजा नगर, ढोरी स्टाफ क्वार्टर, अमलो बस्ती, सुभाष नगर खनका, रामनगर मदरसा शामिल है। वहीं, फुसरो के पुराना बीडीओ ऑफिस, रहीमगंज, भेड़मुक्का, पटेलनगर व रजानगर, स्टाफ क्वाटर, घुटियाटांड, करगली, जरीडीह बाजार, सुभाषनगर, अमलो, चलकरी बस्ती, संडेबाजार, गांधीनगर, कुरपनिया, आदि इलाकों की मस्जिदों व ईदगाहों में सुबह होते ही ईद-उल-अजहा की नमाज पढ़ने को बच्चों से लेकर बड़ों तक की भीड़ जुटने लगी। बच्चे काफी खुश नजर आए।

सतर्क रहा प्रशासन

त्योहार के दौरान शांति व्यवस्था कायम रखने को लेकर बेरमो पुलिस की ओर से कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गयी थी। सभी मस्जिदों व ईदगाहों के निकट प्रशासन की ओर से प्रतिनियुक्त दंडाधिकारियों के साथ ही स्थानीय पुलिस के जवान व अधिकारी मुस्तैद रहे। बेरमो थाना प्रभारी रविंद्र कुमार सिंह के नेतृत्व में जगह-जगह पेट्रोलिग की टीम मोर्चा संभाले हुए तत्पर दिखी। इस बार पुलिस प्रशासन ने विधि व्यवस्था को लेकर पुख्ता इंतजाम किया था।

कसमार में इद-उल-अजहा शांतिपूर्ण संपन्न

कसमार (आजाद सिपाही)। कसमार थाना क्षेत्र के कसमार, गररी, मंजुरा, मधुकरपुर, बगियारी, हरनाद, कमलापुर, नौवाजारा सहित अन्य जगहों पर गुरुवार को सौहार्दपूर्ण वातावरण में शांतिपूर्ण तरीके से इद-उल अजहा संपन्न हुआ। मुस्लिम समुदाय के लोगों में सुबह से ही काफी उत्साह देखा गया। मुस्लिम समुदाय के लोगों ने ईदगाह पहुंचकर ईद-उल-अजहा (बकरीद) की नमाज अदा कर राज्य व देश के लिए अमन चैन की दुआ मांगी। वहीं, त्योहार के मद्देनजर प्रशासनिक अधिकारियों की कड़ी सुरक्षा व्यवस्था थी। कसमार बीडीओ बिजय कुमार व कसमार थाना के एएसआई अनिल कुमार क्षेत्र के भ्रमण करते दिखे। लोगों को बकरीद की मुबारकबाद भी दी।

ऑटो-बाइक की भिड़ंत में एक घायल, हालत गंभीर

लोयाबाद (आजाद सिपाही)। लोयाबाद थाना अंतर्गत एकड़ा शिव मंदिर के समीप गुरुवार की दोपहर दो बजे ऑटो और बाइक के बीच टक्कर हो गई। इस हादसे में बाइक सवार गंभीर रूप से घायल हो गया। स्थानीय लोगों की मदद से उसे तत्काल उपचार के लिए करकेंद स्थित अस्पताल में भर्ती कराया जहां चिकित्सक ने प्राथमिक उपचार के बाद बेहतर इलाज के लिए धनबाद एसएनएमएमसीएच भेज दिया। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि करकेंद की तरफ से बाइक सवार लोयाबाद की ओर जा रहा था। तभी एक हाइवा से ओवरटेक करने के चक्कर में विपरीत दिशा से आ रहे ऑटो से टकरा गया। उसकी पहचान नहीं हो सकी है।

पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए पौधा जरूर लगायें: मनोज

फुसरो/बेरमो (आजाद सिपाही)। स्वच्छता पखवाड़ा के तहत सीसीएल ढोरी क्षेत्र की ओर से गुरुवार को विनोद बिहारी महतो सरस्वती विद्या मंदिर गुंजरडीह मुंगो में पौधारोपण किया गया। यहां जीएम मनोज कुमार अग्रवाल, तारमी पीओ शैलेश प्रसाद ने दर्जनों फलदार एवं छायादार पौधे लगाकर पर्यावरण बचाओ का संदेश दिया। जीएम ने स्कूली बच्चों को पेड़-पौधों के महत्व के बारे में बताया और पौधारोपण के लिए प्रेरित किया। वहीं, बच्चों ने भी पौधे लगाएं एवं उन्हें सुरक्षित रखने का संकल्प लिया। जीएम ने कहा कि पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए सभी को पौधे अवश्य लगाना चाहिए। इस अवसर पर बच्चों और स्थिनियों के बीच जूट की थैली और पौधा का वितरण किया गया। मौके पर एसओ सिविल उज्जवल कुमार सिंह, सीएसआर अधिकारी शैलेश कुमार, सीसीएल सुरक्षा पदाधिकारी सीताराम यूके, एसडीओसीएम परियोजना के सेल अधिकारी राजेश गुप्ता, नावाडीह प्रमुख पूनम देवी, चपरी मुखिया आरती देवी, गुंजरडीह मुखिया जयलाल महतो, सांसद प्रतिनिधि यशोदा देवी, विनोद बिहारी महतो सरस्वती विद्या मंदिर गुंजरडीह मुंगो अध्यक्ष गौरीशंकर महतो, कोषाध्यक्ष लोकेश्वर महतो, प्रधानाचार्य सूर्यदेव मंडल, प्रधानाचार्य तुपकाडीह मंटू कुमार गिरि, आचार्य अनंतलाल पांडेय, योधन महतो, सुनील कुमार, मिथिलेश गिरी आदि मौजूद थे।

प्रदीप जगदीश और कैलाश राजेश जैसे कई नामचीन लोगों की संलिप्तता से धड़ल्ले से चल रहा कारोबार

पुलिस की नाक के नीचे चल रहा अवैध कोयले का काला कारोबार

मोटी कमाई का प्रलोभन देकर कुछ स्थानीय लोगों की मिलीभगत से की जा रही अवैध मुहानों की खुदाई

समिद खान

भाटडीह ओपी क्षेत्र कोयला तस्करों के लिए बन चुका है बड़ा बाजार

मुहाने की अवैध खुदाई कर जंगल में बोरियों में भर कर रखा गया कोयला।

महुदा (आजाद सिपाही)। कोयलांचल धनबाद के भाटडीह ओपी क्षेत्र के मुरलीडीह पांच व 13 नंबर समेत अन्य ठिकानों पर कई बड़े-बड़े अवैध मुहाने खोलकर व्यापक स्तर पर कोयले की अवैध खुदाई कर करोड़ों रुपये का अवैध कारोबार चल रहा है। काला हीरा कहे जाने वाले कोयले की मची खुली लूट का आलम यह है कि जिले के बड़े-बड़े और नामचीन कोयला तस्कर कथित रूप से स्थानीय लोगों को मोटी कमायी का प्रलोभन देकर दर्जनों अवैध माइंस खोल दिये है। वर्तमान में तस्कर ने कथित पुलिस प्रशासन समेत तमाम संबंधित महकमों से साठगांठ कर इन दिनों व्यापक पैमाने पर कोयले का अवैध कारोबार कर रहे हैं। इतना ही नहीं तस्कर कोयले का उक्त कारोबार बीसीसीएल एवं फोरेस्ट विभाग की जमीन पर संचालित कर रखे है जिससे न केवल पर्यावरण का खतरा उत्पन्न हो रहा, बल्कि बगल में स्थापित महुदा जलापूर्ति योजना और पावर हाऊस के विद्युत सब स्टेशन पर भी खतरा गहरा गया है। अनवरत चल रहे इस बड़े काले कारोबार में स्थानीय पुलिस प्रशासन, जिला फोरेस्ट विभाग समेत बीसीसीएल प्रबंधन एवं उनके सुरक्षा तंत्र के औसुबल की प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप समर्थन बताया जा रहा है। सूत्रों की मानें तो कोयले के इस अवैध कारोबार में कथित रूप से प्रदीप जगदीश और कैलाश राजेश जैसे अन्य नामचीन लोगों की संलिप्तता भी बतायी जा रही है, जो धनबाद के विख्यात कारोवारी प्रमोद, राजेश, संजय आदि के संरक्षण में काम को अंजाम दे रहे हैं। हालांकि इस क्षेत्र में चल रहे कोयले के अवैध कारोबार को लेकर नव नियुक्त प्रभारी ने सूचना मिलने पर सख्त कार्रवाई की बात तो कही है, पर हैरत की बात यह है कि पुलिस इससे अनजान होने का दिखावा भी कर रही है, जो समझ से परे है। क्योंकि पुलिस की साठगांठ के बिना इस काले कारोबार को चला पाना मुमकिन नहीं है। क्षेत्र में कोयला के अवैध कारोबार का आलम यह है कि यहां एक-एक व्यक्ति 4-5 माइंस खोलकर प्रतिदिन सैकड़ों टन अवैध कोयलों को ट्रकों के माध्यम से बंगाल, टाटा और उत्तर प्रदेश आदि के मंडियों में भेज रहे हैं। हालांकि बीसीसीएल और पुलिस के अधिकारी बीच-बीच में छापामारी कर अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने की कोशिश और कुछ माइंस की भराई जरूर करते हैं। पर लोगों की मानें तो यह सब महज दिखावा है। गौरतलब हो कि भाटडीह ओपी क्षेत्र कोयला तस्करों के लिये बड़ा बाजार बन चुका है। राज्य की बेशकीमती संपदा लूटी जा रही है।

रेल संरक्षा आयुक्त ने झारतरभा से खंबेश्वरपाली के बीच नवीन लाइन कार्य का किया निरीक्षण

आजाद सिपाही संवाददाता

संबलपुर। दक्षिण पूर्वी सर्किल के रेल संरक्षा आयुक्त एएम चौधरी ने गुरुवार को संबलपुर मंडल में बलांगीर-खुर्दा रोड नयी लाइन परियोजना के झारतरभा से खंबेश्वरपाली स्टेशनों के बीच नयी लाइन के काम का निरीक्षण किया।

चौधरी ने ओवरहेड उपकरणों, पुलों, सिग्नल और दूरसंचार उपकरणों, रेलवे ट्रैक आदि जैसे संरक्षा संबंधी पहलुओं का निरीक्षण किया और खंबेश्वरपाली से झारतरभा स्टेशनों के बीच गति परीक्षण भी किया। मंडल में इस खंड के नयी लाइन और विद्युतीकरण के बाद यह ट्रेनों के सुचारू संचालन की सुविधा प्रदान करेगा।

निरीक्षण के दौरान संबलपुर के मंडल रेल प्रबंधक विनीत सिंह, पूर्व तट रेलवे के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण) पी श्रीनिवास और पूर्व तट रेल मुख्यालय और संबलपुर मंडल के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी साथ थे।

मुख्यमंत्री ने तीन लाख रुपये देने की घोषणा की

त्रिपुरा के सीएम माणिक साहा से बात की

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक ने कल बाहुड़ा यात्रा के दौरान क्योंझर जिले के केंदुआ गांव में 3 लोगों और कोरापुट जिले के कोलाब नगर में एक व्यक्ति की मौत पर गहरा दुख व्यक्त किया और मृतक के परिजनों के लिए मुख्यमंत्री के राहत कोष से 3 लाख रुपये सहायता की घोषणा की है। और शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की मुख्यमंत्री ने

भुवनेश्वर। मुख्यमंत्री श्री नवीन पटनायक ने आज त्रिपुरा के मुख्यमंत्री श्री माणिक साहा से बाहुड रथ यात्रा के बारे में टेलीफोन पर बात की। त्रिपुरा के कुमारघाट इलाके में बाहुडा रथ यात्रा के दौरान करंट लगने से 7 लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए. इस घटना पर मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने गहरा दुख व्यक्त किया है। मुख्यमंत्री श्री पटनायक ने पीड़ितों के परिवार के सदस्यों के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त की। उन्होंने कहा कि वह और ओडिशा के लोग दुख की इस घड़ी में त्रिपुरा के लोगों के साथ मजबूती से खड़े हैं।

घायलों को मुफ्त इलाज मुहैया कराने का आदेश दिया है और उनके शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की है। मुख्यमंत्री ने घायल व्यक्तियों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की।

वेदांता एल्युमीनियम अपने विविध कार्यबल को और मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है

- कंपनी अब अपने सभी प्राथमिक स्थानों पर लगभग 30 ट्रांसजेंडर कर्मचारियों को रोजगार देती है

आजाद सिपाही संवाददाता

भूवनेश्वर/नई दिल्ली। भारत के सबसे बड़े एल्युमीनियम उत्पादक वेदांता एल्युमीनियम ने एक समावेशी और विविध कार्यस्थल को बढ़ावा देने के लिए अपने समर्पण की पुष्टि करने के अवसर के रूप में गौरव माह मनाया। हाल ही में ओडिशा के लांजीगड़ में दो ट्रांसजेंडर पेशेवरों का अपने परिचालन में स्वागत करके, कंपनी अब अपने सभी प्राथमिक स्थानों पर लगभग 30 ट्रांसजेंडर कर्मचारियों को रोजगार देती है। इनमें ओडिशा के झारसुगुड़ा में इसका मेगा एल्यूमीनियम स्मेल्टर, लांजीगड में इसकी विश्व स्तरीय एल्यूमिना रिफाइनरी और छत्तीसगड में स्थित भारत की प्रतिष्ठित एल्यूमीनियम उत्पादक इसकी सहायक कंपनी बाल्को शामिल है। यह वास्तव में विविध कार्यस्थल को बढ़ावा देने के वेदांत एल्युमीनियम के मिशन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि के रूप में आता है, अपने विविध कार्यबल

को मजबूत करने के कंपनी के प्रयासों पर वेदांता लिमिटेड के सीईओ एल्युमीनियम बिजनेस श्री राहुल शर्मा ने कहा, जैसा कि हम अपने वैश्विक बाजारों और ग्राहकों के विविध और जटिल परिदृश्य को नेविगेट करते हैं, हम इसके सभी रूपों में विविधता को अपनाने के विशाल मूल्य को पहचानते हैं। विविध दृष्टिकोण, अनुभव, कौशल और शैक्षिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों की तलाश करके, हम कर्मचारी केंद्रितता के अपने स्तंभ और अच्छी तरह से व्यापार रणनीतियों को विकसित करने की क्षमता को मजबूत करते हैं। सच्ची योग्यता लिंग से परे है, और हम एक ऐसी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं जहां हर कर्मचारी और भागीदार अपनी असीमित क्षमता को उजागर करने के लिए अपनाए गये।

भुवनेश्वर-धनबाद, पुरी-पटना और पुरी-तिरुपति के लिए विशेष ट्रेनें

- विशाखापत्तनम से बेंगलुरु, बनारस, सिकंदराबाद, तिरूपति और मेहबूबनगर के लिए विशेष ट्रेनें।
- विशाखापत्तनम-रंगपड़ा उत्तर और संबलपुर-इरोड पूर्व तट रेलवे से नई विशेष ट्रेनें।

आजाद सिपाही संवाददाता

भूवनेश्वर। भूवनेश्वर 29/06 यात्रा करने वाली जनता की मांगों को ध्यान में रखते हुये और नियमित ट्रेनों में अतिरिक्त भीड़ को कम करने के लिए, पूर्व तट रेलवे क्षेत्राधिकार से और उसके माध्यम से विशेष ट्रेनों की सेवाओं को निम्नलिखित के अनुसार विस्तारित करने का निर्णय लिया गया है।

भुवनेश्वर-धनबाद : भुवनेश्वर से प्रतिदिन प्रस्थान करने वाली 02832 भुवनेश्वर-धनबाद स्पेशल एक्सप्रेस 31 अगस्त 2023 तक चलेगी। वापसी दिशा में, धनबाद से प्रतिदिन प्रस्थान करने वाली 02831 धनबाद-भुवनेश्वर स्पेशल एक्सप्रेस 1 सितंबर 2023 तक चलेगी।

पुरी और पटना : प्रत्येक शनिवार को पुरी से प्रस्थान वाली 08439 पुरी-पटना स्पेशल एक्सप्रेस अब 26 अगस्त 2023 तक चलेगी। वापसी दिशा में, प्रत्येक रविवार को पटना से प्रस्थान वाली 08440 पटना-पुरी स्पेशल एक्सप्रेस अब 27 अगस्त 2023 तक चलेगी।

प्रत्येक गुरुवार को पटना से प्रस्थान वाली 03230 पटना-पुरी स्पेशल एक्सप्रेस अब 31 अगस्त 2023 तक चलेगी। वापसी में, प्रत्येक शुक्रवार को पुरी से प्रस्थान वाली 03229 पुरी-पटना स्पेशल एक्सप्रेस अब 1 सितंबर 2023 तक चलेगी।

भूवनेश्वर-तिरुपति : प्रत्येक शनिवार को भुवनेश्वर से प्रस्थान करने वाली 02809 भुवनेश्वर-तिरुपति स्पेशल एक्सप्रेस अब 29 जुलाई 2023 तक चलेगी प्रत्येक रविवार को तिरुपति से प्रस्थान करने वाली 02810 तिरुपति-भुवनेश्वर स्पेशल एक्सप्रेस अब 30 जुलाई 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-बनारस : प्रत्येक बुधवार को विशाखापत्तनम से प्रस्थान करने वाली 08588 विशाखापत्तनम-बनारस स्पेशल एक्सप्रेस अब 12 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक गुरुवार को बनारस से प्रस्थान करने वाली 08587 बनारस-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 13 जुलाई 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-सिकंदराबाद : प्रत्येक बुधवार को विशाखापत्तनम से प्रस्थान करने वाली 08579 विशाखापत्तनम-सिकंदराबाद स्पेशल एक्सप्रेस अब 26 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक गुरुवार को सिकंदराबाद से प्रस्थान करने वाली 08580 सिकंदराबाद-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 27 जुलाई 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-तिरुपति : विशाखापत्तनम से प्रत्येक सोमवार को प्रस्थान करने वाली 08583 विशाखापत्तनम-तिरुपति स्पेशल एक्सप्रेस अब 31 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक मंगलवार को तिरुपति से प्रस्थान करने वाली 08584 तिरुपति-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 1 अगस्त 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-मेहबूबनगर : प्रत्येक मंगलवार को विशाखापत्तनम से प्रस्थान करने वाली 08585 विशाखापत्तनम-मेहबूबनगर स्पेशल एक्सप्रेस अब 25 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक बुधवार को मेहबूबनगर से प्रस्थान करने वाली 08586 मेहबूबनगर-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 26 जुलाई 2023 तक चलेगी।

विशाखापत्तनम-बेंगलुरु कैंट : प्रत्येक रविवार को विशाखापत्तनम से प्रस्थान करने वाली 08543 विशाखापत्तनम-बेंगलुरु कैंट स्पेशल एक्सप्रेस अब 30 जुलाई 2023 तक चलेगी। प्रत्येक सोमवार को बेंगलुरु कैंट से प्रस्थान करने वाली 08544 बेंगलुरु कैंट-विशाखापत्तनम स्पेशल एक्सप्रेस अब 31 जुलाई, 2023 तक चलेगी।

08915 विशाखापत्तनम-बेंगलुरु कैंट स्पेशल एक्सप्रेस यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को कम करने के लिए 1 जुलाई 2023 (शनिवार) को 13:15 बजे विशाखापत्तनम से रवाना होगी। यह ट्रेन रविवार को सुबह सात बजे बेंगलुरु कैंट पहुंचेगी।

पूर्व तट रेलवे से चलेंगी दो और विशेष ट्रेनें:

विशाखापत्तनम-रंगपड़ा उत्तर : जनसाधारण स्पेशल विशाखापत्तनम से 08562 विशाखापत्तनम-रंगपड़ा उत्तर स्पेशल 30 जुलाई 2023 तक प्रत्येक रविवार (शनिवार को दोपहर 12.10 बजे) 0010 बजे रवाना होगी और सोमवार को 1000 बजे रंगपड़ा उत्तर पहुंचेगी। वापसी दिशा में, रंगपड़ा उत्तर से 08561 रंगपड़ा उत्तर-विशाखापत्तनम स्पेशल 1 अगस्त, 2023 तक प्रत्येक मंगलवार को 05:15 बजे रवाना होगी और बुधवार को 15:35 बजे विशाखापत्तनम पहुंचेगी। इस ट्रेन में सात द्वितीय श्रेणी सीटें और दो गार्ड सह सामान वैन हैं, जो दोनों दिशाओं से विशाखापत्तनम और रंगपड़ा उत्तर स्टेशनों के बीच महत्वपूर्ण स्टेशनों पर रुकती हैं।

संबलपुर-एरोड : संबलपुर से 08311 संबलपुर-एरोड स्पेशल 26 जुलाई, 2023 तक प्रत्येक बुधवार को 1055 बजे रवाना होगी और गुरुवार को 1950 बजे एरोड पहुंचेगी। वापसी दिशा में, एरोड से 08312 एरोड-संबलपुर स्पेशल 28 जुलाई 2023 तक प्रत्येक शुक्रवार को 1345 बजे रवाना होगी और शनिवार को 21:15 बजे संबलपुर पहुंचेगी। इस ट्रेन में एक एसी-2 टियर, तीन एसी-3 टियर, नौ स्लीपर क्लास, तीन सेकेंड क्लास सीटिंग और दो गार्ड कम लगेज वैन हैं, जो टिटिलागड-रायगड़ा-विजयनगरम स्टेशनों के माध्यम से संबलपुर और एरोड स्टेशनों के बीच महत्वपूर्ण स्टेशनों पर रुकती हैं।

KGVK
HDFC BANK PARIVARTAN
A step towards progress

KGVK (Krishi Gram Vikas Kendra)
Vill.: Rukka, Post: Neori Vikash, District : Ranchi- 835217

Skill/Entrepreneurship Development through
Green-preneurship Promotion Project
Under the HDFC Bank Parivartan Program

Do you want to start your own agriculture/green sector based business/ enterprise, then participate in **Skill Based Entrepreneurship Development Program,** which will help you to establish your enterprise/ business and run it successfully.

Benefits of starting your own business:
- You will be your own boss.
- You can also provide employment to others.
- There is no limit to your income.
- You can do your work as per your wish, there is no interference of others.
- You can contribute to the development of the society.

Eligibility criteria to participate in the training program:
1. Age : Minimum 18 years.
2. Education qualification : Minimum Matriculation.
3. Should not be blacklisted from any bank in the past.
4. Must have your own land.

For detailed information Contact:
KGVK
Village :Rukka, Post : Neori Vikas,
District : Ranchi-835217
Contact : 9304496173

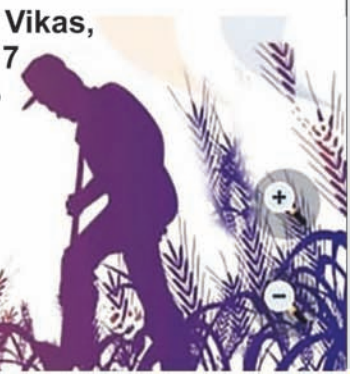

हूल दिवस
पर समस्त जिले वासियों को
हार्दिक बधाई शुभमकानाएं
शुभकामनाएं

लालू रविदास
पाकुड़, झारखंड

हूल दिवस
पर पाकुड़ जिलावासियों
को हार्दिक
शुभकामनाएं

संथाल से
उठी थी
जल,
जंगल
एवं
जमीन
छोड़ने
के नारे
की गूंज

राहुल साह
पाकुड़, झारखंड

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैंडस्केप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओल्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।
संपादक : हरिनारायण सिंह, **स्थानीय संपादक* :** विनोद कुमार,***पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, **राज्य समन्वय संपादक :** अजय शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवादों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, **R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109,** Postal Registration No. **RN/249/2019-21**